

1.685

५
॥ श्री गुरुदेवकी कृपासे ॥ श्री ३ विद्वत्की देवी

५
~~॥ श्रीगुरुवाङ्मय ॥~~ श्रीगुरुवाङ्काल्यनिमः॥ श्री३ सिद्धिलक्ष्मीद्वयी
थेनमः॥ अथयविग्रानाहनदवाञ्जनविधिलिद्वयः॥ कृत्तुकृत्तुदवलकनययावता
कानवायवाथल इथसंमानध्वनीसं॥ सनिकृत्तुवाजनकृत्तुन्याकाठवायारिनावाय
लमालमूलवृकृत्तुवाकलसखिनहायक॥ दवस्कनिलकर्मयायआवायन॥ पि
थवकृत्तुलिनहियक्षमगादयकोवनि एककर्मयायको॥ आवायकृत्तुस्यदवस्कसि
नूत्रलायल्याववसथ॥ मालकृत्तुलसकलमयातथागासनयद्वयाय॥ वलि यष्टिमया
त॥ उर्वध्वनीयात॥ गिदवा महाकालयात॥ उग्रवर्जयात॥ जगमलयात॥ श्री३ सिद्धि
लक्ष्मियात॥ कालियात॥ गिपूत्रयात॥ अथयाग यष्टिमध्वनीजगमलनिलकर्मया

गुलिसुधाया ॥ गिरवायानिहयासी ॥ उग्रवल्मुया सलिभलास ॥ मूत्रयानिहया अर्धपातुसीया
था ॥ यजमानयार्गवलि अर्धपातु अरुसत ॥ आकागमालमालकाद्याया ॥ ॥ पिष्टसुडया
यागा ॥ आसिदगुलियाययार्गवसुधा ॥ हनमया वंपाकसुमलुलशदहनडा ॥ गवजगायावयू
जायाय ॥ अस्वापितायसक इगुयूजाशुभ ॥ वदसह लंखनहाय वत सिन्धुत अक्षीपवि
त अक्रात स्वात ॥ गितहन अरुमय ॥ अयादि ॥ सूर्याद्य ॥ ॐ आकषू ॥ हनममूलन्यास ॥ तहउ
यस अर्धपातुयूजा ॥ आत्मयूजा ॥ यक्षवलि आसनयूजन वलिथवरमकुन ॥ स्वस्वमडा ॥
ॐ गलमनालाग ॥ आसन आक्षरगकययादि ॥ सिंहासन ॥ प्राजलि ॥ हनमशकि सहा ॥ वलि
॥ सूर्या ॥ विष्णु ॥ सदाभिव ॥ अधात ॥ मरुणं जय श्रीं ३ ॥ महामरुणं जयगकि सहा ॥ गनेधनी ॥ ला

कमहावलि। आवाहनादि। गङ्गायानिमूजा। धूपदीप। नैवेद्य। धलिव्रास। जयस्तुतिथवश्च॥ सम
यक्कायतव्यल। वदार्चनथवश्च॥ ॥ गङ्गाहिममार्चन॥ ॥ इधमद्रसकनगायावक्कायास्नान
याय॥ गङ्गावतज्जवसन॥ गङ्गावतमस्कात्रदवयाद्ववतनगायाद्रसकनस॥ ज्वलन्मल्लाका
न्यादि॥ पश्चिमनन्यास॥ जलपाण्ज्वर्यपाण्ज्वात्मयूजा॥ द्रसकसर्ववर्तनज्जवाहनया
याग्रांजलि॥ नवात्मा॥ कमामूत्रस्नान॥ कृष्णश्वरी॥ भिक्षा॥ महाकात्र॥ उग्रवल्गु॥ जगमल
धात्रसिद्धिलक्ष्मि॥ कालि॥ त्रिपूत्र॥ धामसंथवश्चमकुल॥ आवाहनादि॥ यानिमूजा॥ ॥ गङ्गा
वसपूजायाय॥ ॐ गंगमथेयाइका॥ यमूनाथे॥ नमस्दाथे॥ कावर्थे॥ कोमकि॥ गङ्गाकी॥ ॐ
सरयूयाइका॥ ॐ सरयूकुलमथेयाइका॥ नैऋत्ये॥ कूलवक्कमहासनसंभाहनस

कलगीथमनुदवता कलागलात्वा विपगत्य वक्रविष्णु रुडात्मन आत्मविद्याभिवात्ता ये
आनन्दमकिरेनवानन्दवीना विपगत्य मूर्त्ति संपूर्णकलममूर्त्ति यथाइकां । आवाहनादि । धु
धनमूडा । आमायवाक्कायावद्गसक । न स र्यं वा म्गत्तान । कुकारवायवीजं तद्रूपनि
वन् लवजयालिङ्गदृष्टं कालवल्गुनयका तद्रूपनियतमवद्वितीजं सहं स । इन्द्रमिन्द्रलि
यान्कसितकामलवनकीनधराग्रवन् दृष्टा कूटं कुनिर्णयदहति कूलमलंभनूल्यं हियापी
पयसापयहृभवेव यथि व्यापूगभवदाकाम । अन्धवनिर्णयं स्नाययामिभिवाहूया । दधिवा
मायतिदवदवाना विपयवल्गु । स्नायययसवानिर्णयं सुयीभादवता सदा । यतयतयिनाकि
नलिङ्गयूतयिनाकिना । अग्निस्वस्वस्वस्व । तां त्रिंलाकं जनं भिर्वी । अममस्विभक्तिनाहूति

देवानां प्रियवक्षसः। वन्द्या कल्याणरूपा नयनहानि नल्लयता। स्वच्छभाता सहास्रान् मनसा
 भागलताया। स्वच्छन्दस्त्रापिता देवी। जूस्वच्छा गवतः पुदा। गथाय प्रक्षुदिययसं य प्रक्षुदकादि
 वासनि। य प्रक्षुदयसमायुक्तं य प्रक्षुदगहाय याम्यहं। इह सकनसलं स्वधनदायकं। नैव
 ग्राह्यं वक्षसि लुलान् कसयदनिहितानन्दमकिं ॥ सुती माह विन्नास वदुषं त्वकालकू
 लग्नाय य प्रक्षुदं वान्यषट्कं वलान् ॥ य प्रक्षुदकाय ॥ यूनरपि वदुषं त्वगाम लुलदं स एव यन
 तस्मिन् मागुतु वनं हेतव्यं आकुरु म॥ देव सकनरिनी लदेव नसार्थं। उकारं वायुवीजं एदि
 ॥ अथ य एव वरुन जूलिन हाना। मूर्ति ॥ ॥ वगा ॥ अस्वच्छ वन्दनं दीप्यगं अदस्य मनाहता। अ
 रिक्ता नलाता ग वन्दयति ग सिता ॥ ॥ वन्दनं लपिता य ल्पय विगं यापना सनी। आयदाह न

[illegible]

स्वाहा॥सूर्याय॥जुहादि॥वाक्त्रा॥वल्गुनि॥वीरुसुद्ध॥एगस्थायनि॥मिर्वन्मसुगा॥आदिमंक्ष
 वभनठुजुगिगयवीहृषिगं॥वर्मलदीपिगंकृत्वासाविष्ठावेनमसुद्धनगा॥नुषकूठयंत्र
 ॥प्रक्षमहामारुल्लहेनव॥जुधनम॥युधनम॥जाँजाँकुँजाँकोँज॥जाँस॥श्राकूलमा
 र्लुमहाहेनवायप्रकाश॥किसहितायनम॥रुँगीश्रीमहामारुल्लहेनवायनम॥
 गुननमस्तुना॥नुँजाँ॥गुँकुँकुँ॥अरुवल्लुमलाका॥रं॥व्याकयनवनावनीगत्यदंदभिर्गंथ
 नासि॥श्रीगुनवनम॥गुनवक्रागुनविष्णुगुनदेवमहेश्वर॥गुनदेवजगत्सर्व
 सि॥श्रीगुनवनम॥अयनमगुनस्थानम॥अयनमच्छीगुनस्थानम॥अयनमावायगुनस्थान
 म॥वलिसुपआस्ताययादुका॥थवककुमास्ताययादुका॥अवसुवसुकिलि॥विशुकादु

[illegible]

श्वभ्रादक्षिणवक्रायाइकां॥ अथात्र जूधात्र जूधात्राम्मीव दूपायै थाउ एन वक्रायाइकां॥
अक्कौं कौं मरुत्तानिकायै थायश्चि मवक्रायाइकां॥ अकि निरविश्वका द्दुःखयै थायनायनवक्रा
याइकां॥ ॐ ति वक्रायास॥ अनभा एगवगिद्वत्कमलार्थे जां थाददयायनसठ॥ अक्कौं कूद्विवा
यै कूनदीयायै जां था निरसस्वाहा॥ अजां जां दू ववत्रा निश्वदू था मिखायै वोषट्॥ अथात्र
जूधात्राम्मीव दूपायै जां था कववायदू॥ अक्कौं मरुत्तानिकायै जां था नग्न
यायवट्॥ अकि निरविश्वका द्दुःखयै जां अस्माय रुट्॥ ॐ ति जूनायास॥ ॥ जनय जूना॥
जलपाठा सतां ययाइकां॥ अक्कौं अनन्दभाकि हेनवानन्दवीनाधियगय म्मां था जलया
गहद्वानिकायै याइकां॥ हां दू दयायणादि॥ अवाहनादि॥ धनमूढादि॥ भयग॥ ॐ

[illegible]

इका॥३॥ ॥ अथ मालिनीयः ॥ ॥ ॐ नमो भगवते ॥ ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ ॥ जय श्री माता त्रिनिद
 विनिमत्रमत्रनाभिनी। शान्तमकि प्रहृष्टवीवृद्धिस्त्रिंशजवद्वनी॥ जननी सर्वद्विगानासंसात्र
 इमि नूयवस्त्रिगा। सागावीरावलीदवीकात्रुर्ध्वं कृत्रवस्त्रल। जयगिधत्रमगलनिर्वाभसंस्त्रिगि
 श्रीमयीनिः॥ एगायकद्रूपायत्रा शान्तमकि सुमिष्ठा क्रियासगत्रिासद्वित्रस्वास्त्रलस्वायून
 ॥ सुफनागलवस्त्रुलाकात्रद्रूपाप्रहृष्टादिमकि सुसंगायसगास्त्राअगिद्रूपास्त्रद्रूपाभि
 वाअष्टनामाववासावरोडीमनास्त्रास्त्रिविन्द्रूपावयगाद्रुद्राकतिस्त्रुद्रिकाभमअउमकात्रुर्ध्व
 कात्रसंथाकिगकत्वमायसस्त्रुद्रूपाएगमकात्रवस्त्रयनी। अदिग॥ कांनेग॥ कान्तगल्वीद्रुवस्था
 निस्त्रद्रूपावगीकलुसंवाधनी। नूदमागातथमननमकि ॥ सुद्रुद्रागिद्रुमनीभध्विनी।

नरुगिस्थिथाभस्तिकस्काभूखगाहनाश्यायस००१ भलोतीभसद्यासिकानयसभसिगाखुं
 नस००१ महासुनसुंरुगिनीबादभन्तामताविन्दसुंदाहिनीस्यन्ददहयूताभषसम्यकयः
 नानन्दनिर्वा००१ सौख्यप्रदाहेनविद्यानकीजनूभकेयनामानिन्द्रमालावितेन्द्रम
 कि००१ वगीसिद्धिथागभनीसिद्धमागविठ००१ भदनाभाजिया००१ सुवीवाविभुद्धाभिवासिद्धवा
 गभनिमाएकासिलमिच्छक्रियामङ्गलासिद्धलक्ष्मीविरुति००१ सुंरुगिर्गति००१ भभताख्याति
 नाताम००१ नकावल्लुकनालक००१ मरूयामहाकूयम००१ गप्रियातुंजयन्याजितान्द्रसमीहि
 नी००१ हनवात्माद्यदवस्यवात्संगयानामिगा००१ मनुमाभनूगेमक्तिरिद्वीनयानानूनको००१ सु
 एको००१ सुसुंरुगिदविष००१ मनेद्विषयानात्सर्वेसूकक्षलकायालिनीप्रकरनमदिगिरात्मव

[illegible]

न्यदानान्नगकाश्च वक्राद्यगमध्वमहादाषद्व्यविम्व्रुक्तिर्संस्मर्यदवित्पदीयैस्सर्वपूज्यैः
नैकादिदूतद्विग्रहात्मिकास्तत्पुलाहकगल्लुलीयश्चिपिवद्वाहदेवैः नृनागयाभैर्दुका
वदुपादांगुलेस्तुपितृनामसंकीर्तनाद्विम्व्रुक्तिर्धातुमहायाधिरिः संस्मर्ययादतः
विन्दुयैर्गमहाकालिकालागिर्गुरुयुतस्तुन्दगमविन्दुवर्द्धीन्दुवन्डाक्यपद्यायैवेत्तो
लिमालालिस्त्यत्रकिंरुक्स्त्यीश्वरः। सर्ववीनाम्बिकर्तृनवीर्तनवस्तुगनगताहं
महायनाधंक्रमस्वायनाधंमिवा। नर्वंमुत्तामहादवित्तेनवनमहात्मनागतालिङ्गं
विनिरर्थनिर्गतायनमभ्वनी॥ ॥ ॐ नमः शिवाय ॥ ॥ जयवक्रवलिदत्ता ॥ ॥
इसपागयधिमहावलिर्द्विय॥ ॥ मयूनासनाययाइका ॥ ॥ श्रीकूलकवद्रकनाथ

[illegible]

ॐ कान्य ४ प्रनय विवृणुस्तु त्वगाम ॐ लदं संसृष्टयनामेन मागुत्तु वनं तेन वंश कंठम्
 ॥ ॐ सावहनं ॥ ॥ तं १ ॐ जूननकम ॐ लग्ना आदिद वयादुका ॥ वलि ४ ॥ १ ॐ आनन्दमकि
 तेन वानन्दवीरा विपगय मूर्ति यादुका ॥ वलि ४ ॥ १ नरासनयादुका ॥ ॥ ॐ मयूनासनाय
 यादुका ॥ १ मू मसनाय ॐ यादुका ॥ १ ॐ पुस्तुनदीपदं हकीदवीमता ॐ किकगयाला
 ययादुका ॥ वलि ४ ॥ १ ॐ जी कूलयूगवदुकनाथययादुका ॥ वलि ४ ॥ धनं मलनिडास ॥ १
 मंगी गूग ४ ॐ श्री कूलग ॐ मययादुका ॥ वलि ४ ॥ धनं ग्वननास ॥ आवातनादि ॥ गङ्गीनीद
 ॐ राग मूडा ॥ ॐ विविदवयूजा ॥ ॥ आधनमकीणादि ॥ ॐ दयासनाययादुका ॥ सितासनायया
 दिका ॥ ॐ गंगमयेयादुका ॥ ॐ यमनाय ३ ॥ ॐ नमदाय ३ ॥ ॐ मारु ३ ॥ ॐ सिन्धव ३ ॥ ॐ सनख ३

अथ कालमर्चनं २

[illegible]

[illegible]

[illegible]

त्रैलोक्यं अथ भवनानां ध्यानादिकां ॥ ग्रंथलि ॥ १ ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ ॥
 शयनासनाय यादृकां ॥ नरासनाय ३ ॥ अथ ध्यानं ॥ ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ ॥ शयनासनाय यादृकां ॥
 तिलावने ॥ श्ववल्गुं मसुसासार्कं सवर्लकलसंयुगं ॥ श्ववल्गुं पूवविकानुदकि ॥ कषूं ॥
 तिगी ॥ उरुनपीतवल्गुं स्या रुद्रुं नकनं किगी ॥ नकास्यदकि ॥ धूमं ॥ धगमूरु नभववागं ॥
 पीतवल्गुं श्वपीतस्या कषूदकि ॥ नकासूरु नमिषा द्रु गद्रु ॥ धगमूरु मं ॥ अक्षदभुजादिवं
 कर्वं धासनाय विगी ॥ श्वद्रुद्रु कधनं दवं ॥ त्रिभूलमद्रु गगथा ॥ सूरुं कमलुलं ॥ मृदं उमत्रुवद्रा
 द्रुभवव ॥ वालं धनसूरुं सूरुं यभुचल ॥ सूरुं ॥ तिगी ॥ वक्र ॥ श्वगदायालिं वनदाययद्रुं मास
 नसूरुवसं किगी ॥ नवं दूरुपनवात्मानं मलुलं गुरुमलुलं ॥ अथ अमुप्रयकात्मा क्रियसिद्धं ति
 की ॥ कायविन्दुधनं दवं नाना

श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥

[illegible]

कलहेनव३॥ १ श्री कलनाथहेनव३॥ १ श्री कलउर्वरुहेनव३॥ १ श्री कलकपाठहेनव३॥ १
श्री कलज्जाहेनव३॥ १ श्री कलज्जादवी३॥ १ कौं कौं कूंक ४ कृयालाय३॥ १ गं गी गूं
ग४ ॥ श्री कलगलशनाय३॥ १ श्री जी कलपूवट्कनाय३॥ १ कौं श्री महाकोनिका वि
श्रयादकां॥ मूलनग्रागति॥ १ श्री ज्ञानन्दमकिहेनवानन्दवीनाधीपाथमूं श्री भानवा
त्मागुंरमलुलरदात्रिकाथेया श्री दूकां॥ १ श्री ज्ञानन्दमकिहेनवानन्द श्री न्दश्रीम
हाविद्यानाशुश्री श्री भानवात्मागुंरमलुलर श्री दत्रिकाथेयादूकां॥ वलि४॥ नवात्मा
दद्यादि संपू३॥ श्री १ जूधा नकां थधा नकां धा नधा नक न कूं ४ सर्व ४ सर्व सिद्धं ४ सर्व
श्री नूडनूवक ४ पादकां पूसया॥ वलि४॥ १ नूवका ककिनी कूं ४ ला का कवली जी कामा ४ ज

वनी क्लीं क्लीं महाका एकात्रिंशत्संस्तु ४ श्रापद्वयं ५ ॥ वलि ४ ॥ १ नमो एगवति कुंकुमद्विक
ये क्लीं क्लीं धारजुधाराजुधानामस्त्रिंशत् क्लीं किलि २ विश्वयाद्वयं ५ ॥ वलि ४ ॥ १ समस्तमस्तु
यी ० सिंहा नयी ० यी ० भययी ० क्षत्राय क्षी ० सदा हाय सदा रुदिय सिद्धि समय वज्रयाद्वयं
५ ॥ वलि ४ ॥ १ उक्तान् क्लीं यत्किं कुरु सर्वत्रैश्वर्यं दयाय पाद्वयं ५ ॥ वलि ४ ॥ १ श्रीं श्रीं नवा
त्मा गुरुमंजुल एकात्रिंशत्कार्यं ० दत्तं वर्यं वलि गुरु २ स्वाहा ॥ अदाहनदि यन्त्रं श्रीं नाका
पूर्ययाद्वयं ॥ ५ नू योति म्जु ॥ १ नमो ४ श्रीनाथाय ॥ नमो ४ श्रीसिद्धिनाथाय ॥ नमो ४ श्रीकृष्ण
नाथाय ॥ प्रय ॥ अथ नवनवात्मा ॥ १०४ ॥ अथ श्रीं कृष्णादिगुरुमंजुलं ॥ ॥ ० ति श्रापश्चिम
रुक्मान रुक्माय गुरुमंजुलाश्च न समाय ४ ॥ ॥ अथाग ४ संप्रवक्ष्यामि कुमाश्च न समारण

। अथ कुं दन्यादिभू वती भिन्या सकानयत् ॥ गृन्ति न्यासं गथार्थान् द्वादश भू कुं षत् कुं कं ॥ मा
 लिनी भयना भिभू षट् दूरी न त्रय भू कं ॥ नवात्मानमध्या नासुं धारा वै व प्रियया । धारा ष
 कं प्रियं भू व न का कनी वी शय भू कं ॥ अदिषद् व न्यासादि षड्भ्या समस्त कर्मा । न त न्यास वि
 ना दपि न हि क्रिमा वर्तते एव ॥ कामला कूनदी यावत् २ वर्तता ३ वरू नूपिका ४ मरुता निशं वा
 दू भू कं ५ कनाय भू गयं यज्ञं ॥ यथमन्यास षत् कुं भू ति ॥ ॥ आत्म आसने ॥ त्रैलोक्यं श्रीं हू
 कं श्रीं ४ वरु मलु लु वत्रिं ज मा धि मता धा र ग ग भ वि मुकु ॥ अथ यत् २ हू हू हू श्रीं यका सनया
 द्का ॥ व ३ ॥ त्रैलोक्यं श्रीं श्रीं मारु ल ॥ अथ नी ग क ग्विनी हू हू हू ॥ हू य मलु ल ॥ ॥ अथ न्या
 स ॥ त्रैलोक्यं हू न न ग क्ति या द द्मा ४ य द्का ॥ हां काल गन्ति शु लू वथा ३ ॥ हि ने ड गन्ति डी यथा

[illegible]

लभ्येदुदयया ३॥ स्तुतिवायेक ७७३॥ ^{२१}स्मृत्स्वार्थमर्थ ३॥ स्तुतिनासावृत्तार्थेनासायुष्म
४३॥ स्तुति कठकार्ये क ७७३॥ स्तुति क ७७३॥ स्तुति क ७७३॥ स्तुति क ७७३॥ स्तुति क ७७३॥ स्तुति क ७७३॥
॥ स्तुति क ७७३॥ स्तुति क ७७३॥ स्तुति क ७७३॥ स्तुति क ७७३॥ स्तुति क ७७३॥ स्तुति क ७७३॥
किमिदं सखाहा स्तुति वदवदनिज्ज्ञानादिवाधमिस्वार्थे बोधद ॥ स्तुति वदिलिवजधनायसंग
नृकयवायदू ॥ स्तुति तौ वानिलजलूफ ७७३॥ स्तुति प्रगजानिगनगुगयायवषट् ॥ स्तुति ७७३॥ स्तुति ७७३॥
मुर्यजूनन ७७३॥ स्तुति मिली दू मदाया ७७३॥ स्तुति मदाया ७७३॥ स्तुति मदाया ७७३॥ स्तुति मदाया ७७३॥
स्तुति ननादिन्ये मिस्वार्थापादका स्तुति ७७३॥ स्तुति ७७३॥ स्तुति ७७३॥ स्तुति ७७३॥ स्तुति ७७३॥
यस्य स्तुति ७७३॥ स्तुति ७७३॥ स्तुति ७७३॥ स्तुति ७७३॥ स्तुति ७७३॥ स्तुति ७७३॥

म. निवर्त्य पूर्वमिति मालायाम् ॥

म. यतिष्ठत्येदं किं न मालायाम् ॥

७. विद्यायै उरुति मालायाम् ॥

८. मन्त्रायै मालायाम् ॥

व. वासुदेवायै मालायाम् ॥

व. प्रियदर्शनायै मालायाम् ॥

७. नागायै मालायाम् ॥

उ. मारुत्यै मालायाम् ॥

७. सुक्रीडत्यै मालायाम् ॥

७. तिमिरायै मालायाम् ॥

उ. अमरी मालायाम् ॥

उ. अर्धमासकालायाम् ॥

म. तिथिस्तदकालायाम् ॥

म. रात्रिस्तदकालायाम् ॥

७. स्नानस्तदकालायाम् ॥

७. रात्रिस्तदकालायाम् ॥

उपस्थेवासकलुहखलपा ॥
शुक्रगलेनासयिद्वया ४ पा ॥
वज्रिभेवक्रियाइका ॥
ककीकगयदंष्ट्रद्वया ४ पाइका ॥
खकालिकायेउद्वदभनयको ॥
गमिवायेअधमनयकोया ॥
घघाषायेउद्वक्रियाइका ॥
ढदीनायेअधक्रियाइका ॥

नमःमज्जधमनयकोया ॥
वृहतीमज्जधमनयकोया ॥
अस्योनागज्जधक्रियाइका ॥
ओअनग्रहीमज्जधक्रियाइका ॥
ज्जकुत्रेमातालूमधक्रियाइका ॥
ज्जमहासनक्रियायाइका ॥
ककोवेदक्रिल्लधक्रियाइका ॥
खवल्गुदक्रिल्लवाइद्वया ॥

७. सायादये जिज्ञायायाइकां ॥
८. वागश्वयवावायायाइकां ॥
९. मिश्रिवाहिने कल्लयाइकां ॥
१०. ए. ए. वल्लेदकि ॥ वाहुमिरवत ॥
११. य. वायवमथ वामवाहुमिरवत ॥
१२. ज. लामायेदकि ॥ वाहुदल्लया २ ॥
१३. रु. विनायके वामवाहुदल्लया २ ॥
१४. ०. पू. लु. माये करगल्लया ४ या २ ॥

१. ग. पु. वल्लुदकि ॥ मलिवल्लया ॥
२. घ. मिश्रिदकि ॥ दहसुयाइकां ॥
३. ङ. ए. करुडददकि ॥ कना कुलीष ॥
४. व. कू. म. वामसुल्लयाइकां ॥
५. कू. ए. कने वामवाहुदल्लया ॥
६. ज. व. उ. म. ख. वामहसुमलिवल्ल ॥
७. स. ज. उ. म. वामहसुयाइकां ॥
८. झ. म. म. म. वामकना कुलीष ॥

अ. अ. क्वा निन्ने दकि. ल. क. ना. हु. ली. ष. ॥
३. क. रु. न्ने. वाम. ना. हु. ली. ष. पा. इ. ॥
न. दी. पि. न्ने. भू. ल. द. नु. द. कि. ल. रु. रु. ॥
रु. रु. य. न्ने. ग्नि. भू. ला. ग्र. द. कि. ल. रु. रु. ॥
ट. क. या. लि. न्ने. क. या. ल. वाम. रु. रु. पा. ॥
य. या. व. न्ने. रु. दि. म. ल. ष. पा. इ. का. ॥
रु. अ. मि. का. पे. या. ल. ष. ना. पा. इ. का. ॥
स. स. र्वा. मि. न. द. कि. ल. या. ल. ष. पा. इ. ॥

ट. सा. म. भ. न. द. कि. ल. रु. रु. पा. ॥
०. ला. रु. ली. भ. द. कि. ल. ष. नू. वा. ग. या. ॥
उ. दा. नू. क. द. कि. ल. रु. ना. नो. पा. इ. ॥
रु. अ. रु. न. ना. नी. भ. द. कि. ल. रु. रु. द्या. या. ॥
ल. उ. मा. का. न. द. कि. ल. या. दि. या. ॥
त. अ. षा. दी. भ. वाम. रु. रु. पा. इ. ॥
थ. दि. ल. वाम. नू. वा. ग. या. इ. का. ॥
द. ष. ती. भ. वाम. रु. ना. नो. पा. इ. का. ॥

ज० ३०० ॥ वामपाश्यायाइकां ॥
क० ३०० ॥ वामपाश्यायाइकां ॥
ल० ३०० ॥ वामपाश्यायाइकां ॥
आ० ३०० ॥ वामपाश्यायाइकां ॥
व० ३०० ॥ वामपाश्यायाइकां ॥
म० ३०० ॥ वामपाश्यायाइकां ॥
म० ३०० ॥ वामपाश्यायाइकां ॥
म० ३०० ॥ वामपाश्यायाइकां ॥

व० ३०० ॥ वामपाश्यायाइकां ॥
न० ३०० ॥ वामपाश्यायाइकां ॥
य० ३०० ॥ वामपाश्यायाइकां ॥
ह० ३०० ॥ वामपाश्यायाइकां ॥
व० ३०० ॥ वामपाश्यायाइकां ॥
ह० ३०० ॥ वामपाश्यायाइकां ॥
म० ३०० ॥ वामपाश्यायाइकां ॥
य० ३०० ॥ वामपाश्यायाइकां ॥

ॐ शुक्राद्वैशुक्रपाइकां ॥
 गगनाद्वैशुक्रपाइकां ॥
 अक्षयदक्षिणपाइकां ॥
 अक्षयवामपाइकां ॥
 अक्षयदक्षिणपाइकां ॥
 अक्षयवामपाइकां ॥
 अक्षयदक्षिणपाइकां ॥
 अक्षयवामपाइकां ॥

न. उरुंगनकीयाइकां॥
 ल. पिनाकिमसांशया॥
 व. स्वज्ञानन्दसूत्रमल्लया॥
 म. वकानन्दजुक्तिमल्ल॥
 ष. ध्यानन्दमञ्जुतिया॥
 स. एंगमकुकीयाइकां॥
 ह. लाकलीमयांमल्लया॥
 क. संवहकोषयादाहुषगुक्तिमल्लयाइकां॥

ॐ नमः श्रीमालनीदयीपाइका ॥

ॐ नमः लगीन्द्रात ॥

॥

ॐ नमः भवनाभातेवरहानकायपाइका ॥

ॐ नमः भवनाभान्यास ॥

॥

ॐ नमः कालिकालिमहाकालिमसि अलिगलानिजो जौ जौ नक कक मसवीदवीमामयि मनु
एव ४ ग्री ददय दूती ददय पाइका ॥ ॐ नमः एगवगी शक्या अलि निदू नृषि नृता स ए कलि
कया लखदा अति नित २ दह २ ५ म २ य व २ म म ग ह नृ ग स ग स मा न य मा न य दू ३ रु द्वा मि
न दू ती मि न सि ३ ॥ ॐ नमः कुं कुं कुं श्री मिखा दू ती मिखा य ३ ॥ ॐ नमः उला लि अ सि म दी अ स व य स वि
सु व दि अ दि लि अ मि उ ल्ले दि अ स व ३ ४ ए ल वि अ ग्रा क व व दू ती क व य ३ ॥ ॐ नमः न क न को म दा
न क याम ॥ ॐ नमः श्री अ व न न व न ग ला हा ग्रा न ग दू ती न ३ ॥ ॐ नमः गु क क क क क दू रु द्म म स व य

उवाच ननु तनुगानु ब्रह्म यथा गमयितुं ननु यनकानु कानु यितानु कानु विष्णु कानु सर्वानु ननु
नदीस्रकना लिहं को दू रू दू गू अकू क्रिकया अकू दू गी अकू पादुकां ॥ स्वादका भिनामि
नसि अकू गमन ४ ॥ ब्रह्म विष्णु दू गी न्यास ॥ ॥ दूम ॥ ब्रह्म जीवा गी भवती भूत तत्त्व गगन लोक
लगगर्गमिनी गगन लोक अमृत लोक स सुख निभा गगनानन्द दव गगना स्वाव ४ ॥ अक्षि
लक काठि सिद्ध ४ व ४ व ४ काठि यामिनी पादुकां ॥ ददि ॥ ॥ मायाये भूत तत्त्व स्वर्ग लोक रागग
रुग्ममिनी स्वर्ग लोक अमृत स सुख निभा स्वर्गानन्द दव स्वर्ग स्वावती सुलक काठि सिद्ध वती भ
लक काठि यामिनी ३ ॥ नारि ॥ ॥ भावनी भूत तत्त्व पवन लोक लगगर्गमिनी पवन लोक अम
रुग्ममिनी पवनानन्द दव पवना स्वाव ४ ॥ लक काठि सिद्ध ४ व ४ लक काठि यामि

[illegible]

[illegible]

यनमध्यानायमस्तु नमः॥ जौ नद्याननूयहृष्टं ध्याननूपाये हृदय॥ जौ नद्यानामउवीक्षो ध्यानमस्तु नमो॥
 जौ नूष्टदृष्टमस्तु ह्रीमायेदकिं लठुग॥ जौ नूष्टं ह्रीषः लठु ह्रीषः एवामठुग॥ जौ नूष्टं हृष्टमस्तु व
 मनयेवामा नूपादा हृलीषूपादकां॥ इति ध्यानिकायस्तु नमः॥ ॥ त्रैलोक्यभाषातिरुदायकं पादकुक्षमा
 ४पादकां॥ नमः शम्भुयकं पादगलया॥ ४३॥ नमः शम्भुकासमाहृष्टं पादद्वया॥ ४३॥ नमः सर्वकामार्थसाधका
 नकिं गुलुहृष्टया॥ ४३॥ अग्रनामनरुं नृद्वया॥ ४३॥ सर्वगुणतिरुतगतीनकिं नृद्वया॥ ४३॥ सर्वनूययननूययनि
 वरुनीनकिं उष्टा॥ ४३॥ सर्वसिंहवगाकरः लठुकादनामूलनस्तेनैकमप्रवृत्तं नकिं यानो॥ ४३॥ सर्वमाहृष्टकृद्व
 दययनमसिद्धिं॥ ४३॥ यनकमद्विदनकरं सिद्धिकरं गुं॥ ४३॥ माहृष्टवदनं गुं॥ ४३॥ लिः ४पादकां
 १॥ इति रुद्रवस्तु नमः॥ ॥ त्रैलोक्यभाषातिरुदायकं पादकुक्षमा
 नाहृष्टवस्तु नमः॥ ॥ त्रैलोक्यभाषातिरुदायकं पादकुक्षमा

नाहृष्टवस्तु नमः॥ २

नी३

[illegible]

एगं मयि वामयाद ३॥ ने १ वाम ८८ वर ३ विशुद्ध याग ८८ वर ४ याद का १॥ शिमि मन्त्र ८८ न्यासां ८८
तिगि र ८८॥ ॥ यद १०॥ ने १ कौनासा पर ८८ या ४ याद का १॥ हूं मरव याद का १॥ यन १० या ४ याद का १॥ स
सद्यस्मिन् प्राश्ने क ८८ वर ४ याद का १॥ ने १ ज ४ याद ८८ या ४ याद का १॥ ८८ ति ८८ न्यासां ८८॥ ने १ मूल
ला ४ याद का १॥ ८८ क ८८ याद का १॥ उम ४ याद का १॥ न ८८ याद का १॥ ने १ अ ४ याद ८८ या ४ याद का १॥ ८८ ति ८८
जय ८८ कन्या ८८॥ ॥ क ८८॥ ने १ कौ ८८ महाना तिका य ८८ गूं कला विसां सी ८८ मूं विमृष्टा किनी य ८८ व
तियूनी ख ८८ म न नन्द व याद का १॥ ८८ ति ८८ या ८८ ज ८८ या ८८ म ८८ वी व ८८ या ८८ म ८८ वि ८८ कां ८८
कूं ८८ मूं जना रुत का किनी य ८८ म ८८ यूनी विमृष्ट नन्द व या ८८ ना ८८॥ लौ ८८ कूं व ८८ त ८८ नि ८८ व ८८ कूं ८८ व ८८ वि
लौ ८८ लौ ८८ लूं ८८ म ८८ नि ८८ य ८८ कला किनी य ८८ म ८८ या ८८ म ८८ नन्द व या ८८ लि ८८ ग ८८ कूं क ८८ का ८८ य ८८

पायें जी सु पदा विनारी नूँ सुँ सुँ विनारी किनी यथा यत्री अनुराही मनन्देवया ३॥ मन्दा नमो गवति
 हलसय जा नूँ उवभा वि २ जै गै दूँ सुँ अक्षर ग किनी यमन यत्री मिशानन्द देवया ३॥ प्रमथ्य कि
 निरविशका दूँ लय जे ४ नूँ गवा वि २ हाँ ही दूँ सुँ अक्षर हा किनी ययत्री अक्षर वली मनन्देव
 वया ३॥ षट् ३॥ ललाटा नूँ यो यो यूँ सुँ ललाट यक भा २ यय क भा यत्री यत्री कोल मनन्देवया इका
 १॥ निज दिवद्वयाम् ॥ ॥ नि २ न्यास ४॥ ॥ अथ गुरु जी निज गै नूँ ॥ विँ नूँ दूँ महाकालाय यद्
 काँ १॥ काँ काँ शूँ ४ कृपा लायया ३॥ यमास नामया ३॥ वेँ १॥ श्री गगनानन्द देव अमिलाम्बाद विमाल अक्षर
 साखर्यया इका पूजया मि १॥ श्री गगनानन्द देव रागममामहनाम्बाद विमाल अक्षर साखर्यया ॥ श्री
 कीजानन्द देव समलाम्बाद विमाल अक्षर साखर्यया ॥ श्री साक्षानन्द देव अक्षर साखर्यया ॥ श्री अनन्द

देव अष्टहासास्त्रयया ॥ श्रीसहजानन्ददेव अष्टहासास्त्रयया ॥ श्रीठीकानन्ददेव अष्टहासास्त्रयया ॥ श्री
 धनसहजानन्ददेव अष्टहासास्त्रयया ॥ श्रीदेवानन्ददेव अष्टहासास्त्रयया ॥ श्रीयवगहनन्ददेव अष्टहासास्त्रयया
 ॥ श्रीयवेजानन्ददेव अष्टहासास्त्रयया ॥ त्रैलोक्यहासन्ददेव अष्टहासास्त्रयया इकापूजयामि ॥ त्रैलोक्य
 श्रीगुनूर्यकि एष्टानिकाथेयाइका ॥ वलिगुष्ट २ स्वाहा ॥ संपूज्य ॥ अवातनादि ॥ मडा ॥ वृत्तिगुनूर्यकि
 ४ पूजा ॥ ॥ मातनीच्या ॥ सलिमलास विंनहायावमानकावायावतया ॥ बन्दनादि ॥ पूजन ॥ यथासना ॥
 गमुं सवर्जनक्षरहायाइका ॥ मुं सवर्जनमातनीया ३ ॥ मुं सवर्जनगमनीया ३ ॥ मुं सवर्जनगमनी
 या ३ ॥ मुं सवर्जनगकवर्णाया ३ ॥ गमुं ४ सवर्जनकुडानुदनीयाइकापूजयामि ॥ गमुं श्रीठावध
 कुमहाष्टानिकाथेयाइका ॥ वलिगुष्ट २ स्वाहा ॥ अवातनादि ॥ यानिमडा ॥ वृत्तिठावध ३ ॥ मपूजा ॥

अथ ब्राह्मण क० ८८ मयूज न० ॥ १ वषासनायया ३ ॥ सिंहासना ॥ १ अ० ॥ अनन्द गकिरे नवानन्द वीना विद्याय
मू० ॥ १ क० ८८ नाथसु गकिरहितायया १ ॥ वलि ४ ग० २ ॥ १ वृ० ॥ हाहा ॥ यथा मू० ॥ १ गि० ॥ १ क० ८८ न० ५० ॥
१ ॥ माह ग० १ ॥ ॥ १ हंसासनयाइका ॥ १ वषासन ॥ मयूरासन ॥ गरुडसन ॥ महिषासन ॥ गणा
सन ॥ वितासन ॥ नगासनया ३ ॥ १ अ० ॥ अथ विजयमाधव नद विमल ग्रावका ॥ १ विजययाइकायूठयामि १ ॥ वलि
४ ॥ १ व० ॥ माह ग० १ ॥ कोमाग्री ॥ विदूषी ॥ वागाही ॥ १ वृ० ॥ १ वाम ॥ १ महालक्ष्मी ॥ सुसुमनु ॥ वलि ४ ग० २
हाहा ॥ यगी ६ ॥ अ० ॥ वाहनादि ॥ सुसुमनु ॥ १ गि० ॥ १ माह ग० १ ॥ ॥ १ नै० ॥ महाकालाययाइका ॥ वलि
४ ॥ १ कौ० ॥ कौ० ॥ क० ४ ॥ क० ४ ॥ ग० १ ॥ यया १ ॥ वलि ४ ग० २ ॥ हाहा ॥ ॥ अ० ॥ ग० १ ॥ १ अ० ॥ अ० ॥ क० १ ॥ ययाइका
॥ अनन्ता ॥ कन्द ॥ नाल ॥ यण ॥ यग्र ॥ क० १ ॥ १ क० १ ॥ कासनययाइका ॥ १ सिंहासनययाइका ॥ १ महिषास

नायपाइकां॥१॥ सुनायपाइ॥१॥ निशुनायपाइ॥१॥ मूलसक्त॥१॥ नमः श्रीजी वलुवाग्रये नमः॥
जीपाइकां॥१॥ वलिं॥ श्रीरुद्र वलुदवीपाइकां॥१॥ श्रीप्रवल्मुदविया॥१॥ श्रीवलुदवीपाइ॥१॥ श्रीवलुनापि
कादवीपाइ॥१॥ श्रीवलुदवीपाइ॥१॥ श्रीवलुवगीदवीपाइ॥१॥ श्रीवलुतूयादवीपाइ॥१॥ श्रीजुतियलिकादवीपा
इकां॥१॥ रुद्रयादिसंयूक्त॥ वलिं गट्टरुद्राहा॥१॥ श्रीसिद्धि वामलु वलिं गट्टरुद्राहा॥१॥ श्री
वतिपूजनं॥॥ अथवागानिपूजा॥१॥ यथासुनायपाइकां॥१॥ निगलिपिगठीकुरुकलुयेखाहा
वागानिपूजा॥१॥ यथासुनायपाइकां॥१॥ वलिं॥ यानिमूडा॥१॥ श्रीनिपूजा॥१॥ यथासुनायपाइकां॥१॥
॥१॥ श्रीनिपूजा॥१॥ यथासुनायपाइकां॥१॥ श्रीनिपूजा॥१॥ यथासुनायपाइकां॥१॥ श्रीनिपूजा॥१॥
॥१॥ श्रीनिपूजा॥१॥ यथासुनायपाइकां॥१॥ श्रीनिपूजा॥१॥ यथासुनायपाइकां॥१॥ श्रीनिपूजा॥१॥
॥१॥ श्रीनिपूजा॥१॥ यथासुनायपाइकां॥१॥ श्रीनिपूजा॥१॥ यथासुनायपाइकां॥१॥ श्रीनिपूजा॥१॥
॥१॥ श्रीनिपूजा॥१॥ यथासुनायपाइकां॥१॥ श्रीनिपूजा॥१॥ यथासुनायपाइकां॥१॥ श्रीनिपूजा॥१॥
॥१॥ श्रीनिपूजा॥१॥ यथासुनायपाइकां॥१॥ श्रीनिपूजा॥१॥ यथासुनायपाइकां॥१॥ श्रीनिपूजा॥१॥

हमं ललायया ३॥ ग्राह्यमं ललायया ३॥ ग्राह्यमं ललायया ३॥ श्री हारावक्रियतासनायया ३॥ श्री
हासनायया ३॥ ॥ अथ ~~अनं~~ ॥ ॥ नीलशयश्चतनान्त्यन्तुयय द्वासीति ४॥ द्वित्रयवर्दभायात्र
सर्वास्त्रिवर्ति ४॥ ॥ वद्विनाहिरिताम्राजकताहुष्णिगितेनव ४॥ कदाचालान्द्राद्या ४॥ काश्रीकाहिरु
हासवान् २॥ विगन्मूलवकेषु गादानवदकवाहुरि ४॥ पानिजागजायमालापरुकारयकद्वत्रे
३॥ अथवाहुर्यायाश्च कवमावितविग्रह ४॥ दवायामममन्वसदेवसीतिननं ४॥ ५॥ यस्यदमुग्रमाध्वि
अनहकमाह्वे। मूलात्सर्वतुलारश्चकान्मायाकयाहवत् ॥ ७॥ अथायालाकममित्विज्ञानात्सर्वज्ञ
हवत्। लक्ष्मीलार ४॥ पानिजागमन्त्रसिद्धिमुगायक ४॥ ३॥ यावत्सर्वज्ञायस्त्वहयनित्यत्वक ४॥ अन्त
नायगिनि। अनं। समुववमवमलि ॥ ॥ मूर्खोवललितायवा। लक्ष्मीलक्ष्यमस्यता। मवकाययिदव

ॐ मयथमहिमात्मता ॥ ७ ॥ पीतवर्णः शुभे देवसु सुखं भूयः कुरु मयः सन्निहं । उच्चाटय सुखं शुभे देवसु सुखं भूयः कुरु
विभाहनयः प्रवृत्त्या मसि वमसि नमः ॥ ८ ॥ लुनी रतिरः सर्वकर्मः ॥ ९ ॥ वनवधनः ॥ १० ॥ विवः ॥ ११ ॥ मनीमः किय
॥ १२ ॥ सुखं सन्निहं ॥ १३ ॥ नक्तः ॥ १४ ॥ मिथयः ॥ १५ ॥ ययवः ॥ १६ ॥ मुक्तः ॥ १७ ॥ विनयः ॥ १८ ॥ मयः ॥ १९ ॥ नावकः ॥ २० ॥ मयः
धनः ॥ २१ ॥ मनीमः ॥ २२ ॥ वधः ॥ २३ ॥ सुखं ॥ २४ ॥ ययवः ॥ २५ ॥ मुक्तः ॥ २६ ॥ विनयः ॥ २७ ॥ मयः ॥ २८ ॥ नावकः ॥ २९ ॥ मयः
कर्मवः ॥ ३० ॥ सन्निहं ॥ ३१ ॥ मयः ॥ ३२ ॥ वधः ॥ ३३ ॥ सुखं ॥ ३४ ॥ ययवः ॥ ३५ ॥ मुक्तः ॥ ३६ ॥ विनयः ॥ ३७ ॥ मयः ॥ ३८ ॥ नावकः ॥ ३९ ॥ मयः
नक्तः ॥ ४० ॥ मिथयः ॥ ४१ ॥ ययवः ॥ ४२ ॥ मुक्तः ॥ ४३ ॥ विनयः ॥ ४४ ॥ मयः ॥ ४५ ॥ नावकः ॥ ४६ ॥ मयः
धनः ॥ ४७ ॥ मनीमः ॥ ४८ ॥ वधः ॥ ४९ ॥ सुखं ॥ ५० ॥ ययवः ॥ ५१ ॥ मुक्तः ॥ ५२ ॥ विनयः ॥ ५३ ॥ मयः ॥ ५४ ॥ नावकः ॥ ५५ ॥ मयः
कर्मवः ॥ ५६ ॥ सन्निहं ॥ ५७ ॥ मयः ॥ ५८ ॥ वधः ॥ ५९ ॥ सुखं ॥ ६० ॥ ययवः ॥ ६१ ॥ मुक्तः ॥ ६२ ॥ विनयः ॥ ६३ ॥ मयः ॥ ६४ ॥ नावकः ॥ ६५ ॥ मयः
नक्तः ॥ ६६ ॥ मिथयः ॥ ६७ ॥ ययवः ॥ ६८ ॥ मुक्तः ॥ ६९ ॥ विनयः ॥ ७० ॥ मयः ॥ ७१ ॥ नावकः ॥ ७२ ॥ मयः
धनः ॥ ७३ ॥ मनीमः ॥ ७४ ॥ वधः ॥ ७५ ॥ सुखं ॥ ७६ ॥ ययवः ॥ ७७ ॥ मुक्तः ॥ ७८ ॥ विनयः ॥ ७९ ॥ मयः ॥ ८० ॥ नावकः ॥ ८१ ॥ मयः
कर्मवः ॥ ८२ ॥ सन्निहं ॥ ८३ ॥ मयः ॥ ८४ ॥ वधः ॥ ८५ ॥ सुखं ॥ ८६ ॥ ययवः ॥ ८७ ॥ मुक्तः ॥ ८८ ॥ विनयः ॥ ८९ ॥ मयः ॥ ९० ॥ नावकः ॥ ९१ ॥ मयः
नक्तः ॥ ९२ ॥ मिथयः ॥ ९३ ॥ ययवः ॥ ९४ ॥ मुक्तः ॥ ९५ ॥ विनयः ॥ ९६ ॥ मयः ॥ ९७ ॥ नावकः ॥ ९८ ॥ मयः
धनः ॥ ९९ ॥ मनीमः ॥ १०० ॥ वधः ॥ १०१ ॥ सुखं ॥ १०२ ॥ ययवः ॥ १०३ ॥ मुक्तः ॥ १०४ ॥ विनयः ॥ १०५ ॥ मयः ॥ १०६ ॥ नावकः ॥ १०७ ॥ मयः
कर्मवः ॥ १०८ ॥ सन्निहं ॥ १०९ ॥ मयः ॥ ११० ॥ वधः ॥ १११ ॥ सुखं ॥ ११२ ॥ ययवः ॥ ११३ ॥ मुक्तः ॥ ११४ ॥ विनयः ॥ ११५ ॥ मयः ॥ ११६ ॥ नावकः ॥ ११७ ॥ मयः
नक्तः ॥ ११८ ॥ मिथयः ॥ ११९ ॥ ययवः ॥ १२० ॥ मुक्तः ॥ १२१ ॥ विनयः ॥ १२२ ॥ मयः ॥ १२३ ॥ नावकः ॥ १२४ ॥ मयः
धनः ॥ १२५ ॥ मनीमः ॥ १२६ ॥ वधः ॥ १२७ ॥ सुखं ॥ १२८ ॥ ययवः ॥ १२९ ॥ मुक्तः ॥ १३० ॥ विनयः ॥ १३१ ॥ मयः ॥ १३२ ॥ नावकः ॥ १३३ ॥ मयः
कर्मवः ॥ १३४ ॥ सन्निहं ॥ १३५ ॥ मयः ॥ १३६ ॥ वधः ॥ १३७ ॥ सुखं ॥ १३८ ॥ ययवः ॥ १३९ ॥ मुक्तः ॥ १४० ॥ विनयः ॥ १४१ ॥ मयः ॥ १४२ ॥ नावकः ॥ १४३ ॥ मयः
नक्तः ॥ १४४ ॥ मिथयः ॥ १४५ ॥ ययवः ॥ १४६ ॥ मुक्तः ॥ १४७ ॥ विनयः ॥ १४८ ॥ मयः ॥ १४९ ॥ नावकः ॥ १५० ॥ मयः
धनः ॥ १५१ ॥ मनीमः ॥ १५२ ॥ वधः ॥ १५३ ॥ सुखं ॥ १५४ ॥ ययवः ॥ १५५ ॥ मुक्तः ॥ १५६ ॥ विनयः ॥ १५७ ॥ मयः ॥ १५८ ॥ नावकः ॥ १५९ ॥ मयः
कर्मवः ॥ १६० ॥ सन्निहं ॥ १६१ ॥ मयः ॥ १६२ ॥ वधः ॥ १६३ ॥ सुखं ॥ १६४ ॥ ययवः ॥ १६५ ॥ मुक्तः ॥ १६६ ॥ विनयः ॥ १६७ ॥ मयः ॥ १६८ ॥ नावकः ॥ १६९ ॥ मयः
नक्तः ॥ १७० ॥ मिथयः ॥ १७१ ॥ ययवः ॥ १७२ ॥ मुक्तः ॥ १७३ ॥ विनयः ॥ १७४ ॥ मयः ॥ १७५ ॥ नावकः ॥ १७६ ॥ मयः
धनः ॥ १७७ ॥ मनीमः ॥ १७८ ॥ वधः ॥ १७९ ॥ सुखं ॥ १८० ॥ ययवः ॥ १८१ ॥ मुक्तः ॥ १८२ ॥ विनयः ॥ १८३ ॥ मयः ॥ १८४ ॥ नावकः ॥ १८५ ॥ मयः
कर्मवः ॥ १८६ ॥ सन्निहं ॥ १८७ ॥ मयः ॥ १८८ ॥ वधः ॥ १८९ ॥ सुखं ॥ १९० ॥ ययवः ॥ १९१ ॥ मुक्तः ॥ १९२ ॥ विनयः ॥ १९३ ॥ मयः ॥ १९४ ॥ नावकः ॥ १९५ ॥ मयः
नक्तः ॥ १९६ ॥ मिथयः ॥ १९७ ॥ ययवः ॥ १९८ ॥ मुक्तः ॥ १९९ ॥ विनयः ॥ २०० ॥ मयः ॥ २०१ ॥ नावकः ॥ २०२ ॥ मयः
धनः ॥ २०३ ॥ मनीमः ॥ २०४ ॥ वधः ॥ २०५ ॥ सुखं ॥ २०६ ॥ ययवः ॥ २०७ ॥ मुक्तः ॥ २०८ ॥ विनयः ॥ २०९ ॥ मयः ॥ २१० ॥ नावकः ॥ २११ ॥ मयः
कर्मवः ॥ २१२ ॥ सन्निहं ॥ २१३ ॥ मयः ॥ २१४ ॥ वधः ॥ २१५ ॥ सुखं ॥ २१६ ॥ ययवः ॥ २१७ ॥ मुक्तः ॥ २१८ ॥ विनयः ॥ २१९ ॥ मयः ॥ २२० ॥ नावकः ॥ २२१ ॥ मयः
नक्तः ॥ २२२ ॥ मिथयः ॥ २२३ ॥ ययवः ॥ २२४ ॥ मुक्तः ॥ २२५ ॥ विनयः ॥ २२६ ॥ मयः ॥ २२७ ॥ नावकः ॥ २२८ ॥ मयः
धनः ॥ २२९ ॥ मनीमः ॥ २३० ॥ वधः ॥ २३१ ॥ सुखं ॥ २३२ ॥ ययवः ॥ २३३ ॥ मुक्तः ॥ २३४ ॥ विनयः ॥ २३५ ॥ मयः ॥ २३६ ॥ नावकः ॥ २३७ ॥ मयः
कर्मव

गङ्गा लंका मूल नंभमसन्निर्वादि ५१ कवचवर्णयत्सु मखयनगिगी ॥ १॥ यूरवकुंखवकुंमिग
मंमृदिकायमं सुरुसूर्यसिका मसुवकुंयनादि ॥ १६ ॥ योनकूयवयामवदकक ५२ गिष्वपिनासा
गविलवृला वगलष्यिकमात्मकं ॥ १७ ॥ गिलाविगदालयंगारिकुंववीम्यदी कलसामंयवामा ५३ यूरव
दकक ५४ ॥ २० ॥ यनावकुमूर्द्धगान्तसुकयनादि ॥ सर्विदकुं कनालानि वकुं ५५ कानि मफुना ॥ २१ ॥
अमु ५६ स्यायवद्वामि कृद्विकायामहानिवादि ५७ वययागन दामवेवविज्ञाना ॥ २२ ॥ गिभूतवकुवजा ५८
जु ५९ मनकालिके ॥ २३ ॥ वामनादयालीलात्यलंगानकं ॥ २४ ॥ ज्वरुमलवदा ५९ य ६० यस्तुधनस्तु
था ॥ कपालमामके ६१ कं सिंहासनभवासन ॥ गलयादिहर्वकुला वकुनामायाकयारवत् ॥ वकासुव ॥ गना ॥
मं ६२ मत्क ६३ मर्ग ॥ २५ ॥ गत्राकूटविना ६४ क ६५ विद्ववर्जनील ६६ लाउत्यलवदामादकसिद्ध

[illegible]

दवी श्री महापालक प्रयाल श्री द्वापरमूर्ति श्री यूर्ति निमहा मडायी ॥ ० श्री यूर्ति महादवी श्री यूर्ति गना
थदव श्री यूर्ति महादवी श्री यूर्ति भानन्ददव श्री कृकानिमहन्ता निकावक श्री विष्णु नीवक श्री अनल
नियवर्ति श्री विमल श्री याल रूप श्री कृकानन्ददवया ॥ ७ श्री यूर्ति श्री नलदी यथमादवी श्री
महाकायक प्रयाल श्री कलियुग श्री कामरूपमहमूडायी ॥ ० श्री काम विद्या महादवी श्री कामी गना
थदव श्री महादवी श्री महादवी भानन्ददव श्री कृकानिमहन्ता निकावक श्री विष्णु नीवक श्री सामगि
नियवर्ति श्री वज्रदुर्ग प्रयाल रूपानीग श्री कृकानन्ददवया ॥ ७ श्री यूर्ति श्री महा नलदी यथ
मादवी श्री महाकायक प्रयाल श्री ज्वरानय श्री महापनायन वन्दुयी ॥ ० श्री वेदि श्री महादवी श्री व
न्दु गना थदव श्री मातङ्गि न्य महादवी श्री महादवी भानन्ददव श्री कृकानिमहन्ता निकावक श्री पानिजातवक

अमृतवल्ली ॥ मन्त्राणि विवर्तयन् विजयनाथकृत् प्रयाल्य सर्वत्रापि सुखी सन्त्यागी तत्राकृष्टिकान्
 नन्दवया इकां पूजयामि ॥ मन्त्राणि कोऽन्यत्रापि पश्य ॥ ०४ ॥ ॥ यन्मिमांसा ॥ मन्त्राणि ॥ १ ॥ अथ वृत्तान्तः ॥ ०
 अकृष्टिकायां इकां पूजयामि ॥ मन्त्राणि ॥ १ ॥ अथ वृत्तान्तः ॥ ० ॥ अथ वृत्तान्तः ॥ ० ॥ अथ वृत्तान्तः ॥ ० ॥
 नाविकायां ॥ ० ॥ अथ वृत्तान्तः ॥ ० ॥ अथ वृत्तान्तः ॥ ० ॥ अथ वृत्तान्तः ॥ ० ॥ अथ वृत्तान्तः ॥ ० ॥
 लक्ष्मीमांसायां इकां पूजयामि ॥ मन्त्राणि ॥ १ ॥ अथ वृत्तान्तः ॥ ० ॥ अथ वृत्तान्तः ॥ ० ॥ अथ वृत्तान्तः ॥ ० ॥
 सिद्धि विमलः ॥ अथ वृत्तान्तः ॥ ० ॥ अथ वृत्तान्तः ॥ ० ॥ अथ वृत्तान्तः ॥ ० ॥ अथ वृत्तान्तः ॥ ० ॥
 ॥ विमलयः ॥ ० ॥ ॥ अथ वृत्तान्तः ॥ ० ॥ अथ वृत्तान्तः ॥ ० ॥ अथ वृत्तान्तः ॥ ० ॥ अथ वृत्तान्तः ॥ ० ॥
 ॥ अथ वृत्तान्तः ॥ ० ॥ अथ वृत्तान्तः ॥ ० ॥ अथ वृत्तान्तः ॥ ० ॥ अथ वृत्तान्तः ॥ ० ॥ अथ वृत्तान्तः ॥ ० ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

प्राललाटयमागज्जस्वामेवका॥५॥सर्वमङ्गलायेवमभ्यर्चयेत्॥शुक्रविवायेज्जकरेनवपाइकापूजयामि
॥१॥कैरवंगंयंरंमस्ववाना॥५॥स्यारि॥१॥लायेमाहमभ्यर्चयेत्विवायेसुनिभेज्जग्न्येकविवायेज्जकरेनवपाइ॥
वैरंरंमंज्जका॥५॥कालायमाडिहायेकोमाभ्यर्चयेत्कवलिकायेयामाभ्यर्चयेत्विवायेज्जकरेनवपाइ॥६॥
लंदिअइहासमभ्यर्चयेत्पूजाहन्सिद्धयेवकेनेमहायेकुविवायेज्जकरेनवपाइ॥७॥गंधंदंघनंनलोत्रय
स्यादिषायवाना॥५॥रदयेकन्दकेवान्॥५॥कुविवायेज्जकरेनवपाइ॥८॥पंरंवरंमंगुअवनिर्गुषये॥५॥
॥५॥किलिकिलायेनरंकेवाययायेकुविवायेज्जकरेनवपाइ॥९॥यैरंलंवं॥५॥नरकामुकडावायेवाम्भुयका
लनप्रोद्विषिकाये॥५॥कुविवायेज्जकरेनवपाइ॥१०॥मंघंमंघंयादयादेवीका॥५॥४॥जायेमहालक्ष्मीव
कोषये॥५॥मन्येकुविवायेज्जकरेवपाइकापूजयामि॥१॥६॥॥ज्जु॥५॥५॥२॥मूलमन्त्र॥ज्जवमना॥मडा

॥ नवनाथपूजा ॥ १॥ पूर्वादिभिः भक्तान् ॥ श्रीगगनानन्ददेवया इकायूजयामि ॥ श्रीकूमरानन्द ॥ श्रीप
मानन्द ॥ श्रीदेवानन्द ॥ श्रीदिवानन्द ॥ श्रीकमलानन्द ॥ श्रीमिवानन्द ॥ श्रीनामानन्द ॥ श्रीरुद्रानन्ददेवया इकायूज
यामि ॥ श्रीकूटद्वय ॥ मूलमन्त्र ॥ आवमना ॥ मडादभनि ॥ ॥ पूर्ववैकि ॥ श्रीसूर्यानिन्ददेवया इकायूजयामि ॥
श्रीग्रीवानन्द ॥ श्रीश्वदेवानन्द ॥ श्रीगहर्मेकानन्द ॥ श्रीसिंहानन्द ॥ श्रीगयानन्द ॥ श्रीविजयानन्द ॥ श्रीमिणानन्द ॥ श्री
दानन्द ॥ श्रीविमलानन्द ॥ श्रीरवज्ञानन्द ॥ श्रीमदानन्द ॥ श्रीपत्तानन्द ॥ श्रीकमवानन्द ॥ श्रीअमृतानन्द ॥ श्रीशेषा
नन्ददेवया इकायूजयामि ॥ श्रीकूटद्वय ॥ मूलमन्त्र ॥ आवमना ॥ मडादभनि ॥ पूर्वदलपीतपूर्वना ॥ श्री
कलापप्रानन्ददेवया इकायूजयामि ॥ श्रीकलापेमिणानन्ददेवा ॥ श्रीकलिकार्येमधनन्ददेवा ॥ श्रीकलापेवीर्या
येनन्ददेवया इकायूजयामि ॥ ॥ दक्षिणदलद्वयपूर्वना ॥ श्रीकलापव्यापेउग्रनन्ददेवया इकायूजयामि ॥ ॥

सिद्धये सिद्धानन्ददेवा ॥ श्रीलक्ष्म्ये विमलानन्ददेवा ॥ श्रीकलसूदयार्थिलोकानन्ददेवा इकायुग्यामि ॥ ॥ अ
नदलनकाप्रथन ॥ ॥ श्रीनकायै उलमानन्ददेवा इकायुग्यामि ॥ ॥ श्रीसासनभयार्थे उद्वानन्ददेवा इकायु
ग्यामि ॥ ॥ श्रीविकनार्थे अरुयानन्ददेवा ॥ ॥ श्रीकुठिलानन्दार्थे लोकानन्ददेवा इकायुग्यामि ॥ ॥ पश्चिम
लक्ष्म्यार्थे ॥ ॥ श्रीवगभयै सुखानन्ददेवा इकायुग्यामि ॥ ॥ श्रीमनाज्ञादार्थे यज्ञानन्ददेवा ॥ ॥ उन्नमनार्थे
यानन्ददेवा ॥ ॥ श्रीमातुनार्थे विज्ञानन्ददेवा इकायुग्यामि ॥ ॥ अङ्ककूट २ ॥ मूलमन्त्र ॥ अवमन ॥ मङ्गादग्न
॥ ॥ म ॥ ॥ श्रीमिवगत्वा भिकारयनायै पाइका ॥ ॥ अङ्कानां ॥ सुधनमध्यात्र दूधानतूयसुधानामुदवी
तीतिरीषलीवम २ पिवरुद्ररनररुद्रको दूद्रुद्र विद्यागत्वा भिकार अयनायै पा ॥ ॥ नैजां दूद्रुद्र अ
गत्वा भिकारयनायनायै पा ॥ ॥ वतीति ३ ॥ नमो एगति कुं कुद्रिकायै जां जां दूद्रुद्र अङ्कानां अङ्कानां

[illegible]

[illegible]

मलिनं विद्रावनिर्दुःखं ॥ कालनिर्दुःखं ॥ मातानिर्दुःखं ॥ सङ्गीतनिर्दुःखं ॥ हनिर्दुःखं ॥ गतिर्दुःखं ॥ यूनिरुःखं ॥ यूनिरुःखं ॥
॥ नमामाह गलभयं ॥ १ ॥ नैवामुःखवन्दविद्वदुःखादुकायूजयामि ॥ मन्त्रं ॥ ॥ श्री ग्री नूडवभुसा
एवमुःखवन्दुःखीतिवभुःखद्विकामेया ॥ वलिः ॥ आवाहनादि ॥ एवमुःख ॥ श्री डा ॥ गतिविद्वदुःख
यूननं ॥ ॥ अथमूलस्वदवावनि ॥ १ ॥ अक्षरमकययादुका ॥ अनन्त ॥ कन्द ॥ नाला ॥ यथा ॥ यथा ॥ कमन
कलिका ॥ यथा ॥ यथा ॥ सनम्पा ॥ वन्दुःखलाभियतयवक्रयतासनयया ॥ १ ॥ सूर्यमलुलाभियतयविद्वयता
सनयया ॥ अग्निमलुलाभियतयवक्रयतासनायया ॥ वक्रमलुलाभियतयवक्रयतासनया ॥ १ ॥ किमलु
लाभियतयसमाभिवयतासनयादुका ॥ यथा ॥ सनायया ॥ १ ॥ सिंहासनाययादुका ॥ अथ ॥ अनं ॥ १ ॥ यथा
संज्ञितदिवस्ववन्दुःखयः ॥ १ ॥ नकवकुंतिन ॥ १ ॥ उगावदम ॥ अनि ॥ १ ॥ उमरयनमुदा ॥ १ ॥ वक्रमदु

[illegible]

कानकी कमनाय श्रीमूला कान देवा चर्न समा फं ॥ ॥ अथ कय कुम्भ त्रियूगर्न ॥ गित हन मय ॥ गुरु
नमस्तुत अदय लुमना ॥ न्यास ॥ त्रैलोक्य सुमरुट ॥ कलसि धनी ॥ जौं कनिष्क यनमः ॥ जौं जना मि काय
हा ॥ दूँ मध्याय वाषट् ॥ जौं न्याय दूँ ॥ जौं अंगुष्ठा यव षट् ॥ जौं जम्बा यरुट् ॥ नमस्तु लज्जनी न्यासा
जल पाण्डू ज्ञा ॥ गमय गि ॥ उग्र वल्लुभा ॥ अर्ध पाण्डू ज्ञा ॥ जल मयूना ॥ सर्व हानि जवा रुना ॥ त्रिदश आसन पूर
न वलि ॥ सप्त मरुटा ॥ हं सासन द्या दि ॥ ६ ॥ त्रैलोक्य जौं असिना ॥ तेन वाय पाद का पूजयामि ॥ जौं त्रु तेन वाय
जौं वल्लु तेन वाय ॥ जौं आध तेन वाय ॥ जौं उन्मत्त तेन वाय ॥ जौं कया लिस तेन वाय ॥ जौं हीमल तेन वाय ॥ जौं स
सान तेन वाय ॥ पाद का पूजयामि ॥ वलि ॥ त्रैलोक्य श्रीरुद्र वल्लु दवी पाद का पूजयामि ॥ श्री प्रवल्गु दवी ॥ श्री वल्लु
प्रदवि ॥ श्री वल्लु दवि ॥ श्री वल्लु नायिका दवी ॥ श्री वल्लु दवी ॥ श्री वल्लु वल्ले दवी ॥ श्री वल्लु नूया दवि ॥ श्री अतिव

[illegible]

४ हाटकैवम् ॥

४ हाटक करे नव ॥

आवाहन ॥ त्रिदिव्य सन पूजावर्ति ॥ मलान उत गत ग्वल जासी ॥ धवर मूडा ॥ हंतासन त्यादि ॥ ६ ॥ त्रैकांश
सिता ॥ शूनवायया ॥ नूरुने ॥ वल्लुने ॥ काधले ॥ उन्मकले ॥ कपालिस्ते ॥ हीषले ॥ सीरुनले ॥ वलि ॥
जासु उकाशेन वाययाद्रुकायुज्यामि ॥ त्रिपुत्रान्क करेन ॥ अग्निवतालेने ॥ अग्निगिजाहेने ॥ कालाकरेन
॥ कनालिनहेने ॥ नुकयाकरेने ॥ हीमनूयहेने ॥ हाटक करेने ॥ जांगमलेने वाययाद्रुकायुज्यामि ॥ वलि ॥
अधमगकथेयादि ॥ ७ ॥ त्रैयगासनाययाद्रुका ॥ नृधामान ॥ त्रैय महाधतासमा नूरुनेका कषूसुरास ॥ का
युतिलावनसा वरुनाहुमिभारहा ॥ विभुभक्तुलसक्त ॥ महाकायमहादनी ॥ व्यापुयमयनिधन ॥ गजवर्मा
लनीयका ॥ निलसयाकुलकार ॥ नोपनोदिविद्विषी ॥ भवदुष्टकथाणादि ॥ चिन्त्रवद्धा ॥ सुसुक्त ॥ ३ ॥ विघ्नका
ठिमहातर्ज ॥ कवन्धसारा ॥ वितीवक्राविष्णुसूत्रनुतानासिनसाद्य कपाद्रुका ॥ ४ ॥ निवासवरुकरा ॥ गट लूक

[illegible]

कुमुदा॥वीन्द्रय॥॥॥
गुनमस्ताना॥ने॥अव॥म॥ला॥कार॥या॥दि॥य॥प्रा॥स॥ना॥कू॥म॥स॥ना॥म॥रु॥ह॥ले॥अ॥म॥य॥रु॥ह॥ने॥दू॥व॥डा॥
प॥ज॥न॥स्वा॥हा॥ने॥व॥ल॥म॥कू॥ल॥कू॥ल॥म॥व॥ले॥जा॥दू॥रु॥ह॥स्वा॥हा॥न्या॥मा॥ने॥म॥रु॥ह॥ले॥अ॥म॥य॥रु॥ह॥ॐ॥जा॥
ना॥ग॥य॥द॥क॥नि॥क॥स्य॥न॥म॥ॐ॥उ॥ग॥वा॥ल॥अ॥ना॥मि॥का॥य॥स्वा॥हा॥नि॥य॥म॥द॥नि॥म॥मा॥य॥वा॥ष॥दू॥दू॥रु॥ह॥
मा॥न॥क॥र॥क॥न्या॥य॥हूँ॥ॐ॥मि॥शि॥स॥अ॥रु॥ह॥ले॥अ॥म॥य॥रु॥ह॥ॐ॥जा॥ना॥ग॥य॥द॥क॥नि॥क॥स्य॥न॥म॥ॐ॥
म॥ॐ॥उ॥ग॥वा॥ल॥सि॥न॥स्वा॥हा॥नि॥य॥म॥द॥नि॥मि॥शि॥वा॥य॥वा॥ष॥दू॥दू॥रु॥ह॥स॥दा॥न॥क॥र॥क॥या॥य॥दू॥ॐ॥मि॥शि॥
स॥न॥क॥र॥क॥या॥य॥वा॥ष॥दू॥म॥रु॥ह॥ले॥अ॥म॥य॥रु॥ह॥ॐ॥ल॥या॥प॥य॥ज॥ग॥म॥य॥जि॥ॐ॥उ॥ग॥वा॥ल॥य॥वि॥श्र॥ह॥इ॥ग॥म॥द॥
धी॥म॥ह॥ग॥ना॥वा॥ल॥य॥वा॥द॥या॥त॥अ॥य॥पा॥य॥ज॥ॐ॥धो॥नि॥का॥म॥रु॥ह॥मू॥दि॥अ॥म॥य॥ज॥अ॥वा॥ह॥ना॥स॥व॥र॥

न॥ गिदव्जसत पूजा वलिं॥ स्वसुमूडा॥ अक्षरमकथयति॥ ७॥ महिषसनाययाइका॥ सिंहासना॥ मृता
सन॥ निभुतासनाययाइका॥ अथ॥ अर्चनं॥ त्रैलोक्यं॥ गयवामीकरावर्तुनानायधायसाहिता॥ दिव्यवस्तुयनी
क्षनामिहिसनममिनी॥ १॥ किरीटिकुललाकारकयूनेमलिनूयूनेनलमालाविविधेभूरासमालाव
विभो॥ अक्षरमभुजाकाकापीनरुसुनारुडा॥ सर्वालक्ष्मिसंयुक्तागडिकादिसमष्टा॥ ३॥ स्वर्गभनसुध
वकुंजकाकुमधनाभुता॥ वनदंतमनरुसुमूलयाणसु॥ मरिगा॥ ४॥ दक्षिणनकराप्रगायधम॥ मरगाय
यनीरुठकाधनरुसावगदाय॥ सुसाहिता॥ ५॥ यागभुजाकनीदसाखट्टाकमयाभकी॥ विन्दुमूडागथासी
धु॥ सिंहासनयत्रिहिता॥ ६॥ अथ॥ कित्वासिनकिंनमहिष॥ महासूनीगडु॥ वानिभूनादेसुमहावलयनाक्रम
॥ १॥ हृदयत्वागिभूलनविधासासूनीरुडा॥ २॥ वं॥ त्वामहादेवीसर्वकामरुलपुद॥ ७॥ ॥ मखाधामगुरु

स्वावस्वदाङ्गमन्त्रविना। त्रुडबलु। युवबलु। श्रुवा। लुगु। वलुनामिका॥२॥ वलु। यलु। वलु। वि। श्रुव। वलु। नूया। वि। वि।
का। नावना। ए। न। क। वृ। न। ला। मु। क। धूमिका॥ पी। ग। श्र। या। लु। न। ह। या। ज्वा। ली। रु। स्का। स्का। रु। नि। स्कि। ता। स्वयनिवम।
समायका। अयंगि। नि। ह। म। लु। लो। धूमि। धी। मी। त्रुं। न। म। म। डी। व। लु। वा। ग्र। य। ने। म। म। डी। या। ७॥ वलि४॥ गुं। ग। लि। त्रुं।
उं। डी। ना। क। पु। द। डुं। उ। ग। व। लु। नि। य। म। द्नी। दूँ। हँ। सदा। न। क। र। स्वा। मि। शिं। स। म। स्य। रु। न। पा। इ। का। पू। क। या। मि। दस्य।
दि। वलिं। ग्र। म। य। गि। वा। लु। ग। वलुं। नि। य। डी। त्रुं। न। म। लुं। वलुं। ला। य। व। ज। रु। स्का। य। स्य। ना। वि। या। य। या। इ। की। पू। क। या।
मि। म। नूँ। त्रुं। ज्वा। न्य। म। कि। रु। स्का। य। न। का। वि। य। न। य। य। ७॥ म। नूँ। मं। य। मा। य। द। लु। रु। स्का। य। य। ना। वि। या। य। य। ७॥
म। नूँ। वलुं। कूँ। ने। ज। स्या। य। स्व। कू। रु। स्का। य। ना। क। सा। वि। य। न। य। य। ७॥ म। नूँ। वलुं। व। नूँ। म। य। या। म। रु। स्का। य। ज। ला। वि। य। न।
य। य। ७॥ म। नूँ। य। व। य। य। व। कू। रु। स्का। य। य। व। ना। वि। य। न। य। य। ७॥ म। नूँ। सूँ। व। नूँ। म। य। ग। दा। रु। स्का। य। य। ना। वि। य। न।

४ गरुडासदृशस्थानागजामनुजाद्येव

सिद्धिलक्ष्मीदेवावनी॥ॐ भिवानिष्ठुत्थानमः॥ नै० १॥ र्वे० जौं अल्लगत्ताय स्वाहा॥ र्वे० डी विद्यातत्ताय स्वाहा॥
 र्वे० डूँ भिवगत्ताय स्वाहा॥ ॐ गिअवमन॥ नै० १॥ अखलुमलाकारनगुन्नमस्तु नै० ॥ डी० श्री अर्चयाता सनाय
 यादका॥ डी० श्री आत्मा सनाय यादका॥ र्वे० सकल मध्यम धनि अस्त्राय रुद्र॥ र्वे० उँ दूँ रुद्र वज्र यज्ञ न दूँ
 रुद्र स्वाहा॥ र्वे० बलमकुल कुलमवलक्षी दूँ रुद्र स्वाहा॥ न्याम॥ र्वे० सकल मध्यम धनि अस्त्राय रुद्र॥ ५॥ क
 नखधन॥ र्वे० यनमहं सिनी अरुण व्ययनमः॥ र्वे० निर्दिष्टा मातृ देवी तर्क व्या स्वाहा॥ र्वे० दिवभायुवप्र मनिमव
 माय वाषट्॥ र्वे० सकल इति ता रिष्के दल निजना मित्राय दूँ॥ र्वे० सर्वपिता महा धित गतिक निष्ठा काय वषट्
 ॥ र्वे० सकल मध्यम धनि अस्त्राय रुद्र॥ ॐ गिक न न्यासा॥ र्वे० नमः सर्व सिद्धिया गिनी लाडु वक्र नाथ यादका॥
 र्वे० नमः सर्व सिद्धि माए सा पूष वक्र नाथ यादका॥ र्वे० नमो निष्पादिता नन्दन नदी गाथ दक्षिण वक्र नाथ यादका॥

ॐ स्वकलकलस्वकनाथयिकाये डहनवकुनाथयाइकी ॥ ॐ हगवलेयलुकाया लिन्धेयधिमवकुनाथया
इकी ॥ ॐ नमः सवसिद्धियागिनी लाडु वकुनाथयाइकी ॥ ॐ विष्णुं न्यासा ॥ ॐ यनमहं सिनिसवहुता नद
यायनमः ॥ ॐ निर्वाणमाम्मदेवी भिरसस्त्रहा ॥ ॐ विष्णुमायवय मनिगुनादिवाधनिखायेवोरुदा ॥ ॐ स्वकल
इतिता निष्कृष्टमदलनिस्त्रातुकववायइकी ॥ ॐ सवधेयदाभाषितानि अत्रफमकायनगुतायवषटा ॥
ॐ स्वकलमकुषमधनिजुम्मायइकी ॥ ॐ निजुम्मायइकी ॥ तं हूमय ॥ ॐ हृदय ॥ ॐ नाहो ॥ ॐ तिदहन्यास ॥ ॐ मू
खा ॥ ॐ जीवामनामपूठा ॥ ॐ दक्षिणमपूठा ॥ ॐ वामनगु ॥ ॐ दक्षिणनगु ॥ ॐ वामक ॥ ॐ दक्षिणक ॥
नं लि ॥ ॐ मू ॥ ॐ मू ॥ ॐ निमूलन्यासा ॥ ॥ गलपाणयूजा ॥ ॐ श्री गलपाणसनययाइकी ॥ ॐ गलपाणएद
निकाययाइकी ॥ ॐ हृदयायनमः ॥ अवसुनादि ॥ ॐ नमः ॥ अत्मादिसवडेयथा ॥ ॐ क ॥ गम्य

ॐ श्रीसिद्धिलक्ष्मीविग्रहनववर्षीकथासहस्रनालक्ष्मीष्टुवाक्याम् ॥ अथ यणपूजा ॥ ॐ श्रीअथ यण
 सनायया ॥ ॐ श्रीम्यं ॥ आनन्दहेतवायवाषट् ॥ ॐ श्रीशुद्धं ॥ सः सः सः यनादवी अमृतवमश्वासा ॥ स
 असा ॥ नवाक्षी ॥ पूषागिलि ॥ शुद्धदयायनमः ॥ आवाहनादि ॥ यागिमडा ॥ यक्षप्रलवनतूतगुद्धि
 ॥ शुद्धं आत्मनन्दननमः ॥ शुद्धं अकृतांनमः ॥ शुद्धं सिद्धीनमः ॥ शुद्धं सर्वजनमाहनीनमः ॥ पूषा ॥ ॐ श्रीशुद्धं ॥ ॐ श्रीशुद्धं ॥ ॐ श्रीशुद्धं
 नमः ॥ अलिनीकिङ्कया ॥ शुद्धं सकलग्रहमथनिअमुयस्सु ॥ ॥ अवाहना ॥ ॐ श्रीशुद्धं ॥ यासायनापनायवी
 यगस्कादवतूपिनी ॥ सतसाकगासा ॥ म्यामायान् ॥ ॐ रुमलुला ॥ ॐ अवाहिश्वगुअवाहयता ॥ शुद्धं नमः
 नायया ॥ शुद्धं मयूनासनायया ॥ शुद्धं मयूनासनायया ॥ शुद्धं धूम्रपुस्तनदीपदम्कीदवीमहाधमककेण
 यालायपादुकापूजयामि ॥ शुद्धं ॐ श्रीशुद्धं ॥ कूलयूतवदूकनाथयया ॥ शुद्धं गंगीगंग ॥ ॐ श्रीशुद्धं ॥ कूलग ॥ ॐ श्रीशुद्धं

[illegible]

[illegible]

ॐ यं रुं वं रुं मं ३ न्या णा द वी क या ली ण रुं न व स हि ना य या ३ ॥ ३

ॐ अं अ० ४ वक्राय नमः ॥ देवी अस्मिन् हेनवसहिताय या इकायूजयामि ॥ श्रुं करवगद्यठ माह गवती देवी न
 न हेनवसहिताय या ॥ श्रुं हं हं हं हं ॐ कोमाती देवी व ॥ हेनवसहिताय या इका ॥ श्रुं हं हं हं हं ॐ
 पूवी देवी आ ॥ हेनवसहिताय या ॥ श्रुं तं थं दं धं नं वा ॥ नाही देवी ठ नमरु हेनवसहिताय या ॥ श्रुं य न ल व
 म ॥ अ देवी वि व ॥ हेनवसहिताय या ॥ श्रुं मं घं सं हं महा लक्ष्मी देवी हं न हेनवसहिताय या इकायूजयामि
 मि ॥ बलि ॥ ॥ गिवादि दाम गदल ॥ गनानां पूजयता ॥ श्रुं गिवा देवी अस्मा या इकायूजयामि ॥ श्रुं ह गवती दे
 वी अस्मा ॥ श्रुं माया देवी अस्मा ॥ श्रुं रुडा देवी अस्मा ॥ श्रुं किनि किनि देवी अस्मा ॥ श्रुं यम जिह्वा देवी अस्मा ॥ श्रुं
 वक्र कर्षणी देवी अस्मा ॥ श्रुं घा ॥ अदनी देवी अस्मा ॥ श्रुं वात मागा देवी अस्मा ॥ श्रुं किनी नी देवि अस्मा ॥ श्रुं
 का किनी देवी अस्मा या इकायूजयामि बलि ॥ ॥ बड्जा किनी बड्का ॥ अयूजदि ॥ गनानां पूजयता ॥

३ शुं विमलादवीश्रुम्भा॥

धारा ४

[illegible]

ॐ श्रीं ह्रीं सर्वयोगिनीयः ४ सर्वयोगी १० यः ४ सर्वकृपयालयद्वन्द्वः २ ह्रस्वात् ॥ ॥ अथ गीतवलिः ॥
 ह्रीं भिवाहगवतीये मायाहडात् ॥ येवव । किं किं विमलीयेव । यमकिङ्कावककवली ॥
 यः ६७ दरीवातमागः किं नीकाकिनीगथा । सर्वविद्यविनासाय सर्वगच्छनिवातः ॥ सर्वलक्ष्मीयम
 निर्यं सर्वसायनिपूतगं ॥ यथादगमलायकथासिद्धिलक्ष्मीयावलिगट्ट २ ह्रस्वात् ॥ यनिकसनवाक
 नीनप्रागलिंगानि ॥ लिखलासमानकगानि ॥ ॥ मूलसंज्ञा ॥ निगान ॥ निवर्त्तननद्यायावलिद्वन्द्वः
 वाकमहावलिनवनकी ॥ अथ वाकमहावलिः ॥ ॐ कौं कौं कौं ४ कृपयालायद्वलिगट्ट २ ह्रस्वात् ॥
 ॐ कौं कूलयूवद्वकनाथयवलिगट्ट २ ह्रस्वात् ॥ ॐ गौं गौं गौं ४ गौं कूलगलग ६७ १४ नायवलिगट्ट २
 ह्रस्वात् ॥ ॐ महाकनवीनममनाधियतयवलिगट्ट २ ह्रस्वात् ॥ ॐ सिद्धिवामः ६७ १४ वली

ॐ स्वाहा ॥ आकाशमयानि ॥ स्वर्गस्थानि ॥ ॐ स्वाहा ॥ सर्वथा रूपाणि ॥ भवन्त्य ॥ सर्व
ॐ स्वर्गस्थानि ॥ ॐ स्वाहा ॥ ॥ ॐ गिरिजाकामतावलि ॥ ॥ ॐ नारायण ॥ यानि गुणमय ॥
भूय ॥ दिव्यगन्धसमायुक्त ॥ सर्वदेवप्रिया रूपा ॥ अद्भुत ॥ सर्वदेवानां धूपार्थं प्रतिगच्छतां
॥ धूपास्तत्र पूर्य गवन्विश्वरूपमहेश्वरा धूपनाननदवगृहीयतां पितृभ्यः ॥ दीय ॥ स्व
यकाशमसागर ॥ सर्वगुणमिनायक ॥ सर्वकायकर्तृ ॥ श्री ॥ दीर्घाय ॥ प्रतिगच्छतां ॥ ॥ नैव ॥
जन्तुमसानसं दिव्यं तमे ॥ षड्गुण ॥ समन्वितं ॥ मयानिवदीर्घं रूपा ॥ यत्र मन्थनी ॥ नैव ॥
श्रुतं दिवतु किं भज्यते ॥ अथ नृप ॥ अथ नृप ॥ अथ नृप ॥ अथ नृप ॥ अथ नृप ॥ अथ नृप ॥
वशादिर्लोकप्रसिद्धिर्न मुहुर्दन्ते वनम ॥ ॥ गय ॥ लाहागन ॥ प्रिदवया ॥ मालानन्दवसकनसंनि

[illegible]

[illegible]

[illegible]

नानाकृष्णधेववायुमानसंरूपाय भुवःपदमुवाच ॥ न कर्तुं सर्वकारं न दमनं न वनमा
मुता ॥ सुप्रसिद्धा वनदा एवमुक्ता ॥ ॥ अमुं विस्मयं न ॥ त्रैलोक्ये विदुषां कदापि न ॥ अमुं यत्
यु ॥ ॥ नित्यविग्रहकयूजाविधि ॥ ककुनी ॥ कपूना ॥ ककुमा ॥ अखल ॥ नका वन्दना ॥ न नयवि
कसिधितं ॥ ॥ कंकिलिवहीलंगदवता ॥ कंकय कलकूय ॥ मूलनकिना ॥ अखायिनाय ॥
गर्जलं रुर ॥ लाहाद्यात ॥ यकनात ॥ वलिलाहा ॥ यदखा ॥ लाहाता ॥ कसिका ॥ इमा
श्यापिवर्धनं ॥ ॥ १० धृतं यथा ॥ गहनं न तल यविग्राहाह ॥ सुखमनुदवाचन
कमन ॥ ॥ अथवा नाह कल्यादि ॥ वाक् ॥ त्रैलोक्ये कलासूया ॥ मय्यस्य कला न ॥ न न विग्रहं ॥ यदुपि
॥ इमायकां शान्ति ॥ सिद्धिर्गती ॥ अमन्ति तानि कोलीसं कोलीसं सह रेनवी गङ्गां नदवदवगमा

भूपयविग्रकं ॥ वद्रकृष्णसमप्रकं मयकृष्णसमवितं । नवधाउगसिद्धा ॥ छद्वाद्या ॥ समीगति ॥ अ
मन्त्रितामयाहकुं गन्धयाग्रयविग्रका विद्यापीठनमन्त्रासिद्धिथवेकदनीगला ॥ अमन्त्रितामया
सर्वविग्रदायनागनात् ॥ श्रीकोलीसनाथश्रीकृष्णकार्यापादकापूरयामि ॥ ॥ श्रीगलयाण
म्यं अद्ययाग ॥ ॥ यंश्वलि ॥ कंकिनीन ॥ मयूनाहायपादका ॥ नै ॥ ग्राङ्गीकृत्तु लयप्रवद्र
कुं कनाथययविग्रकपादकामि ॥ ॥ नर्वसष्ट ॥ ननासन ॥ नै ॥ श्रीपद्मनदीयेदहकीदवी
महाश्वकृष्णयालाययवि ॥ ॥ सिंहासना ॥ नै ॥ यंयागिनीयायवि ॥ यकवित्प्रादि ॥ ॥ युगासना ॥ नै ॥
श्रीग्रासिद्धिबाम ॥ लु ॥ शनीयवि ॥ ॥ मूसासना ॥ नै ॥ गं गं गूं ग ॥ गूं कूलग ॥ ल ॥ शनाययविग्रकया
दृ ॥ कां ॥ ॥ अवाहनादि ॥ दलु ॥ तक्रवीयानि विन्दु गङ्गा मूडा ॥ ॥ त्रिदवा ॥ ननासना ॥ इकाता ॥ अ ॥

[illegible]

[illegible]

ॐ उड्डु मित्रा मालायिया ॥ ॐ निवले पूरु मित्रा मालायिया ॥ ॐ प्रणिष्पयेदकि ॥ ॐ मत्रा माला ॥
ॐ विद्याये उरु मित्रा मालायिया ॥ ॐ मन्त्रेय मित्रा मालायिया ॥ ॐ वाम भुये प्रितीय नययास्वा
॥ ॐ प्रियद भन्त्रे नययास्वा ॥ ॐ ना नाय लोक भुये ययास्वा ॥ ॐ माह नय दकि ॥ ॐ क भुये व ॥ ॐ ३ ॥
ॐ उड्डु यै वाम क भुये व ॥ ॐ गुड्डु म क ना साय दयया ॥ ॐ वजि नय व क यास्वा ॥ ॐ क क
नय दययास्वा ॥ ॐ कालिका ये उड्डु म नय क या ॥ ॐ मिवाये भू भद म नय क या ॥ ॐ
धाषाये उड्डु क यास्वा ॥ ॐ दी नाये भू भद यास्वा ॥ ॐ माय दय क यायायास्वा ॥ ॐ वा ग
ये वा वायायास्वा ॥ ॐ निविवादि नय क ॥ ॐ ६ यास्वा ॥ ॐ हीष भद कि ॥ ॐ वासु निरवता ॥ ॐ वायु वग
ये वाम वासु निरवता ॥ ॐ लामाय दकि ॥ ॐ वासु द ॥ ॐ ६ या ॥ ॐ विनाय क वाम वासु द ॥ ॐ पूरु मित्राये क न

गलद्वयया॥संमद्वनि॥धेदकि॥सहस्रकनाहुलीषयाइका॥ॐ॥कद्वनि॥वामसहस्रकनाहुलीषयाइ
का॥गं॥दीपिनि॥भूलदनुदकि॥सहस्रया॥गं॥नयन्ये॥गि॥भूला॥गुदकि॥सहस्रयाइका॥ॐ॥कयालिनेक
यालमहस्रयाइका॥यं॥यावने॥द्वदिम॥धयाइका॥हं॥अधिकाये॥या॥भ॥भ॥त्रयाइका॥सं॥सं॥वा॥त्मन
दकि॥भया॥धयाइका॥ॐ॥ॐ॥ॐ॥ॐ॥वामया॥धया॥ॐ॥का॥ग॥ल्ये॥दकि॥भ॥स॥नयाइका॥लं॥प्र॥ग॥ना
ये॥वाम॥स॥नयाइका॥ॐ॥ॐ॥मा॥धे॥य॥य॥द्व॥य॥याइका॥यं॥ल॥मि॥द॥य॥उ॥द॥न॥याइका॥ॐ॥ॐ॥सं॥ह॥नि॥धे
ना॥दि॥म॥ध॥या॥ॐ॥म॥हा॥का॥ल्ये॥नि॥त॥म॥याइका॥मं॥क॥स॥मा॥यू॥ध॥ये॥गु॥अ॥याइ॥ॐ॥गु॥का॥द॥व॥भु॥क॥या
इका॥गं॥गा॥रा॥द॥य॥उ॥द॥न॥याइका॥ॐ॥ॐ॥न्ये॥दकि॥भ॥ज्ञा॥न॥याइका॥ने॥क्रि॥या॥ये॥वाम॥ज्ञा॥न॥याइका॥
ॐ॥ॐ॥म॥य॥ये॥दकि॥भ॥ज्ञा॥या॥या॥ॐ॥ॐ॥वि॥ये॥वाम॥ज्ञा॥या॥या॥ॐ॥ॐ॥द॥ह॥न्ये॥दकि॥भ॥या॥द॥याइका॥ॐ॥

[illegible]

[illegible]

धनुः ४ यादुका ॥ त्रैलोक्यकृत्त्रिनिशुं त्रेलाकाकवर्तिजों कामाक्ष्यावर्तिहोत्री महाकाएकात्रीलि
त्रैलोक्य ४ यादुका ॥ त्रैलोक्यकृत्त्रिनिशुं कृत्त्रियेजों जों जूं धात्रजुधात्रजुधात्रामरवीं हों हों किंलि
विश्वयादुका ॥ त्रैलोक्यकृत्त्रिनिशुं कृत्त्रिकार्ये हों हों हों हों नमजुधात्रामरवीं हों हों विनिश्वि
श्वयादुका ॥ त्रैलोक्यकृत्त्रिनिशुं कृत्त्रिकार्ये हों हों हों हों हों नमजुधात्रामरवीं हों हों विनिश्वि
विनिश्वि २ वी श्वयादुका ॥ ॥ वनिश्वि १ यादुका ॥ त्रैलोक्यकृत्त्रिनिशुं कृत्त्रिकार्ये हों हों हों हों हों नमजुधात्रामरवीं हों हों विनिश्वि
का ॥ त्रैलोक्यकृत्त्रिनिशुं कृत्त्रिकार्ये हों हों हों हों हों नमजुधात्रामरवीं हों हों विनिश्वि
वकाययादुका ॥ त्रैलोक्यकृत्त्रिनिशुं कृत्त्रिकार्ये हों हों हों हों हों नमजुधात्रामरवीं हों हों विनिश्वि
नानिकायें जों प्रायश्चित्तवकाययादुका ॥ त्रैलोक्यकृत्त्रिनिशुं कृत्त्रिकार्ये हों हों हों हों हों नमजुधात्रामरवीं हों हों विनिश्वि

[illegible]

ॐ ४८ अथ विष्णुने वाये ००८५। लुकि नि किलाये नरुके वाय वाये कुविकाये नरुके नवपा
इका ॥ ॐ १ यवार्ज ४८५॥ त्रिका मुके ओ वाये कालनाथो द्विधिकार्य को वये कुविकाये नरुके
नवपाइका ॥ ॐ १ मवार्ज ४८५॥ दयार्ज दी का ८४४॥ ज्ञाय महालक्ष्मी ही वा ०० के वये ००१॥ मये कुवि
कार्य अं करे नवपाइका ॥ ॥ ॐ १॥ प्र अकूलाये आदिमानन्द देवपाइका ॥ ॐ १॥ श्रीकूलाये अनन्दि
मानन्द देवपाइका ॥ ॐ १॥ श्रीवाये अन्तिमानन्द देवपाइका ॥ ॐ १॥ श्रीमिणये अवतानानन्द देवपा
इका ॥ ॐ १॥ श्रीकोकिलये अहानन्द देवपाइका ॥ ॥ ॐ १॥ श्रीयवनदीयवलादवी श्रीमहादेव
कणयास्त्र ॥ ॐ १॥ श्रीकायराग श्रीअठियानमहामूढायी ॥ ० श्रीअठियाम्बादविश्रुतिमनाथ देव
श्रीनकाम्बादवी श्रीअक्षरीमानन्द देव श्रीकुकानीमहानात्रिका वक्राश्रकदम्बरकृष्णदन्त

श्रीगिरियवर्गश्रावदूकनाथकण्ठपालपिण्डश्राकृद्विकानन्ददेवपाइका॥ॐ॥श्रीश्रावदूद्वीप
मनाम्बादेवीश्रासूगन्धीश्रीकण्ठपाल॥श्रीश्रागणाय॥गश्रीशालंधरमहायी॥ॐ॥श्रीशालीमनाथ
देवश्रीकनालाम्बादेवीश्राकृद्वीमनन्ददेवश्राकृकात्रीमहत्कारिकावक्त्रश्रीकीरवक्त्र
दिमगिरियवर्गश्रायमदलकण्ठपालयदश्राकृद्विकानन्ददेवपाइका॥ॐ॥श्रीश्रीमनद्वीप
कलनीदेवीश्रागणपालकण्ठपालश्रीश्रायूगणिसिमहामुडायी॥ॐ॥श्रायूगुम्बादेवीश्रायूगुम्बा
मनाथदेवश्रावदूकनाम्बादेवीश्रावकीमनन्ददेवश्राकृकात्रिमहत्कारिकावक्त्रश्रीविजि
वक्त्रश्राअनलगिरियवर्गश्रीविमलकण्ठपालदूयश्राकृद्विकानन्ददेवपाइका॥ॐ॥श्री
श्रीनलदीपमादेवीश्रीमहाकायकण्ठपालश्रीश्राकलियूगश्रीकामदूयमहामुडायी॥

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥ धृति ॥ यमसन ॥ मूला ॥ नूतनवल्गु माण्डवल्गु मल्लवल्गु प्राणिवल्गु अष्टानिय
यविणकपाइका ॥ वलि ॥ विद्वन्मूला ॥ मूला ॥ ॥ प्रायश्चित्तनूतननाइकाता ॥ १ ॥ ॐ गुणिरुं ॥
॥ वषासन ॥ सिंहासन ॥ मनु भद्रनामि ॥ ॐ नमो श्री कल्ललाठपाइका ॥ ॐ अननमल्लवके
पाइका ॥ ॐ सुखी भद्रकि भनयपाइका ॥ ॐ त्रिमूर्ति वामनयपाइका ॥ ॐ जमनी भद्रकि भनय
पाइका ॥ ॐ जया भवामकल्लपाइका ॥ ॐ मिथ्या सदकना सायठपाइका ॥ ॐ एतद्गुणिवामनासा
यठपा ॥ ॐ सुनूदकि भनयपाइका ॥ ॐ इन्द्रवामनयपाइका ॥ ॐ अष्टाभयभनयकोपा
ॐ इन्द्रा भद्रकि भनयकोपा ॥ ॐ सदाशाग अष्टपाइका ॥ ॐ अनूगती भद्रकि भनयपाइका ॥ ॐ
कुत्रभागा लुमाधपाइका ॥ ॐ ४ मसासनकि कार्यापाइका ॥ ॐ काधकि भनयपाइका ॥ ॐ वल्गु

दकि० वाहुद० याइ० गं पुव० दकि० हस्तमनिर्व० धयाइका॥ हं मिवदकि० हस्तयाइका॥
॥ हं एकत्रुददकि० हस्तकना कुलीषयाइका॥ वं कू मवामस्त० धयाइका॥ हं एकनगवाम
वाहुद० याइका॥ गं वठमू खवामहस्तमनिर्व० धयाइका॥ मं जूजमवामहस्तयाइका॥ अं
सममवामहस्तकना कुलीषयाइका॥ टं सामभनदकि० हि श्रयाइका॥ ०ं ला झली भदकि०
नूयागया॥ उं दानूकदकि० नूयानूयाइ॥ हं जूठ नानू भदकि० नूयानूयाइ॥ लं उमाकानूदकि०
दया॥ गं आषाढी गवामहि श्रयाइ॥ थं दि० वामानूवातयाइका॥ दं धाणी गवामजानूयाइका॥ धं मीन
वामनूयानूयाइका॥ नं मषवानूयादयाइका॥ यं लीहितादकि० धयाइका॥ हं मिखी गवाम
या० धयाइका॥ वं कू गल० यछवी० धयाइका॥ रं दिन० नाहिम० धयाइका॥ मं महाकालकदयम

इकी॥वलि॥मूडा॥ ॥अथ यथा॥वदूक॥ग॥ ॥महाकाला॥मिखा॥प्रतासन॥इस्रुतक॥ज॥१॥डुं
१०६॥इकी॥ता॥१॥ज॥१॥१०६॥ने॥१॥कुं॥कुं॥कुं॥मिखा॥हृद॥न॥महा॥हरे॥न॥वा॥य॥प॥वि॥ग॥क॥पा॥इ॥की॥वलि॥
ने॥१॥ने॥१॥कुं॥महा॥काला॥य॥सर्व॥म॥हृ॥य॥म॥द॥नी॥य॥महा॥हरे॥न॥वा॥य॥प॥वि॥ग॥क॥पा॥इ॥की॥वलि॥मूडा॥ ॥
उग्र॥व॥१॥१०६॥इकी॥१॥ज॥२॥१०६॥इस्रुतक॥१॥ज॥२॥१०६॥महिषासन॥सिंहासन॥ने॥१॥कुं॥कुं॥
ता॥१॥य॥द॥कुं॥उग्र॥व॥१॥१०६॥निय॥म॥द॥नी॥कुं॥हं॥सदा॥क॥र॥ता॥नी॥कुं॥सम॥सू॥ह॥न॥य॥वि॥ग॥क॥पा॥इ॥की॥वलि॥
या॥नि॥मूडा॥ ॥अगमल॥हं॥धन॥ ॥प्रा॥र॥सि॥धिल॥जी॥गु॥भन॥वा॥इकी॥१॥डुं॥१०॥॥गुं॥१॥२॥३॥॥डुं॥कुं॥प्रा॥
रू॥ड॥य॥ग॥सू॥या॥य॥प॥वि॥ग॥क॥पा॥इ॥की॥॥कुं॥कुं॥प्रा॥॥कुं॥नम॥४॥सर्व॥सि॥द्धि॥या॥गि॥नी॥शान॥म॥४॥सर्व॥सि॥द्धि॥मा॥ए॥ला॥
न॥मा॥नि॥खा॥दि॥गान॥न्दन॥न्दि॥गा॥य॥सकल॥कूल॥व॥क्र॥ना॥यि॥का॥य॥ए॥ग॥व॥ले॥स॥१॥का॥या॥लि॥भे॥त॥अ॥थ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

अक्षिवक्त्रकामगि जल ग्रामी गी सनाथमिके श्री कामध्वनी देवी श्री ब्रह्मात्मम कियविष्कया
 इकां ॥ जे कं सो कूं ॥ सूर्यवक्त्रकाल धनयी ॥ ० ३ ॥ गि सनाथमके श्री वक्त्रध्वनी श्री विष्णुत्मम किय
 यविष्कया इकां ॥ जे कं सो कूं ॥ सामवक्त्रकाल गिनी गङ्गा श्री वक्त्रध्वनी सनाथमके श्री राममा
 लिनी देवी श्री ब्रह्मात्मम कियविष्कया इकां ॥ जे कं सो कूं ॥ वक्त्रवक्त्र अजियानयी ॥ ० ४ ॥ यानि
 अत्मके श्री महाप्रिय नर नन्दनी देवी यन वक्त्रात्मम ॥ ५ ॥ कि सहि गाय यविष्कया इकां ॥
 वलि ४ ॥ अवाहनादि ॥ मडा ॥ विन्दु गय ॥ ॥ अमल ॥ ५ ॥ जे समसुमनुयी ॥ सिंहासनवी
 ॥ ० ५ ॥ ठिके आयक उ संदा हाय संदा हदि य सिद्धि समय ॥ ५ ॥ वक्त्रयविष्कया इकां ॥ वलि ४ ॥ ग
 ॥ वाकवा ॥ ॥ ५ ॥ नवाकनी नयलिक ॥ लिबला ॥ पूठ ॥ ॥ वाकवा ॥ ॥ ५ ॥ गि सके कि ॥

॥ अथ लवणलिवनमालका कथा ॥ ॥ श्रीमान्धनिमातृपूजा आयसक ॥ यत्रमान ॥ जडादि ॥ वा
क्र ॥ माक्र ॥ लुथा ॥ यादविमधू ॥ सिद्धि नस्तुत्यादि ॥ यतका वियावक्राय ॥ विधि ॥ ध्रूयूजा याय ॥ य
तिका क्वाय मुनिर्ता ॥ ॥ इधं सुवलि विय विधि ॥ ध्रूयूजा लयना ॥ निर्वालिन सुकल हि द्वाया ॥
वलिदको त्वा कमहा वलिन धून के ॥ धूप ॥ दीया न वेद्य ॥ जया ॥ स्मृता ॥ विविध याया ॥ ॥ त्रितिय
विश्वनाहल विधि ॥ ॥ अथ लिविधन ॥ हा सुख लिला काया ववलि विया ॥ गलंगलं प्रयाग ॥ नैऋत
अनय कृष्ण ॥ गृणानस्तुथेवव ॥ नुत मूर्ति श्रुत ल्का स्युतुमा ॥ नुमय सुदन ॥ समक ॥ क
काय ॥ ७ लाया देव दं कुक ॥ नेतावत ॥ अथास्तु ॥ अषधी नस्तुथयून ॥ अन्तक अर्थवा इध
कमल ॥ श्वनानन ॥ ॥ गम सुख ॥ लोवय ॥ ७ ला ॥ हलन ॥ धनुष ॥ धनक ॥ कृता ॥ ता ॥ कृता ॥ ला ॥ श्व ॥ स ॥ क

नाञ्चएट्ठमन॥ टङ्कयालिमुथवा न्य॥ १०॥ वन्धवजमन॥ टङ्कयालिमुथवा न्य॥ १०॥ वन्धवजमन॥ टङ्कयालिमुथवा न्य॥ १०॥
विनस्तथा॥ दन्तुनाधनद॥ वन्धवजमन॥ टङ्कयालिमुथवा न्य॥ १०॥ वन्धवजमन॥ टङ्कयालिमुथवा न्य॥ १०॥
न॥ यमनात्तानव॥ वन्धवजमन॥ टङ्कयालिमुथवा न्य॥ १०॥ वन्धवजमन॥ टङ्कयालिमुथवा न्य॥ १०॥
था॥ कयान्तकमुय॥ वन्धवजमन॥ टङ्कयालिमुथवा न्य॥ १०॥ वन्धवजमन॥ टङ्कयालिमुथवा न्य॥ १०॥
का॥ मयाव॥ विहीनामु॥ कयान्तकमुय॥ वन्धवजमन॥ टङ्कयालिमुथवा न्य॥ १०॥ वन्धवजमन॥ टङ्कयालिमुथवा न्य॥ १०॥
सालक्रीवनया॥ कालामुखाव॥ सत्सदा॥ कयान्तकमुय॥ वन्धवजमन॥ टङ्कयालिमुथवा न्य॥ १०॥ वन्धवजमन॥ टङ्कयालिमुथवा न्य॥ १०॥
हावा॥ सयमरव॥ कयान्तकमुय॥ वन्धवजमन॥ टङ्कयालिमुथवा न्य॥ १०॥ वन्धवजमन॥ टङ्कयालिमुथवा न्य॥ १०॥
हा॥ निधनमा॥ नरक॥ वन्धवजमन॥ टङ्कयालिमुथवा न्य॥ १०॥ वन्धवजमन॥ टङ्कयालिमुथवा न्य॥ १०॥

शानिमयकन॥८॥सुग॥८॥वकु॥८॥षष्ठिर्महावीर्या॥८॥पालयीत्वास्त्रिगतगत॥गुणक॥८॥सदाकालेव
लियुक्तानिवदयेत्॥वत्तानस्तुगुत्पालाद्विज्ञायागृह्णतवलि॥सुखगतत्रयकिवत्सावात्रिव
लिकारि॥८॥निष्ठाधिकानिवत्तान॥८॥कथादा॥८॥नरकना॥८॥वर्चन॥८॥पिङ्गक॥८॥मध्यपिङ्ग
पिङ्गलावना॥८॥दंष्ट्रकना॥८॥जुष्ट॥८॥कयाला॥८॥नर॥८॥कूला॥८॥काल्मीनवन्दुग्राव॥८॥
मालिमीनरुद्रुय॥८॥वृष्टि॥८॥सुस्थ॥८॥दीप॥८॥वृष्टि॥८॥सुल॥८॥राविनात्महिनाथ॥८॥
यूजायनाय॥८॥॥८॥वाय॥८॥गंगा॥८॥सुविताकामसदा॥८॥८॥८॥८॥अमकायजुवातन॥८॥
उपालकविलग्नानरुद्रुनिगुहालामुखगन्धयूष्यवलिपूजागृह्णतवन्वय
दुर्गमूर्तस्व॥८॥ल॥८॥८॥८॥महागमनाधियतयस्वाहा॥मन्त्र॥८॥ननसर्वविधिवद

लिपानतः॥ न इह हि क्व एव लुप्तं नायसं गम्य दिक्कैर्यं॥ निरुपममिति नागा सर्वेषां हस्तारं
 वत्॥ ॐ॥ यितान् लक्षणकासात्सं गमय सदा नय॥ ॥ इति पूजनादिप्रवृत्तिः॥ ॥ ॥
 ० क्व निर्वृत्तिर्यागी॥ नयाय विजयायैव नयन्ती वायनाजिगा॥ नन्दाहता नयारी मा कला
 धवा कस्तुथ॥ दिव्याग्निमहायाग्नि सिद्धिर्गिगा॥ ॥ ॥ ॥ सा किला कालनागी वडुर्द्धकैमा
 निम्नकरी॥ गम्ही नाद्यायली सुलायवनागी ठला मिका॥ तीषला वमहानन्दा कालामुद्वीगध्य
 वव॥ यिन्मयी हस्तिनी वेव गकली धूगढीतथा॥ विषरुकी सर्व सिद्धि मुक्तिं कृत्येववा॥
 दूकानी रास्वनी दीर्घा धूमा क्रीकलहयिया॥ मातङ्गी काकद्वीवगाथ गियनवान्तकी
 ॥ नाकसी धाननादाय नकांगि विम्व दूयिला॥ नयंकरी विरुकी वस्तुस्तु नानयान्तनी॥ वी

नरुडामहाकालीकक्षालीविक्रानना। आधलातीमरुडावयायूवगमत्यानना॥ वाङ्मीयवे
सूवीनाडीवद्विको॥ श्रीगतीतथा। वाताहीनानसिहीवमिवादूतीवषष्ठिका॥ ॐ दंद्यामहा
यामि वलिगुद्रनुमसदा॥ ॐ वदुषष्ठियागिनीयावलिगुद्र २ सर्वभक्तिद्वर २ ममसि
द्विकुर्वनुदू ३ रुद्र २ साहा॥ ॥ ॐ विवदुषष्ठियागिनीवलि४॥ ॥ पश्चिमवलिगुद्रमाश्रुता
॥ सर्वयी॥ ॥ निद्यानायदानमयव। कृणवकृणसंदाहा४ सर्वदिगुह संक्लिता४॥ यागिनी
यागवीनन्दा४ सर्वगुहसमागता४॥ ॐ दंद्यामहावकुंशाना॥ ॥ अवनदासम॥ यरुका४॥ भसन
दविगुद्रयादावनेनगा४॥ सर्वसिद्धिसादामदविगेषाहवत्सदा॥ वीना४॥ यागिनीना
यद्विषमिमहागला नद लुगवलिद्विसमयावानमलक॥ ॥ ॐ तिस्मृतिमन४॥ युक्तिमा

समदास्त्रिंशदस्त्रिंशदविंशति। निकनयनुद्ध्यनांथागिनीगलसंकुला॥ कूकूकादिक्ख
प्रातिद्विनिमित्तानुद्ध्यनांथागिनीगलसंकुला॥ ऊँकानादि
ष्यथपी० मय४ सा० ४ यकीर्ति० ४। अषधीपाठसन्दातादिभूविदिभूसूय॥ मदीया
तालवक्रा॥ सुवृत्तानान्नवषवायागिनीयागयकासासमया॥ तिष्ठनुसाधका॥
वीनकर्मसूवीनन्दा॥ सत्यतिष्ठनुदवता॥ सिद्धाभ्यपूजकावाय्या॥ साधका॥ किंतिभयिन
॥ नगत्रवाथग्रामवा॥ अद्वयाम्नासनिद्वय॥ वायी॥ कूपकवक्त्रवाभूभनसाहमभुल
नादूयधराभूपिवठकाविविधानिय॥ भवसुवृवसंगुष्ठावलिंगद्रानुसुवृग॥ भवभग
तायहंगमसुवृमहलक्षदी॥ यालक्ष्येनमयाकर्मयत्कनिष्ठाभियत्कर्ग॥ वलियूष्यपुदानन

सुखममविनाकाः। सर्वकर्मनिशिष्वनुसुवदोषाः। युग्मनुमा॥ भिवमक्रियसादन
शक्रकारनिमाम्महं॥ ॥ ॐ निसुमयवलिः॥ ॥ उत्तरमूलसंयीठियावलिः॥ अथमात्मा
मनु॥ मालामनुनवलिविथि॥ ॐ ह्रीं श्रीं ॐ नमः सर्वसिद्धियागिनीयानमः सर्वसिद्धिमा
हयानमः। निष्पादिगानन्दनन्दीगायसकलकूलवकुनायिकाथेणवस्थेसुकायालि
न्येगअथ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं नमः यत्रमहं सिनी निर्वालमाग्नदेवी विषमायुवय
समनिस्वकनद्रिगातिष्ठकृमदलनीसुवायदाभाषितानि सकलमप्रयमथनिश्च
यी आगच्छ २ हस २ वज्र २ ननरुषितावसाएकनीमममप्रमद २ स्वाहि २ णिभूलन
हिन्दि २ किन्दि २ स्वभुनताग्य २ केदय २ तावआवत्समसकलमनातथानुसाधय २ य

[illegible]

का ना वता न का ख्या पूरु नि यमि थ व पू न व न उ भ्रिया ॥ ७ ॥ य ध ना ॥ गाला ख्या ग मं
स्थ कुल पति न ग न का म दू य सू दू य उ क्ति ॥ ८ ॥ म द ह स य दू य उ द न व ला उ द ॥ ९ ॥ य द
॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ यदुदीरितमना यदुदीरितमना ॥
असमिगानि कोलीसं कोलीसं सुतुष्टेन वः ॥ यदुदीरितमना यदुदीरितमना ॥
शुभसमायुक्तं सुवक्तुं सार्वभौमं नवधातुमासं शुभं शुभं शुभं शुभं ॥
संतिगामया रुक्मं शुभं यद्यपि विष्णुः ॥ विश्वं यदीति नमस्तु ॥ शुभं शुभं शुभं शुभं ॥
संतिगामया सर्वं विष्णुं दाना गताम् ॥ शुभं कोलीसनाथं शुभं शुभं शुभं शुभं ॥

26
 12
 13-15
 1-2
 2-2
 50



॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

1.63.5

1871

Jan	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31
Feb	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	
Mar	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31
Apr	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	
May	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31
Jun	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31
Jul	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31
Aug	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31
Sep	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31
Oct	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31
Nov	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	
Dec	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31

गङ्गा गलक जपागत ल बा न क दान क लो ध वि ध ट य ड ह र्यं ध्या यित धर्म मू षु वी कू कू का म
नी ह ह ह ह ह सि गे श्व र्य नी यि व नी ल ह्य नी म नु मा गा किलि किलि त किलि ४ को ल रा धा
मि र नी ॥ सा शु धा का म नू या य न ल व य ट सा सा ह कू का न ना दा उ वि ष्य नी ल क ६ अ म न स ह
द या वि न्द्र मू द्वि य ग सा । ॐ ॐ ॐ का न य नी नू नू र धि न व ग्ध द वा श्र मा ना स न षा कि क्ता ग र्सा
ल य नी ल ल ल ल ल ल ता डा व य नी यि व नी ॥ क षा का मा षा दू ती अ म न गु ६ नू गा वि न्द्र ना म
क ली ना भ क्ति न सि धि दा मा य न म य द गा वा व द्धि ता न क्ता । प्रा ग लू ला क या ली ग स य व न य ता या
थि व ना नू य का ष ष वि न्द्र य का कू ल क म ल न गा ना न ६ कू ल ला र द्या ॥ वि द्या ता नू ड म कि
४ स व दि ग ड मि र्व री ष ६ ए ड का ली कौ कौ कू का म नू या अ कू ल कू ल गा दा धि ६ ए क य नी सा

[illegible]

सिद्धिं दहि ॥ हानं दहि ॥ आयु दहि ॥ धनं दहि ॥ धान्यं दहि ॥ लक्ष्मीं दहि ॥ ॐ मम हावलि ॥ ॐ
२ ॥ अमगावद्य स्वाहा ॥ ॐ मितावलि ॥ ॐ सनाय ॥ ॥ देव सक सक लहि ॥ ग्राह्य लिङ्गया ॥
निर्वालिङ्गया ॥ वलिदकसं हाकमहावलि न धूनक ॥ आवाहनादि ॥ या निमूडा ॥ तप्य ॥
धूया ॥ दिव्यं धसमायादि ॥ दीया ॥ भुयका स्वमहायादि ॥ नेवद्य ॥ नूनं महा न सत्यादि ॥ धव २
मनु ॥ ग्या ॥ स्था ॥ अस्व ॥ मनुलायादि ॥ सर्वका ना हाक लिहो ॥ महामाया ॥ यिज्ञा कीर्या ॥ ॐ अग्नि
॥ वक्रा ॥ मध्या ॥ एषा ॥ खड्ग ॥ मन्त्रा ॥ मानका ॥ वन्धूक ॥ काकास ॥ महाकार ॥ माकु ॥ लुया ॥ यदि
वीम ॥ डक ॥ लवि ॥ सिद्धिं यत्रा ॥ डका नूया ॥ ॥ यासुति काता हाक ॥ ॥ नेन्द्रसेवा ॥
माया कुलुलनि ॥ नमस्तु देव दयादि ॥ यागि सिधियादि ॥ स्वमसि यत्र मकीली ॥ नान्य ॥ यथावा

नखादि॥ अग्रगन्धदि॥ वाक्का॥ ॥ खनगुय॥ यन्मिसग्व॥ दुर्वधनीग्व॥ भिरवा महाकात्रव
॥ उग्रवल्गुग्व॥ उग्रवल्गुग्व॥ सिद्धिलक्ष्मीग्व॥ कालिग्व॥ ॥ अङ्गालयन॥ ॥ वाक्का
पूजा॥ कलमज्जदिनदवसकलं पूजा वालिसरु॥ ॥ असन पादार्थरुसाध्व्यन्दन
शयवीणक पूष्य॥ धूप॥ डीप॥ जून्तसंकल्य॥ हनम्वनाथ किनान्न॥ नवात्माप्रणिमासमाया
दवी उम्वधनी किनान्न॥ भिरवा महाकाल उग्रवल्गु उग्रवल्गु किनान्न॥ श्री ३ सिद्धिलक्ष्मी
कालिग्व॥ प्रियूनसून्दरी किनान्ननेवध्या॥ यज्ञध्वजाय हानहागगणगुणादि॥ नन्दीकभनञ्ज
नसंकल्य॥ दक्षि॥ सकनरिं॥ वावन॥ वावनलंखदलिसतय॥ समययाणदवसक
य॥ यज्ञमाननदलिजाठावमथा॥ वत सिन्धून पूष्य॥ अकसरु॥ समययाणझाय॥ वनूकीग

ज्ञानद्वीपादि ॥ उपाध्यायता, ज्ञानियकमान् याक ॥ धृतायादि ॥
कागिहस्वानं, ज्ञानावदि ॥ ॥ इधसधन ॥ ॥ पिधुयायलिधुयावर्गलं उलाद्वस ॥ नडाद्व
इलंठइस्वायिस्वास ॥ पिवनस्वाज्ञसयातास्वानकेकाययक्यकमान् ॥ सर्वका ॥ ॐ क्का ह्का
नि ॥ स्नामानका ॥ सिद्धिनम्मुयादि ॥ ॥ अं कुलिकास्यंताथ ॥ दकि ॥ काय ॥ समययं नवरा
यनविज्ञावकठं ॥ आसियां ॥ ॥ न्तियविष्ठा नानदिनविधिसमाया ॥ ॥ अर्नकाल
नयतिपयक ॥ ॥ मज्ञाथस्वाननथागयके ॥ ॥ मज्ञाताथक्रियकनाप्रियाता ॥ नाप्रिसविधि
ध्दीयया गयाय ॥ अस्व ॥ पु ॥ नटं ॥ ॥ मतावियमज्ञाताथ ॥ ॥ अथयस्यानरविधि ॥ ॥
संतियावलिज्ञाताठाव्यालियाठिध्दीगुलियाया ॥ यकमानं माल ॥ प्रितत्वनअयमर् ॥ सु

यार्थ ॥ ३ नूनमस्का न अरवउमलखादि ॥ यन्त्रिमन्यास ॥ कनयाग्रपूजा ॥ सूर्यपाणपूजा ॥ रु
गभुडी ॥ आत्मपूजा ॥ माननिय ॥ ५० ॥ यशुवलि ॥ सर्वकालादि ॥ त्रिदशपूजा आसनवलि
सुखमडा ॥ यन्त्रिमदगुत्रियाय ॥ कयडुं वन्त्रिदगुत्रियाय ॥ मिखा महाकालदगुत्रि
याय ॥ उग्रबल्लुदगुत्रियाय ॥ उग्रबल्लुदगुत्रियाय उग्रबल्लुयागुनिर्नयाय ॥ ५३ सि
द्धिलक्ष्मीदगुत्रियाय ॥ कालि ॥ गीपूनसूक्तनि ॥ निर्याशुकायाय मात्रा ॥ धूप ॥ दद्यात्तव
श ॥ कयथवथवमगुन ॥ ५४ ॥ गिरुण महामाया ॥ त्रिदशडकानादि ॥ यत्यङ्गीनात्वी
तय्यन पिगप्रगाद्यादि ॥ ॥ वलि ॥ अयावथवथवथयसङ्काया ॥ ॥ निमाल्य कठानसङ्कायाववि
विथविनुपूजा ॥ ॥ ॥ तिसृतिमाविधि ॥ ॥ अथ कोमानीपूजा ॥ पूष्यराहन ॥ यनमाननपूजा

धियकावगय॥संवत्॥काकासा॥महाकाल॥माक्र॥७५॥यादवि॥उल्फू॥यासगिका॥नि
नुस्त्रेवा॥वालरा॥सिद्धि॥रस्तु॥ ॥कृष्णनयूगा॥सुल॥स्वन॥सायाव॥वेगा॥सिन्धु॥नर
रामका॥स्वान॥गयी॥पय॥यता॥काय॥गय॥ ॥अ॥वम्या॥अ॥जादि॥सू॥याधि॥गु॥नम॥स्माना॥अ॥
य॥७५॥म॥७५॥ला॥कार॥॥व॥गि॥सि॥न्या॥स॥॥ग॥ल॥या॥अ॥य॥या॥य॥य॥॥अ॥स॥य॥य॥॥सं॥व॥र॥न॥ति॥आ॥वा॥ह॥ना॥
॥दि॥न॥का॥स॥न॥यू॥गा॥व॥लि॥म॥डा॥॥ने॥॥न॥न॥दि॥न॥॥म॥म॥हा॥का॥ला॥य॥या॥द॥का॥॥व॥लि॥॥॥अ॥॥॥न॥म॥
॥क॥या॥दि॥॥॥म॥यू॥रा॥स॥न॥या॥द॥का॥॥अ॥॥॥॥॥ने॥॥॥॥म॥हा॥म॥न॥मा॥दू॥॥को॥मा॥त्री॥वा॥ल॥दू॥वि॥ला॥न॥क॥
॥य॥म॥य॥नि॥ध॥ना॥न॥क॥म॥सा॥व॥सा॥॥नि॥॥न॥क॥॥यू॥य॥या॥दी॥सि॥न्धु॥ना॥॥न॥॥वि॥ग॥ह॥॥॥क॥व॥का॥न॥क॥न॥
॥यी॥॥न॥॥म॥ाला॥वि॥लि॥वि॥नी॥॥॥कि॥॥यू॥क॥ना॥द॥वी॥वि॥न्धु॥का॥या॥ल॥॥॥को॥ल॥क॥ग॥गा॥ता॥द॥वि॥

वठवकुनिवाग्निनी॥याम्ययी० स्त्रिता निर्यं कोमारीरुनमाः॥००॥विष्णुन॥ग्रा
लि॥कौं॥कौं॥कौं॥वकु॥रुज॥३॥म्यं॥कौं॥प्रामहाकोमारीकाविश्वयादुका॥वलि॥
३॥दद्यादि॥३॥मयति॥कूल॥३॥३॥कोमारीविग्रहमनुकाद्यस्यधामहात्नाकाः
लिखदादयाग॥वलि॥४॥अधान॥वज्रवगिनि॥वलि॥४॥हंसासनयादि॥४॥१॥अधान
अमाथयादि॥अक्षमा॥एका॥वलि॥४॥आवाहनादि॥यानिमखा॥देवसकलहिं॥ग्रा॥लि
॥वलि॥४॥यत्रमानग्रा॥लि॥कयक॥वलि॥४॥३॥दद्यादि॥॥यविगृक॥कय॥अद्यादि॥केन
सयी०यादि॥ग्रा॥लि॥वलि॥४॥दद्यादि॥निर्वहिनकय॥लाकमहावलिनिधूतके॥
आवाहनादि॥यानि॥ति॥मि॥स्वा॥म्हा॥पू॥या॥दी॥य॥न॥व॥अ॥रु॥य॥॥॥॥ज॥रु॥व॥लु॥म॥ल॥सा॥॥

वर्णः॥ त्रिदिव॥ साहामाया॥ वस्त्राणां कमलेश्वरः॥ वातराविमहा॥ अग्न्यादि॥ तर्क्यः॥ विंशत्यु
गासंख्यादि॥ दक्षिणादवस्त्राकुमारिका॥ ॥ यज्ञमाननीवक्त्रनादि॥ द्रुसकनतयावक्त्र
लम्भादिश्चक॥ उक्तादवायुस्यादि॥ गंगामसिन्धुस्रवस्वतीवयमूनागमदावनीसागनापूरु
युतिसमन्तन्यासकलमं स्नानमस्तस्यैवागस्याख्यकलूखनासनकर्तृदीर्घायिकाभगिनि
सर्वसंयतिकारः॥ नरवतामृत्पूज्यापाठवः॥ ॥ वन्दना॥ श्रीरवः॥ वन्दनं॥ वन्दयन्दनमि
ल्लङ्घनं॥ उरुकरनाकादिर्हमाहर्तृदात्रिडाद्विनायनासनकर्तृसायनाग्नः॥ तस्यासंयति
निरूपभवमूदयं हानं सदासंयदं दवग्रासमन्तग्नः॥ विजयते अस्याविर्नयाठवः॥ ॥ सिन्धु
न॥ विप्रग्वनमहा॥ सिद्धुनतिलकं वाक्कुडहनं॥ पायायविष्णुगिनः॥ आयुष्यं विप्रवदुत

जदि सुखं ना ना दिगं संप्रदी। माह सुवर्तनं जगत्प्रवसुगमलक्ष्मी सदा संपूर्णं सुखं वीनक
नलं विजयत कामं ध्वनी या कुवः॥ ॥ माहनी ॥ माहनी जन संप्रदी जय कनी वा कं महासि
द्धिदा या पाद्य द्रविता घना सन कनी संसा न मता नलं तस्या संप्रदनि भवसुदयं ज्ञानं स
दा संप्रदी दवध्या प्रियु न गवना विजयत संप्रदी जगत्माहनी ॥ ॥ सगमन ॥ सिद्धार्थ दधिया
वकं ससुनुनं संप्रदी वदु आयमं सव संप्रदी कानल जय कनी सुवार्थ सिद्धि प्रदा दीर्घा
युविन कानम विजयत यस्या सदा वा द्धिगं सार्यं या तु कुल गवना स्य रगवान् संप्रदी
दा या कुवः॥ ॥ स्नान ॥ नाना द्रव्य ॥ ॥ दवसु कस्नान ककाय ॥ ने कान कएवनी र्यादि ॥ ॥
दवसु स्नान कलभ या पुनिका ना विथठ ॥ आभा वदि ॥ उत्तु लुवि ॥ या सागी ॥ नेन्दु वेव ॥

आनयि॥पूति॥पू०वन्द्यादि॥ ॥कोमानिविसङ्गनी॥कृष्णनडुआवासानकृष्ण
॥सर्वसिद्धलमां॥साविथ्यय॥ ॥ॐति०कोमारीपूजा॥ ॥धौ०ध०कोटस०नाग्रीयास्त्राननी
जुंहुलितावियटां॥कृथकृकृयासमयवाहिनंमया॥अवस्थाकृजक्रमानलवद्वाय
॥ॐ०कृ०हनीत्यादि॥स्वयस्वाह०आसियागा॥दत्तसामिसार्थकादिया॥मतापूजा॥हार्ति०यास
व०यक्रमानयागुलिसमयवालवद्वाय॥ ॥ॐतियविग्रानाहनयल्यानरुदवविधिस
मो०फ०॥ ॥नाग्रीकागर्भकृत्वा॥सीतियावलि०ध्या॥ध्वनकृया०ध०॥वलिथवथवथय
स॥मान०त्रीया०अनया०कृया॥निर्माल्यशुका॥निर्माल्यका०ठालसहाया॥ ॥अथ०बन्धुका
ग॥दीप०का०धुया०वाग्यावद्धिननकंगयागुलि०बल०वा०यान०उग०का०ठाल०संगयावपूजा

याप्यायातवासनयमवाय ॥ तयतससिंधुनविद्रवाया ॥ ५ ॥ वलुविद्र ॥
 पूतकायावलुयाग ॥ अथमवलुयागपूजायाय ॥ ॥ न्यास ॥ वं ० ॥ अमुयरुद्रा
 ५ ॥ वां ददयायनमः ॥ वां मित्रसखाता ॥ वूं मित्राथेवोषट् ॥ वेकववायइं ॥ वेनंगुया
 यवषट् ॥ वं ४ अमुयरुद्र ॥ धनं अमुन्यासः ॥ जलयाग अर्घ्याय पूजा ॥ अत्तपूजा ॥ ॥
 संवत् ॥ त्रिदवासनादिपूजावलिः ॥ स्वस्वमूला ॥ जौ वूं श्री कूलवलुनाथयवकाक्षय
 यादुका ॥ अथ ध्यानं ॥ आत्मा तु तत्र वाकारं कथं ध्यातव्यं ॥ सिगयद्रासनासीनं
 कालानलसमश्नुतिं ॥ त्रीडास्यं तीषण्णकारं मूलं टं काकुक्षनि ॥ प्रकृष्टं सत्सुखीक
 लपूजायित्वा विनायकं ॥ वूं ति ध्यानं ॥ ग्राह्यं लि ॥ वां वां वूं वां वलुनाथयादुका ॥ ३ ॥

ॐ नमः शिवाय ॥ दद्यादि ॥ पवित्रकं ॥ पूजादि ॥ केलाभयी ० मधुसूक्तं ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ कलबलुनाथयवृत्तं
लाभियायसर्वकारं ॥ नमः पालिताय गन्धपवित्रकनयाद्रकां ॥ दद्यादि ॥ मूत्रनवलि
४ ॥ धूप ॥ दीप ॥ नेवद्य ॥ गप ॥ स्नागं ॥ रगवं सत्यसादन पूजा कलमखलुगं ॥ ममास्तु
त्तसंयुक्तं सत्यसादात्युतामम ॥ अगगन्धदि ॥ अस्तु ॥ विसर्जनं ॥ कर्गं स्यादखस
वायकनशायकनकाय ॥ ॥ रत्नलसिय ॥ ॥ धनवन ॥ कोमारीयाग ४ ॥ ॥ विधिः ॥ पूजा
याया ॥ पूतकाकाय ॥ केलाभयी ० एदि ॥ मूलमन्त्र ॥ काय ॥ धूप दीप नेवद्य ॥ गप ॥ स्नागं ॥
यज्ञमानन्ववकुनादि ॥ कनभारिषिक ॥ वन्दन सित्पत्र मादनी सगमन अग्नीवादाद
वसुखानपूतकाविधि ॥ धवनकाशनसा अर्घ्यादागुलि गव्य दिय ॥ अत्रति ॥ पुनिष्ठा ॥ पूरु

बन्धु ॥ सावित्र्यय ॥ ॥ विवनवयाव वा द्रुस्यस्वानदीयकागर्भुया जूंगुलिविय ॥ वांग
यागुसिंविथ ॥ आसियागविथ ॥ ॥ वृत्तिपविणनाहल यस्वानीएविथिसमाक ४ ॥ ॥
अथनागुदीपकागर्भुयाति ॥ कालीकासत्रगयाव वरूतंजसाथदीयसवासत्रगयाव
गिवगकिराहितनमालकोअय ॥ ॥ बलसकलधनूरंजसायावविथिथीद्रवनवा
य ॥ पिथुसकपतिथामि ॥ हनम्बग ॥ ॥ यतालहिकवद्रुक ॥ उयाधमक ॥ याकस्वकन
द्रवननवा ॥ यतग ॥ याहनयूजायाच ॥ ॥ आवमना ॥ जूयादि ॥ सूर्याद्य ॥ कलिकलूषक
गान्धुमालुतीमा ॥ नरसकलुकुलानिहूनसोख्याविद्या ॥ त्रिदिवगलमनूनवि
जनगायहल ॥ कसूमजलहलाथ ॥ त्विकलाकानमामि ॥ गुनूनमस्वान ॥ अरवभुमभु

नाद्यादि ॥ वनी सिन्ध्यासा ॥ जलयाग ॥ अर्घ्याग्रयूडा ॥ आत्मयूडा ॥ आवाहनादि सर्वार्थान्
॥ आवाहनम् ॥ कल्यादि ॥ ४ ॥ सिंहासन ॥ वन्दना ॥ त्रिविलयनयादिकां ॥ श्रीरवधुवन्दनं यकं
गन्धायसूमाहनी ॥ आरुषितं ललाताय वन्दनयुति गृह्णातां ॥ सिद्धना ॥ श्रीवीलम्बनीम
हावीनवीनरहस्यविरुषितं ॥ त्रैलोक्याकरवलीदवि सिद्धना नमस्तु गुरुमं ॥ माहनी ॥ श्री
सर्वजनमाहनीयादिकां ॥ माहनीकामसंक्षिप्तं ॥ आकाशकूलस्थ ॥ नृसूक्तं वक्षुसोरा
म् ॥ माहनीद्विदयकं ॥ यक्षाय वीत ॥ श्रीयक्षाय वीतकयादिकां ॥ यक्षाय विनयनमं वक्षु
सूक्तं युतिस्त्रिगं ॥ यविनं पावनं पूज्यं ॥ गृह्णन्तु यनमम्बनी ॥ पूज्या ॥ श्रीनानाकृपयुधेज्ज
लक्ष्मणयादिकां ॥ नानापूज्यसूक्तं ॥ निमातनी कूसुमादयः ॥ सोराक्षु सिद्धिदं रघुपू

व्यानाहतमूलमं ॥ पूजनं वज्रवतीसि ॥ मूली सकाना ॥ कूटकात ॥ ग्राहलि ॥ अंय
यागिनी ॥ एयादुका ॥ वज्र ॥ वलि ॥ यकाविरु ॥ ति ॥ आवा ॥ हनादि ॥ यानिमूडा ॥
गुह्यसंययागुद्दयागुडाहत ॥ वनूकं गृह्णतवी सिद्धा ॥ नामनिमादिगं ॥ लोका
यवान्मथयनिर्मलं सुटिकायमं ॥ तसायनायं सर्वस्य देवदेवननिर्मितं ॥ निष्कलं
सकलात्यनं कमलयुगं नमाम्यहं ॥ गृह्णवीनं मं धम्म सिद्धानामनिमादिगं ॥ वज्रकृष्ण
यवा ॥ लुभकाकारं नमाम्यहं ॥ स्वागतं धम्मं त्राकानमिलनागविवर्द्धितं ॥ द्विकाद्वकविनि
र्मकं गलेकेन मिगं त्वया ॥ जूलि वलियागं डयदाहयामि ॥ काय ॥ वलिथदमकुना ॥ ॥
वलिं गृह्णमहावीनवर्नं नेष्टं वेसाधनं ॥ मार्कं एवमुत्तमानि निर्मलं सुटिकायमं ॥ जू

नमस्तानसंदिग्धं सर्वरूपसदादिनं। निष्कलं सकलात्यनं यद्ययत्र नमाम्यहं॥ वलिगुण
रसाहा॥ अगस्त्येन्द्रदक्षि॥ अक्षयमहसंयुद्धं॥ सुनि॥ सिन्दूरचन्दनविलयितायुष्य
मालायद्वापयीतवसना॥ नक्षत्रदीपितामूलमादकहलानिमिअञ्जननसंयुक्तुः
पाण्डुमालिनामिदममीनयुक्ता॥ अगानिस्वर्नवितापरिपूजितातिदधीकृतापुणतिद्व
ग॥ अश्वसुर्व॥ संयुक्तीगाहलतिदिग्भियसंयुक्तानि॥ भक्ति॥ सदाहवकुमङ्गलदहलक्ष्मी॥
॥ निर्विद्यिम्बीनकागिठुआदिमवसौतवाअस्माकंयुक्तलोकानामिर्विहकुसुमद॥
यासाहदाप्रिहदायनअयनगताबन्दुमेलासनस्त्रुक्काविष्णुश्चन्द्र॥ सकलयकिम
मेरुगतिर्यसुन॥ गङ्गासाईसूर्यहवनमगरुन॥ वायुसुषुवा॥ अमान

[illegible]

[illegible]

संवात्रिंशद्गगनानन्ददवगगलम्बायदुषष्टिलककाठिसिद्धिवदुष्टवष्टिलककाठिया
गिनीयादुकां॥वलिगृह्णन्त्याह॥॥नेमस्तुवना॥मायायमूंनत्तस्वर्गलोकगग
दुग्ममिनीस्वर्गलोकजुम्गासुक्ष्मत्रिंशद्वर्गनन्ददवस्वर्गम्बावगी॥लककाठिसि
द्धवती॥लककाठियागिनीयादुकां॥वलिगृह्णन्त्याह॥॥वामद्विजलबल॥माहनीयूंन
त्तयवनलोकगगदुग्ममिनीयवनलोकजुम्गासुक्ष्मत्रिंशद्वनानन्ददवयवनाम्बा
धाउ॥लककाठिसिद्धधाउ॥लककाठियागिनीयादुकां॥वलि॥॥॥॥भनश्चबल॥दु
नायमूंनत्तमर्त्यलोकगगदुग्ममिनीमर्त्यलोकजुम्गासुक्ष्मत्रिंशद्वर्गनन्ददवमर्त्या
म्बाअलककाठिसिद्धअलककाठियागिनीयादुकां॥वलि॥॥॥॥अ॥गम्यसर्वविना॥

ॐ गंभयणी नू नत्तना गलाक ता गग्गंभमिनीना गलाक अमत्तसंक्षुत्रिणीना गभनन्द
दवना गभम्वत्ता विलक काठि सिद्धवत्ता विलक काठि यागिनी यादुकां ॥ वलि ४ ॥ ॥
श्विमकालि ॥ ॐ नू नत्त वन्दुनी लजनक लोका ता गग्गंभमिनि अनन्त लोका अम
त्तसंक्षुत्रिणी अनन्तानन्द देव अनन्ताम्ब अनन्त लक काठि सिद्ध अनन्त लक काठि या
गिनी यादुकां ॥ वलि ४ ॥ ॥ ~~पिदा~~ ~~न~~ ~~म~~ ~~स~~ ~~अ~~ ~~उ~~ ॥ ॐ आत्मगत्ता यवम्ब ॥ यादुकां ॥ वलि ४
॥ ॥ वायव्य अडुवाक ॥ ॐ विद्यागत्ता यविषुव यादुकां ॥ वलि ४ ॥ ॥ पूर्वक ॥ ॐ निवा
त्ता यत्तुडाय यादुकां ॥ वलि ४ ॥ ॥ म ॥ ~~अ~~ ~~न~~ ~~रा~~ ~~य~~ ~~उ~~ ~~पू~~ ~~जा~~ ॥ ॐ सिद्धार्थे याददया यादुकां ॥ स्त
म धार्ये गानूदय यादुकां ॥ ॐ विश्रुत्ता ये उद्दय यादुकां ॥ ॐ लको गु अ यादुकां ॥ ॐ

दीपायेनाहोपादका ॥ स्तू मालिने द्दययादका ॥ स्तू मिवायेक ५८ यादका ॥ स्तू व
सूस्वार्थे म्स्वयादका ॥ स्तू नासाम्मायेनासायूट्टययादका ॥ स्तू कटकायेक ४८
द्वययादका ॥ स्तू सन्निकभायूक यादका ॥ स्तू म्स्वामित्रसियादका ॥ ॥ स्तू सर्वज्ञा
यद्दययाययादका ॥ स्तू अमृतनक्षामालिनी ए कि मित्रसखाता ॥ स्तू जूवदावदनिज्जना
दिकाधमिस्वार्थे वाषट् ॥ स्तू वजिलिवजधनायसूमनकववायडू ॥ स्तू तं वं निरुज्जलूफ
भक्ति ४ सद्मनक्षालिगनगुण्यायवषट् ॥ स्तू नमममुखअनन्तभक्तिमिलीदू महायागु
यतास्तुयसहस्राकायडू रूट् ॥ वलि ४ ॥ अवाहनादि ॥ यानिमूडादभयत् ॥ ॥ दीपयूका
॥ स्तू सकान ॥ स्तू सकाल ॥ गयणी ॥ ॥ अवाहनादि ॥ यानिधने मूडा ॥ ॥

दीपधाय ॥ ॐ ॥ गमयती ॥ ॥ वलिवियदावर्द्धं सु ॥ ॥ तं गजयावविक्रया
वेवजयनी ॥ यायनाकिता ॥ नताहृदाजयाहीमा कलावेवाष्टका ॥ दिव्यादि
महायामिसि ॥ दियामिग ॥ गवरी ॥ साकि ॥ कालराणीवउद्धुकेभीनिसाकरी ॥ ग
म्हीनाथाव ॥ मूलायवनागीउलानिका ॥ तीव ॥ यसहानन्दा ॥ बालामुदवीतथेवव ॥ विभ
वीरुतिनीवेवजकलीधूजठीरुथा ॥ विषरुक् सव्वसिद्धिउच्छि ॥ ॐ ॥ कुरु ॥ थेवव ॥ दूँकानी
रागवरीदीधोधूसाकीकलरुपियामाग ॥ काकदूषीवसुथानिपूत्रयान्तकी ॥ नाकश्री
धात्रनादावनका ॥ विश्वरूपिणी ॥ जयंकरीविरुक्तीवसुस्कागीनरराजनी ॥ वीनरुड
महाकालीकंकालीविक्रानना ॥ को ॥ धलाहीमरुडाथवायव ॥ गमयानना ॥ वा ॥ श्रीव

[illegible]

सूत्रयावाक्॥ निर्माल्यं निर्मलं दहय विगुं दहया धनं । प्रसादी कनहा कव्यं कुविक
भनमा मुता ॥ ॥ गलत्रयावाक्॥ मरुमा न्मसामा न्मसा कव्यं नन कं वतू । वद्युका
यनं दिव्यं कुविक भनमा मुता ॥ ॥ सवत्रयावाक्॥ आहू विहान दं दी पं वक्र समय
वद्युसा तता भाति प्रदलीनं कुविक भनमा मुता ॥ ॥ सवत्रयावाक्॥ अनन विधि
नाम ए प्रयल य समाहितं । सवयाय विनिमूकं आहूता वाय जायता । मनु ॥ ॐ विद्ध
शिवुवन सिद्धि दिय विनिकान् जां जां दू हू स्वाहा ॥ ॥ पाठयक ॥ श्रीसम्वत्तन
जुनु ॥ यासा ग कि ए मका ॥ गयन ॥ प्रीत प्रता ॥ ॥ जूठया कया ॥ संगानं नूमा र्गन
॥ गयन ॥ अय विमिति ॥ ॥ कयया ॥ गयन ॥ जयति दयाहन ॥ ॥ उकानक ॥ जूधयूव

॥ वलि विलिखन ॥ ॥ प्रवर्तते न वं वक्तुं सर्ववर्षं हि जायता वक्रान्तश्च गतनेव सर्व
वर्षं यथ कथं यथा ॥ वीरवक्रसमलायां सर्ववर्षं हि जायता वक्रान्तश्च गतनेव सर्व
वर्षं यथ कथं यथा ॥ मूढालाययाया ॥ गुरुमनुलसर्वो हितान्द्रवनेच्छाय ॥ वलि
काय ॥ ॥ यथैव ज्ञानं जानयतु ॥ तत्तु आन्तं तव्यं न जूविना साहवैदं ॥ ॥ अथ कर्तुं
कथं जा ॥ वामं वलिगया वया गिनीया वा दूया वतय ॥ अथ वं मनुला कातरयादि ॥ न्यास
॥ कौं अमुय रूद्र ॥ ५ ॥ कौं रुद्रया यया दूका ॥ कौं मित्रसपा दूका ॥ कौं मित्रा यया दूका ॥
कौं कववा यया दूका ॥ कौं नृपया यया दूका ॥ कौं अमुय रूद्र ॥ ६ ॥ एदि अंगं न्यास ॥ ॥
जलयाग ॥ अथ याग पूजा ॥ असन्वत् ॥ तिदवा सना दिवलि मूढा ह्वत् ॥ अरिग ॥ दि ॥ २ ॥

नि२ । । । ।

ब्रह्मान्यादि ॥६॥ अथानमकथेयादि ॥६॥ धितासाययाइका ॥ अथलि ॥ काकीकू कू कन
केशनमसाहेनवाययाइका ॥३॥ ददयादि ॥ अवाहनादि ॥ यामूडा ॥ धूपा ॥ दीपा ॥
नेवअ ॥ जय ॥ स्तुत ॥ श्रीसंस्वरु ॥ धूमार्हदीफनर्तंगलितनूवि कटाणीनिनर्तं कयालंरु
रुखड्डुकलिततदधनधगतीकू भूलं कयालं । वक्रान्तमत्समान्सासवनसविविधि
मादिताथतसंस्त्रामार्गगा श्रीसहैवस्वगलयत्रिवृत्तानोमिडक्किठनाथ ॥ अथगंधादि ॥
मन्त्रिपूजितेवड्ड ॥ एकानेक ॥ अथयूवर्गार्त ॥ अमुनविसर्जना ॥ वलिंकायकूवया ॥
कर्तकठाय ॥ इमाश्वं कननकीनी श्रीरकारक ॥ कर्तं कारिषिक कायमाल ॥ गान्धर्व
तू ॥ अथअथवधुधन ॥ वंस्वस्यं गुनस्ययाथा ॥ त्रै ॥ अथवधुधनमभुलं यीगत्रकसमा

[illegible]

श्वरीदिकि ॥ ६॥ ह्रीं नमो गम्य कृत्वा श्वरी कुलग ॥ ७॥ दो नू ॥ दि इ मि का श्री वा मां प्र ॥ ८॥ मा नि वि म
जननी द ॥ ९॥ श्वरी सिद्धिदा ॥ १०॥ अम्ब पू र्ण गीतं यदं र ग व ती रं त न्य तू या सि का ह्रीं नमः
व ह्नु ला ग थ ह नी ह नो व क्रा म नी वि ग्र यं । ए च ह्नु न व र्यं व कं त द नू व प्रा था गि नी यं व कं
व न्दा क्ति व म नी वि ष द्ध म म लं मां या तु नि र्ण कृ ता ॥ ॥ त न्म ना ॥ ११॥ श्री त ४ यु ता स न स्त्री ए व र
म ह्नु ॥ १२॥ ए वं म ल मू र्ति ॥ १३॥ व ॥ स न स्त्री ग ॥ १४॥ रु द्र व द्ध का ला क या ला ४ रु ॥ १५॥ त्रा ४ । न
की य का ४ सू ती कृ ४ पि ए ग ॥ १६॥ स क ला मा त र ४ कृ ण या ला या गि न्या था ग य का ४ स्त्री
रु ल व न र व व ना ४ या न म ग लिये नु ॥ पि व नु दे व ता ४ स द्वा ४ स नू डा ४ स ग ॥ १७॥ वि या ४
या गि न्य ४ कृ ण या ला ४ ता व द ह्नु व क्ति ता ४ ॥ ॥ वा क्ति ॥ न म ४ श्री ना थ य ॥ न म ४ श्री सि धि ना

॥ अथा॥ नमः ४ श्री कृष्णभनाथाय नमो नमः ४ ॥ ॥ अथ विभक्ति कुसुमालि मय विभक्ति मधुल।
वीरवकुक्षितविदे अथ ककुक्षसमतिवर्गा ॥ नमस्तु वकुक्षवर्धन नमस्तु हानदायक ॥ न
मस्तु हे नव दूयाय नमस्तु हवता नव ॥ अथ ककुक्षु या गिन्या वदूकानां गिथे वय ॥ हे नव
वर्धन मय कुम्भकाकारं नमाम्यहं ॥ ॥ अथ विना ॥ अथ वदूह मज्जनाम नमवय ॥ मसावल्लवज
दहा राज श्री भक्त ककुक्ष ॥ मधुना ॥ अथ वनिष् माय ४ श्री कान्दी वदूल ॥ मसायुक्षित विनि
र्णलक्ष्मी सन्निदिदायक ॥ नसाय नार्यं सर्वस्य दवदवन निमिर्ग ॥ यत्रा मत्त नसा दिव्या पीय
तारि वरेषां ॥ ननु मुकुल या गिन्या नन्दनु कुलयुगिका ४ ॥ नन्दनु श्री कुलावाया ये वा
अवनमामुते ॥ ॥ अथ यन्निद द्या ह नयादप्यं ककुक्षं सन्तवामा मत्तमा कदायक ॥ अतन्

सिद्धान्तगतिप्रवाधकं नमामि वाष्पकयागिनी ॥ यागिनी वक्रमध्वरुं माहमलुल
वक्षिणी नमामि मित्रसानाथं हेनवं देववीं प्रियां ॥ अथ दादूनिता डोग्म समयावात्रलंघ
नात् ॥ सर्वतयययाहनि दिव्यवक्रसाम्भलनात् ॥ संयूजकानां घटियालकानां यमनन्दसा
मान्यतयाधनानादिमस्य राकुस्य पूनस्य राहूकपाकुम्भकिं हगवान्कुलम् ॥ यासा
माह्लाप्रतावनस्वस्तिगाहवनप्रथममस्मात् ॥ समस्मात् यागिनी स्थानि नक्तर् ॥ नन्द
नुसाधककुलान्यलिमादि सिद्धा ॥ मया ॥ यतन्नु समर्थद्विस्थि यागिनीनां ॥ साग्ममृवीमू
नडकापिसमायवस्मा यस्यागुनाग्धर ॥ यं कन्नमेव देव ॥ नन्दनुसाधका ॥ सिद्धान्तननुक
ल्यागिन ॥ नन्दनुसाधका वायं यवायं कुलदीप्तिगा ॥ दहीन ॥ सुखिन ॥ सन्तु सुखानि सन्तु दहव

गु। प्रसीदन्तु सदा तद्भवन् ॥ श्री व ७८ ॥ ॥ वृत्तिना प्रज्ञागविधि समाप्त ॥ ॥
वृत्तिय वितागहन विधि समाप्त ॥ ॥ बहु ॥ थी कुरु स्नान के ता ठाव गितादिना का काय
॥ स्नान ना रुसाय मान ॥ मरुता ॥ थ सुवृक मान ॥ वृत्तिवद्वि विधि समाप्त ॥ ॥
अथ दमनानाहन विधि ॥ ॥ विधि थ्व वसथ ॥ यिवन वं पा को स यं व वलि विया ॥ सा श्रन
कमाश्च ल कला ॥ लू पा दीय ॥ ने व अ ॥ ग य ॥ स्नाग ॥ नि ल क म यि अ को ॥ ॥ दमन याग्य
उ सं स्नात ॥ ॥ नै ॥ जी ॥ श्री ॥ कुरु ॥ न मा रा ग व ति रु क म ला ये ॥ जी ॥ श्री ॥ रु द या य या दू का ॥ ॥
नि नि क ॥ ॥ नै ॥ कि लि कि लि वि श्व का ॥ न य ॥ अ सु या य रु द ॥ धा क ॥ ॥ नै ॥ अ न अ य
न अ य ॥ त म रू वी व रु दू या ये ॥ जी ॥ क व वा य रु ॥ अ व गु ॥ ॥ ॥ नै ॥ कि लि कि लि वि श्व का

१५५

वैद्य

यादू

यद

7	6	6
4	2	3
1	5	2

5

द्वार

कां॥

सन्तः

॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

三

1200

न न न न

नदनी ॥ ॥ अहा कयना स्यादवगय ॥ यदवया दवननवकोध

॥ कं कामदवामयादकं ॥ रं रं रं रं रं ॥ कं कामदवामयादकं ॥

न न रथयादुकां ॥ दसननाया ॥ नं० प्यं अमी वरुनं नं० अया

॥ तस्यैवा ॥ तस्यैवा ॥ तस्यैवा ॥ तस्यैवा ॥

ॐ नमः ॥ त्रैलोक्येश्वर ॥ सुगन्धर्व ॥ राक्षस ॥ साक्षात्पूजित ॥ मना
ॐ नमः ॥ त्रैलोक्येश्वर ॥ सुगन्धर्व ॥ राक्षस ॥ साक्षात्पूजित ॥ मना

[illegible]

॥ सायं सायं मम न राध्याया दुका ॥ इति ॥

॥ नमः शिवाय ॥

याइका॥ याश्वम॥ ॥३१॥ म्मु॥ एसावकनू बु॥ जूमयदमन

10

नाय्यपाइकां॥ ~~अभय~~॥ ॥ नै० मू० ॥ ते सो व क यू वा य द मन नाय्यपाइकां॥ वाय०॥ ॥ नै० मि वाय का
ताय द मन नाय्यपाइकां॥ म० ॥ ॥ नै० जी० ॥ कुं० ॥ मू० ॥ द मन नाय्यपाइकां॥ ल
काम डाव म व स ग य॥ ॥ अ क मान न ल र व विय॥ म० ॥ ॥ व ल ख्यादि॥ ॥ द मन पू०
॥ नै० द द न र म न म दाय न म०॥ ॥ नै० वा व स न्नाय न म०॥ ॥ नै० पि पि ल्ये न म०॥ ॥ नै० जी० ॥ कुं०
॥ मू० ॥ म० ॥ द मन नाय्यपाइकां॥ ॥ नै० कौं० कौं० कुं० कौं० क०॥ मू० ॥ काम द वाय पाइ
कां॥ ॥ नै० नौ० नौ० नौ० म० ॥ नै० नौ० नौ० म० ॥ नै० नौ० नौ० म० ॥ नै० नौ० नौ० म० ॥ नै० नौ० नौ० म० ॥
का० ॥ नै० जी० ॥ कुं० ॥ म० ॥ नै० नौ० नौ० म० ॥ नै० नौ० नौ० म० ॥ नै० नौ० नौ० म० ॥ नै० नौ० नौ० म० ॥ नै० नौ० नौ० म० ॥
एग व नि कुं० कुं० काय सा सा स्तु० ॥ नमो ज्वाता मूर्खी स्तु० ॥ नमो ज्वाता मूर्खी स्तु० ॥ नमो ज्वाता मूर्खी स्तु० ॥

[illegible]

कवचाय दू ॥ तें १ स्तोत्रां वा निष्पञ्चलूफ १ कि ४ सहस्रगता विगन उग्रयाय ववदू ॥ तें
१ स्तोत्र ४ नमस्तु लुञ्जन्त १ कि गिरि दू मसाया भुयता साय सहसा काय दू रुदू ॥ ॥
कूलगमयती ॥ तें १ कृद्विकाये विग्रह कूलदीयाये धीमह गन्ना कृद्विषवा दयागू ॥ ॥
दमनग यती ॥ तें १ जूनीगमय विग्रह काम देवाय धीमह गन्ना दमनप्रवादयागू धम ॥ ॥
दुदयादियू ॥ तें १ नमो रगवणि दुल्लमलाये जां श्री दुदयाय याइका ॥ तें १ ऊं कृद्विथे क
लदीये जां श्री निरह याइका ॥ तें १ जां जां दू ववृत्तानि ख दू श्री निदवाय वा वट याइका
॥ तें १ धा नू जू धा नू जू धा नामस्वी वदू नू याये जे धा कवचाय याइका ॥ तें १ ऊं वीं महन्ता
त्रिका काये जां श्री न उग्रयाय याइका ॥ तें १ कि लि र विवृको दू नाये ज जू म्फाय रुदू

यादृकां ॥ अवाहनादि ॥ धनुमडा ॥ त्रैलोक्यं स्वाहा ॥ १० ॥ स्तोत्र ॥ दमनाद्वनादियभनि
वदतयायनाभनं । मल्लं लयवकं कलासाय ॥ नमस्तदा ॥ अगन्ताथ हगभनयनमात्मनि
लघता । कनामिदामनयूजा हायनयनियूतिगां ॥ अविष्यद्विद्वद्दमाहमतिमान्निः
लङ्कावममधु कं पायसमस्तधाननिविठनाथप्रसन्नोहव । संसात्रहयरीगताववि
कलंगतात्वमकाविठ ४ दूर्य हायनकमकिष्ठविहलदामन्ययंकम ॥ ॥ अगन्ता
दि ॥ धनिका ॥ धनिकिनासिदवग्ग सुप्रतिष्ठाठवनगुयं । सानिधियतिग्नज्ञानीयज्ञ
मानागवदुर्न ॥ संनास्तुतियददीयं लन्नात्राक्षस्तधेवव । यज्ञगनसंहतार्यं मुयूष
वमुयाभव ॥ नकुलं सर्वकात्रवग्गभनहवनमामुता ॥ धननास्तुजाविधि ॥ ॥

[illegible]

पा॥ क॥ स्वाहा॥ १०॥ या॥ धना॥ धार्थयमदमनासूना॥ एवह॥ ४॥ ज्ञात॥ ४॥ सूय॥ धारुमं॥ बुद्धा॥ आ
मन॥ सु॥ धि॥ या॥ ननय॥ न॥ पू॥ जा॥ वि॥ क्षन॥ सु॥ ति॥ दी॥ का॥ का॥ न॥ ए॥ कि॥ रा॥ व॥ स॥ रु॥ ली॥ सि॥ र॥ आ॥ गु॥ न॥ र्व
द॥ ति॥ वे॥ त॥ वे॥ वा॥ वि॥ क्षन॥ ना॥ न॥ सू॥ त॥ स॥ ४॥ स॥ व॥ पू॥ जा॥ क॥ ना॥ नु॥ ॥ अ॥ भि॥ वा॥ स॥ न॥ दि॥ ना॥ ॥ गु॥ व॥ न॥ गु॥ न॥
पे॥ ध॥ दा॥ म॥ न॥ ॥ य॥ ॥ अ॥ य॥ वा॥ हा॥ न॥ ॥ अ॥ र्व॥ नु॥ स॥ रु॥ लं॥ वे॥ त॥ मा॥ स॥ क॥ ॥ द॥ द॥ ति॥ दी॥ का॥ रु॥ लं॥ रु॥ ड॥ म॥ ना॥ वा॥
दि॥ न॥ का॥ म॥ दं॥ ॥ न॥ गु॥ व॥ क्ष॥ ग॥ दि॥ क्क॥ इ॥ न॥ द॥ म॥ ना॥ ना॥ म॥ उ॥ च॥ न॥ ॥ न॥ न॥ द॥ म॥ न॥ स॥ हा॥ व॥ म॥ कि॥ नो॥ व॥ क्ष
न॥ स॥ दा॥ ॥ ४॥ द॥ व॥ म॥ क॥ ज॥ ना॥ म॥ न॥ ॥ ए॥ य॥ पा॥ न॥ क॥ मा॥ व॥ न॥ ॥ वे॥ त॥ स॥ हा॥ म॥ हं॥ व॥ क्ष॥ ज्ञा॥ य॥ ना॥ प॥ न॥ म॥ भ॥ त्रि
॥ व॥ त॥ व॥ ग्नि॥ रु॥ लं॥ वे॥ ति॥ ति॥ ति॥ या॥ य॥ पु॥ म॥ न॥ ॥ ग॥ स्मा॥ वे॥ त॥ वि॥ क्ष॥ ना॥ ति॥ या॥ व॥ क्षी॥ व॥ नु॥ व॥ ह॥ न॥ ॥ म॥ हा॥ पा॥ टं
क॥ न॥ स्य॥ न॥ ति॥ ना॥ ॥ म॥ दी॥ द्य॥ म॥ स्य॥ दं॥ ॥ ॥ अ॥ य॥ गं॥ अ॥ दि॥ ॥ द॥ न॥ न॥ का॥ ना॥ य॥ ॥ ॥ ॥ गे॥ न॥ ॥ अ॥ न॥ न॥ द॥ म॥ कि॥

॥

हेनवानन्दविनाशियतयम् । दमनकर्त्तव्यामिहूँ हृद् यादुकां ॥ ॥ ध्यायान्ताय ॥ दमनं ग
ययी सय्यक ध्यायताम् ॥ ॥ ॥ हूल रं कुम कमुनि कयूने गीदवळु बका वन्दन गमनायना
थननवाल ॥ ॥ वहिले गदवगामालया नकिन द्वाय ॥ तदनीतने दमना राहननी ॥ ॥ स्व
स्वन्तु न देवा दुर्न जाम ॥ दमना राहन यादुकां ॥ ॥ या ॥ अथ या राह कल्य मास न क
तु ह्यादि ॥ ॥ ॥ अमन्ति तामि कोरी सं कोरी सं सह रे नव । ग द्वा दव दव भि दमनं सध
निगामम ॥ वदु के उ समा यू क मय के उ स म विगं । नव धा उ म सिद्धा ग्द गुर्वा ह्वा व व सं गति ॥
अमं तिगामया ए क्का मना वां किं वा किं न वां । विद्यायी ॥ समस्तु हि तथ व के वनी ग ॥ ॥ समस्त
कूल देवी नां कूल ग्द नी सम विगं । अमं तिगामया सध दमनं दा धना ग नां ॥ अमं तिगाम सिद्ध व

ॐ श्री कृष्णिका समन्वितं । वक्त्रलान्ति महादवी मित्रा ह्यमुक्तं मया ॥ १ ॥ गन्धसन्तानि विन्तानि क
पानि तव स्रवसा । प्रायश्चित्तविमुक्तं कर्म भगवत्पुत्रसिद्धये ॥ पुष्टिद्वयगन्धदमनं तत्रासन्तानसं
ख्यं ॥ केलीसयीण समस्तं कान्तं भगवत्पुत्रसिद्धये ॥ वक्त्रयीण समायुक्तं यागिनी सिद्धि संयुतं ॥
आमं प्रितानि कोलीसं कोलीसं सह तेन वं । गन्धद्वयदमनं गन्धधूयदमनकं ॥ वक्त्रक
पुसमायुक्तं मयद्वयसमन्वितं । नवधा उभयसिद्धयुग्मं ह्यसमन्ततः ॥ आमं प्रितानमयार
क्ता गन्धयुग्मदमनकं । विशयीण समस्तं हितं तव कवनी गन्ध ॥ आमं प्रितानमया सर्वदमनं
दायनागतान् ॥ श्री कोलीसनाथ ॥ श्री कृष्णिका मया पादकपूजयामि ॥ ॥ श्री गणेशाय नमः ॥
ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ ५ ॥ पद्मवलि ॥ श्री गौरी कूलपूजवद्रकनाथाय दमनकया ॥ श्री द्रुका ॥ प्रव

[illegible]

[illegible]

[illegible]

दमनकयाइकां ॥ ॥ ~~अथ~~ ~~गामनु~~ ॥ ॐ श्रीं ॐ नमः सर्वसिद्धिगिनीत्यानमः सर्वसिद्धि
साहस्यानमानिथ्यादिगानन्दनन्दीगार्थ सकलकुलवक्रनायिकायै रगवर्णैव लुकायालि
न्येगयथा ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ॐ नमः ॐ यनमहं सिनी निर्वोमामूर्ध विषमाययव
युगमनि सकल इतिगविष्कृ गदलनि सर्वपिदाभा विगननि सकलग्रयमथनि
दविष्कृ गदरुस २ वल्लरननरु विगविष्कृ गदलनि सकलग्रयमथनि
नहिनि २ क्लिनि २ खड्गनगाउय २ कृदय २ गावद्यावत्सम सकलमनागथा न्साधय २ यनम
कारुणिकै रगवतिमहाहै नवतूपधनि निदिगवतलमिग सकलमनुमात ४ युगाकन
वत्सलदविमहाकालिकालय समनि हूं हूं हूं प्रसीदमदनागुनाकिन्न २ सूनासूनकन्यकां

[illegible]

वयं नानात्मकं धाम सप्तविंशत्युत्तमं नन्दनीदवीयनं वज्रालम्भं किं सहिताय दमनके पाद्वरं
॥ वलिः ॥ ॥ नवाक्षरी पलिक ॥ लिखना ॥ पूज ॥ त्वाकवाता ॥ मानका सकलरिंकाय ॥ ॥
मानवधरीयार्ग्यपूजा शाययके ॥ अद्यादिवाक्का ॥ माक्षं ॥ यदवि ॥ सिद्धिस्तुत्यादि ॥ वि
धुं पूजनदमनकाय मुनिर्ग ॥ यासाक इथूया पुनठाव ॥ ॥ इधुसवलिविधिविधिः ॥
निष्कलिनसकलरिंकाय ॥ वलिदका त्वाकमहावलिनपुनके ॥ ॥ यजमानन्
जुमयाय ॥ जानूत्यारुमोक्षित्वा ॥ दाहिनावरुर्गं रवस ॥ साइइ ॥ लंकाठा ॥ गभयगवउर ॥ क
मधुतनय ॥ अद्यानाहकल्यत्यादि ॥ वाक्का ॥ गंध इवार्कयुध्यं रुलकनकयुगं वाक्का
नवीनयुक्ता गन्धधवातिनम्यं अलिवलिसहिर्गं मनु द्वाविं गवः ॥ इग्यं यत्यावर्न

वयसि सनति मया दलमर्धं गृह्णानं भ्रातृगृहाञ्जुस्त्रिकम इति गुरुयस्तत्र देवदेवीषु
सीद ॥ वसन्तदामनं पूजा मदनोत्सवकाने ॥ गृह्णानं मया दलं साङ्गं एव नुपूजं
नी ॥ अर्धायि देवदेवनि पूजुर्धर्ममगा द्विती ॥ गृह्णानं मया दलं प्रसीदय नमो भवती
॥ ॥ यथा **सारा उवाच** ॥ दमना नाहं नितित्या च नन्दमर्धं गृह्णानं साहा ॥ देवसेके
कलितिं अर्धयाय ॥ अ० भूमरुर्वकत्वा ॥ गवयदेवया जूठसगया ॥ **सा ग** ॥ अद्वि सिद्धि
वर्तदहि जूयुता नाञ्ज संयदं ॥ पूर्णदहि के सोदहि ॥ गुरुर्कदहि मसदा ॥ दहिल लक्ष्मी
नं भान्ना नाकलक्ष्मी पूनः पूनः ॥ प्रसादाय नमो निति जूस्त्रिके यनमो भवती ॥ त्वमसि यनम
काली सिद्धि लक्ष्मी त्वमेव त्वमसि यनमव ॥ उग्रवल्गु त्वमेव ॥ त्वमसि यनमना केना

नाम श्रीलक्ष्मणकलनिहाग ॥ ५ ॥ सर्वसिद्धिददातु ॥ ॐ कन्दर्पकामनाधाय सर्वपा
पहृताय व । दमनाय यया मयि व । कामस्वयनियुक्तुं ॥ नागनाथनमस्तु ॥ गृहस्था
यानकामदी ॥ गृहं दुदमनाग । तं वेतु विधिहृलं ददत ॥ कामेश्वरी काममर्नग
मूर्ति ॥ विष्णुसौ कालिनिवा नन सौ दमनसूकमयिने युक्तुं यानि हृलप्रदसा
म्वनवेतु संज्ञां ॥ ॥ ज्ञानमन्त्रादि ॥ ॥ पूजादीय ॥ नैवद्या ॥ जय ॥ स्तोत्र ॥ रत्नमाला ॥ यमाना
रव्यपूजा ॥ वृषभला ॥ वनसिन्धुनखानखल ॥ ॥ न्यास ॥ कलिकायजुमु यरुद्र ॥ क
लिकायजुदयायनमः ॥ ॥ वं रुद्रदिष्यर्चन ॥ पूजा ॥ ॥ गैः कालीवकुम्भरीलाहनन्दा
यनमः ॥ ३ ॥ ॥ षष्ठं ॥ भुज ॥ रवक्षय रवलनासाय ॥ ॥ किः काययित्तत्यनाय मुकुद

[illegible]

कलायनमः॥सू॥की प्रणिष्ठाकनायनमः॥लि॥की निवृत्ति कलायनमः॥कू॥
उ॥॥लामविलामन॥मूलनवउ॥ऊ॥सयागठाठावग्नयणी॥ऊ॥यग्नुयासायवि
अहविश्वकमायिभिमतगन्नाडी वयुवादयात्॥समयईहावयावज्ज्योतिषसधूराव
नके॥॥कग्वदलंखयक्रमानविय॥थमंठाठावर्ग॥॥अ॥यादि॥यथाम्नायउच्चार्य॥दम
नानाह॥निमित्तार्थकोगवलिनी उपदेशवयामि॥यमुग्न॥मिदवमिदग्नयाउययावि
ती॥अस्यायिस्तुग्नसंघाति सिद्धिलक्ष्मीप्रयत्नम्॥॥महालठावस्यायीव॥उत्तुल्लादि॥
यासानकायादि॥॥अ॥कु॥अ॥य्योतादकनहाय॥मित्रकंदनकावक॥थमंठाठावय
क्रमानदिनतिष्ठ॥मित्रकाय॥॥मूलकाशगुपूत्राया॥मिदामूनन॥सकस्ताअथठा

का का सखादि ॥ महाकालं स्यादि ॥ मा कुरु ॥ सुखादि ॥ दूयायाथ धनक ॥ गवय कुर्या ॥ ॥
मान गवती स्या सा कया वक ॥ हि ङा या व ला हा हा ग स क्काय ॥ ॥ ॐ नमि सु गग धि वि समार्क
॥ ॥ तणी गग लु क ला ॥ स्तन के जाय य कावता थ ॥ ॥ ॐ निदि नना नरु न वि धि समा क ३ ॥
॥ सति का दू या व लि धय वि धि ॥ व लि क्रिया वाग या सू व के ॥ व क्ति थ व क्क रु य य न स व
व लु पू जा मा ग न य ॥ व लि गार्ग ना ॥ दे व स के लं स्वन हा य ॥ व न्द ना दि स्तान ना ॥ ॥ सू या र्थ
य त्रि या ति थं दे वा व ल या य ॥ य न मान नं मान ॥ व लि धय ॥ व लि थ व र थय स क्काय ॥
नि माल्य को ठा न स हा या व न ॥ वि धि धं व लु पू जा या य ॥ ॥ ॐ नम न्ना मा व लु पू जा ॥
अथ व लु गग ॥ दी य गग लु या वाग या व क्ति न त कं ग या गु त्रि व ल्वा या न डा का ठा ल सी

यावयूजायाय॥ यगवासनयमवाय॥ नयगसुसिधूननविद्रवाया॥ ॐ वलुविद्र
॥ कृवनेषद्वा॥ वाय॥ जवखवकुर्मदल॥ ॥ दइनेडा॥ ॥ लखवन० ताय॥ वासिधून
॥ जगमका॥ खान॥ आवमन॥ अयादि॥ सुयार्थ॥ भूननमस्कात॥ न्यास॥ त्रै० ग० वूँ कूलवल्
धनाय अस्त्राय दृष्ट॥ ५॥ त्रै० ग० वूँ कूलवल् धनाय कनिष्ठ कायनमः॥ त्रै० ग० वूँ कूलवल्
धनाय अनामिकायनमः॥ त्रै० ग० वूँ कूलवल् धनाय मध्यमायनमः॥ त्रै० ग० वूँ कूलवल् धना
यातर्जुनायनमः॥ त्रै० ग० वूँ कूलवल् धनाय अंगुष्ठायनमः॥ त्रै० ग० वूँ कूलवल् धनाय क
लगल अस्त्राय दृष्ट॥ त्रै० ग० वूँ कूलवल् धनाय ऊर्ध्वकायनमः॥ त्रै० ग० वूँ कूलवल् धना
यपृष्ठवक्रायनमः॥ त्रै० ग० वूँ कूलवल् धनाय दक्षिणवक्रायनमः॥ त्रै० ग० वूँ कूलवल् धनाय

[illegible]

नमः॥ ह्रीं यद्वासाय नमः॥ ह्रीं कलवः शुभनाय नमः॥ ह्रीं कलवः शुभनाय नमः॥
ॐ नमः॥

[illegible]

हूं मां कूलबलुध्वनरहेनवायमूं कूलबलुध्वनीदमनकयाइकीवलि॥ त्रिक
 मतेवूं वलि॥ ॥ आवाहनादि॥ ॥ गिलूलयेनिमडा॥ विन्दुय॥ धूपदीयन
 ॥ गय॥ ॥ हूं स्वाहा॥ १०॥ मूं स्वाहा॥ १०॥ हूं स्वाहा॥ १०॥ ॥ स्तुत॥ अरवलुमलुलाकरणा
 दि॥ भ्रातृवर्ग॥ बलुमूळि कर्गठुएव॥ हूं मवासनदीविक॥ गजबमधिनंदवबलुना
 थयतनम॥ जलुग॥ अदि॥ तय्य॥ ॥ ॥ चकानक॥ अस्वयूव॥ ॥ बलुजागनावलिनविमर्क
 न॥ हूं मां बलुध्वनायजमुथरुदू॥ वीसुनूनी॥ ॥ मानध्वनीयनियोगयमाल॥ इधया
 डाहा॥ हूं उवासागयाखितान्ननकिनियोग॥ यत्र॥ अरवनदीसुद्धाया॥ बलुकोणायन॥
 स्वाहानयाशुतिस्वायूवकलुखहायक॥ माहाननपूतका॥ कायिसनदनकावरवसुव

कनकधाय ॥ ॥ प्राहितादिनसकलं हं गनरवालसुतानयाय ॥ यक्रमानद्वयायमाल ॥
॥ ॥ निविशुक्तागविधिसमाय ॥ ॥ कोमारीयुक्ता ॥ अतिथिक्पातसहिता ॥ आभावादि ॥ ॥
॥ तिदमनागहनविधिसमाय ॥ ॥ ॥ निविशुक्तागहनसमनागहनविधिसमाय ॥
यादृग्पूजकंदृष्ट्वा, तादृग्लिखितमया। यदि शुद्धमद्धमं शुद्धं वा समदाधानदियता ॥
स्वस्वनागेन कितं शुद्धं अक्षमासितं ब्रूय ॥ पूज्यमासीति ॥ ॥ अक्षमा न कृतं गुरुर्यागक ॥
स्वकलप्रादविषीत्येयविणदमनावर्त्तना। समतिप्राप्तिगमिठा, सितस्वमं मयद्विती ॥
अथतयात्रास्वा ॥ ॥ ग्रीनयात्रसम्पत् ६०० कलिगतसम्पत् ४१७१ प्राविक्रमादिष्टसम्पत् १०००
३११ ग्रीनयात्रसम्पत् १६०२ ॥ अक्षमासु ३३ कृपक पूज्यमासीति ॥ ॥ अक्षमा न कृतं गुरुर्याग

गयथाकलनमस्तु क्वयवास्तु मिथुनाभिगतमविगती विदुताभिगतिबन्धमसि
 ॥ ॥ धृक्कुशुभीसुमतिजयतिगामिणमल्लवर्मनासुकरनलिरिवगंसंपदं ॥ ॥
 जिगामिणस्यह्यस्य त्वविनानास्मिगगतिः। त्वहं किगत्यनामकिर्मतिह्यत्कुलाधिके।
 ॥ ॥ गीगीसिद्धिलक्ष्मीगीगीगीकुशुकालिगीगीगीतिपूरसुन्दरिणीनाथ ॥ ॥
 समस्त ६०० शतवदि १२ वरुणगिवातधृक्कुशुनिसंवायावधूनकादिनसम्बन्ध ६०० श्रीकृष्ण
 कृष्ण वधवातधृक्कुधूनकादिनशत ॥ ॥ गी३ सिद्धिलक्ष्मीप्रिणीनाथ ॥ गुरुमस्तु ॥

अथ स्तोत्र ॥ अरव लु म लु ला कार्वा फय न व ना व न । गत्य द द गि गि य न ग स्म ग्रा ग्न व न म
॥ १ ॥ ग्रा द दू वा वा ॥ ग्रा स व र्ण म लु ला न क म य द नि हि गान न द ग कि ॥ ४ ॥ सु खि न्या य व ठ व
स क ल क ल ग ग य ॥ वी वा न्य व द्वा व र्ण न ॥ ४ ॥ का न्य त्प न न पि व ठ व ॥ ४ ॥ ग म द्वा रि
व क दि वा ॥ मू र्ति म ॥ रु स र व रु न क ल वि न्द्र यू व्या र व मू डा ॥ २ ॥ वा लं को मा न व द्वा य न म
मि व क ल व क दे वी क मा ॥ ग्रा ना र्थ व न्द्र यू य न व न व क लि गं य ग म र द म्भु सार्वा गी लि
सि द्धा व गा र्थ पु थ म क लि य ॥ ग का क ॥ वा धि का र्ण ग र्थ वि य र्ण मि द्वा न व य र्ण म ग र्थ म व
दि न ॥ ३ ॥ स न्ना नं ॥ ग ग यि लु क म य द स क लं ॥ ४ ॥ ग म र्वा क मा नं ॥ ५ ॥ वा र्थ म लु ला नि य नि
ग म वि म लं य ॥ स र्वा य व न्दी आ दा व ष्ठ द म्भ नं क ल क म स क लं म लु ला न य र्वा सी क

[illegible]

एवं शार्फसमस्तं किं तिलयजननी रुडम किं किं रुदा। नैण एखादववी खकूलकूलमयानन्द
धारी स्वगन्तु ॐ गुवां ह्यविन्दुहताय मुहयह न ॥ सिद्धिदिशो यत्र या ॥ ६ ॥ **हो** नित्य किं नास
नकारगमदितायदा नन्द धारी प्र सिद्धा ॐ कृर्वनीयगुका माहृतिगवतगर्न कृर्विकाखा
नमामि ॥ ६५ ॥ **स**न्तानं मन्त्रमागल जन्वयं तण्डवता। निर्गम ४ पी ० ॐ कात्र सिद्धा नयप्र
कीर्तिता ४ ॥ १० ॥ **गू**री हृता गुहा वासी यक ॥ वेवकदम्बक ४। संकतसविगंथाक मन्त्रावगुह्य
मिनी ॥ ११ ॥ गृहं वन्द्युर्न शार्फ रुदा मन्त्रानहेन व ४। गमण जन्मनिकादवी वासमाग्लेखकल्य
यत् ॥ १२ ॥ जन्वयं पुण्यय मन्त्र मन्त्रिकात्रनुकाह ॥ १३ ॥ जन्मवक्त्रमिलाह्वान् सिद्धि ४ श्री कामन्त्रयक
॥ १४ ॥ **कि**लि श्वि विनिवकठ सिद्धि ॥ वेवकसानकाठ श्रीहृता स्यदवमि शानानातिकूलकर्म ॥ १५ ॥

धाउम्भधनरदनन्यासंकुटंकमनथा। यन्निर्गसिद्धिदंरुडसुनिष्ठायनिवदयत् ॥ १५ ॥
 कुंननाश्नुगमहानामसूक्तदहयनायन। नकाकिनिविगुहासानादश्वविन्दमालिनी ॥ १६ ॥
 जूहावसमूत्यन्तज्वलविश्वधरिणी। महाकुलुलिनीसहस्रसमध्ववस्त्रिणा ॥ १७ ॥ सामरु
 यान्तिमध्वरिणामद्यापीयनायन। कुंकारविगुहावस्तुहकाराहर्द्धिधरिणी ॥ १८ ॥ वालगुगत
 धासूक्तजननवाक्ययय। हकाराहर्द्धकलाधनयद्रकिशूरकुमाग्रिणा ॥ १९ ॥ सकलश्रमहा
 मायवनदलाकयूजिग। नकेकनाठिमध्वरुमममिकेकशदिनि ॥ २० ॥ जूध्वनिमकुलाधविहमि
 नीयुक्तात्रयुगाविश्वरुगानिराधवीहज्जकुटिलाकणि ॥ २१ ॥ यस्माविष्णुश्चन्द्रमयः सदा
 शिवः। नगपद्ममहायगाः यादामूलवस्त्रिणा ॥ २२ ॥ एलाकजननीदवीनमस्तुभक्तिरूपिणी

तापि हलमधु मल्लानुतूयिणी ॥ २३ ॥ विन्दुमधुगतादवि कटिलयाद्विन्दिक। उद्यानकनि
कासासु द्वादग्मनावलम्बिनी ॥ २४ ॥ उमा हृदय ता मेरी द्वादग्मदिलवद्वसि। सुलसूत्रा कनावद्व
हंसद्विष्टा लम्बानि ॥ २५ ॥ लम्बाश्चयनमादवी दकि लम्बगामिनी। नासा गुठसमूही लम्बमधु
सूत्रयवाहिनी ॥ २६ ॥ हृदययनमानन्द गालमूद्विष्टवस्त्रिगानादद्याल्लकसंयच्छ गुल्लकसम
विनी ॥ २७ ॥ सुलसूत्रा सुसंशुद्ध धर्मा धर्मयुद्धय। कायकात्र लकल्लविष्टिगूयनादविष्टा ॥ २८ ॥ यमा
यनयनगुठु यनयनमधुगताद्विष्टा। सुविल्लुपत्रीदवी गुठसूत्रानयवस्त्रिगा ॥ २९ ॥ जगतास्त्रिणीदवि
संयत्तायथगममिनी। जगतीत्रमहा एग संसारा ल्लुवगानि ॥ ३० ॥ जयाव विजयावदेव जगितावायना
किगा। उन्मूतूवी जमधुल्लनमस्तयायमायनि ॥ ३१ ॥ वन्धमाककनीदवी धातनानयवस्त्रिगा। गाम

॥ मङ्गलिका मूलन सहाय्य सप्तविंशति ॥ ३२ ॥ एतन्मन्त्रः ॥ गौरी मायाय कृपया हिनी । स्वच्छन्देन वीर
वीर्यं को ॥ ॥ असह्येन वी ॥ ३३ ॥ यक्ष मन्त्रः ॥ दुष्टयस्तु त्वया नृणां ॥ युक्तीर्लिता ॥ जन्मता स्थित नृणां ॥
नमः कायालिनी मिवा ॥ ३४ ॥ नृन्कला महामाथ ममस्तु हानेन वी ॥ दंष्ट्रा कृत् विदू क्रि क्षण
काक्षी रयानना ॥ ३५ ॥ नमामि देवदेवि जूधा न धान नृपिणि । कालामुखी वगवति उमा देवि नमामु
त ॥ ३६ ॥ योगिनी वसिष्ठा देवि ॥ गौरी लक्ष्मी ॥ सनसुता ॥ हंसवागीश्वरी देवि ॥ गङ्गा मुखी मङ्गलिका ॥ ३७ ॥
॥ काष्ठाक्षी सुरगम्भ देवि ॥ इन्दुका लयायनी तथा ॥ निरुक्तिना समारब्धा नृणां ॥ वेकायनायना ॥ ३८ ॥
क्षीमाह गवरी शैवकोमारी वसुवती तथा ॥ वानाही शैवसाहिनी वाम ॥ कृत् रयानना ॥ ३९ ॥ यः पृथगाहं हि दे
वमि कृत्वा कस्तमविना ॥ नृन्दी शैवतथा ॥ गन्धी याम्याने जलवा ॥ ४० ॥ वायवा शैवकोवरी नृम

नीलमहादेवा। प्रयागभवत् ॥ का ॥ कालाश्रुहासात्रयनिका ॥ ५१ ॥ यत्रिणैकामुकावेवदवीकं
ववा ॥ ५२ ॥ कालीश्रुमादवीदवदूगीनमामुता ॥ ५३ ॥ एडकालीमहादवीवाम ॥ ५४ ॥ एयावहा
महाश्रुमाहा ॥ ५५ ॥ नमस्तुमकिन्नुपि ॥ ५६ ॥ एडव ॥ ५७ ॥ एगिहाहातदयदिविक्रुधम। हाता
थिममहामाय ॥ ५८ ॥ तदिहासिवदिड ॥ ५९ ॥ यद्विदय ॥ ६० ॥ तस्मात् ॥ ६१ ॥ तिसं ॥ ६२ ॥ एवमानव ॥ ६३ ॥ याशानिनि
गाहामा ॥ ६४ ॥ श्रवहृहाएव ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ निमिवमकिस्मन्सस्ममहामायास्मात्समाय ॥ ॥
पिशाकंनकाकमकि ॥ ६७ ॥ नवनकि ॥ ६८ ॥ मालगालं ॥ ६९ ॥ दंष्ट्र ॥ ७० ॥ स्रुनरावसकलविषहर्षा
एहसंवनार्द ॥ ७१ ॥ सुवर्क ॥ ७२ ॥ सिहनादंननननवनवर्ष ॥ ७३ ॥ श्रामाहृगयगाविनार्थसकलरय
हर्षकणयालनमामि ॥ ७४ ॥ नका ॥ ७५ ॥ नका ॥ ७६ ॥ नका ॥ ७७ ॥ नका ॥ ७८ ॥ नका ॥ ७९ ॥ नका ॥ ८० ॥ नका ॥ ८१ ॥ नका ॥ ८२ ॥ नका ॥ ८३ ॥ नका ॥ ८४ ॥ नका ॥ ८५ ॥ नका ॥ ८६ ॥ नका ॥ ८७ ॥ नका ॥ ८८ ॥ नका ॥ ८९ ॥ नका ॥ ९० ॥ नका ॥ ९१ ॥ नका ॥ ९२ ॥ नका ॥ ९३ ॥ नका ॥ ९४ ॥ नका ॥ ९५ ॥ नका ॥ ९६ ॥ नका ॥ ९७ ॥ नका ॥ ९८ ॥ नका ॥ ९९ ॥ नका ॥ १०० ॥

[illegible]

१०॥ मन्त्राणि सन्तस्कामदमूदिगन्तुवीवजयभ्रसूदीका उक्ताः ॥ अथ यत्तु खनदिगाय
॥ यत्तु ययागमदिक् ॥ यत्तु काव्यविष्णुका ॥ वसवससुसखिवजगट् ॥ गसुननि साव्यवि
भक्तिरदा ॥ कुमयदसुहिता ॥ यानु हाति भव ॥ ११॥ रवञ्ज वामतुसिद्धि पनयनविग
नंदवगर्गिलावनया मकुसुं रानिद्र ॥ वलियनिगजयं सुमूनं सव्वविद्यां ॥ दीद्युष्यीक
विलं निषिनसगुटिकायाइकाकामसिद्धिं सव्वविद्यां विनादिदन्त अलियिगितनगरेनव ॥
ननका ॥ १२॥ ॥ मानका णिनशा सुनरुनतमिगामरुमाग ॥ ममी विष्णीक्यात्रनताय
धुगजयनामखलानत ॥ १३॥ दिवा ॥ वृक्ष ॥ मरुवनवनकुसुमववत्रकमहात्र सामथा
कुद्रियाख्या विगनगुगनसा सुनदिद्योद्यमाद्यं ॥ १३॥ वन्धूक इति सुन्दरा णिनयनी सिंहा

का

सुनी सुन्दरी सर्वव्यापिह सर्वगुह्य तन्म १३ कावनाह विगा। यस्याद्या दमया जिय अवि
मलवि पूरुला धरिदा तावन्महिया सुनय मथनी तु सुगवरी नो मयह ॥ १४ ॥ का काम ४ कस
मीन ४ क दहन ४ काय ४ कविश्व सुता कवका कननादि ४ ककुगग ४ केन्द्र ४ क देवा सुता
४ कल्याणाल तटी नट्यु मुदिग ४ ग्रा सिद्ध या ग म न ४ की ग नाट क नाय का विय ग दे वामहा
एतव ४ ११ ॥ महा कालं महा गोडं महा कपू नयतं। सुल नूपं महा कार्य कर काया लक्ष्मि
॥ १२ ॥ यज्ज रुठ धनं देव प्रि नर्तुं नाल नयतं। नमस्तु मु महा काल गह्य संतान कानदी ॥ १३ ॥ मार्क
१४ या विय द्युत गान्तरा यावता न ४ क यस्य सु सु १५ वक्र विदु म कल्य ४ दे ला क
सु मुदिग सु सिखा ग क प्रताव ४ शयं द व्या रवता १६ य स बलि काया ४ १७ यादवी मधु के टर

उमथनीयाव० मू० अदिनीयासाआमहिवासूनकथकनीयात्रकवीकाप्रया। यासाभुहनि
भुम्हदेसदलनीयादवदवाप्रयासादवीसमत्रकदकि० ल० क० म० क० य० न० क० उ० ॥ १२ ॥
उ० ल० म० न० क० क० क० क० य० नि० ग० ता० प्र० सि० द्वि० ल० क० १० य० न० क० य० न० सु० ठि० क० न० द० क० न० द० व० ल० नि०
१० म० य० य० म० य० ल० स० सा० न० ल० व० इ० १० व० य० क० द० ह० नी० नि० क० म० य० न० स० व० द० म० म० ल० य० म० स० र० वा० म० न० द०
म० उ० क० य० नि० क० ग० या० न० १० ॥ १० ॥ सि० द्वि० य० न० य० न० म० यी० वि० ग० ता० न० द० वी० या० म० य० म० न० क० न० नी० म० उ०
ल० य० ल० वा० ग० नी० मि० मा० न० म० ग० यि० न० वी० ध० म० वि० श० क० हा० द० गि० मि० त्र० मि० ह० सि० द्वि० ल० क० ॥ ११ ॥ य०
म० य० न० लि० या० प० सा० न० लि० ग० दू० १० वि० य० वि० डा० व० लि० क० म० ल० नि० लि० वे० नि० मा० नि० लि० स० दा० स० सा० न० मा० ल०
नि० लि० म० य० ल० नि० लि० का० न० म० य० न० य० य० म० य० स० वा० नि० लि० ल० सि० आ० नि० ग० ना० म० ही० क० ल० ल० दा०

७
ग्रासिद्विलम्बान्नमः॥५२॥ प्रोदधता विदूदधिता दधकयूता ययवका विनित्तु विम्वगुक्ति
विद्विप्रकटनमः॥५३॥ दधता विदूदधिता दधकयूता ययवका विनित्तु विम्वगुक्ति
ययवका विनित्तु विम्वगुक्ति॥५४॥ ययवका विदूदधिता दधकयूता ययवका विनित्तु विम्वगुक्ति
कामाभिनिर्तापययवका विनित्तु विम्वगुक्ति॥५५॥ ययवका विदूदधिता दधकयूता ययवका विनित्तु विम्वगुक्ति
मिकायालभूलं ययवका विनित्तु विम्वगुक्ति॥५६॥ ययवका विदूदधिता दधकयूता ययवका विनित्तु विम्वगुक्ति
द्विलम्बान्नमः॥५७॥ ययवका विदूदधिता दधकयूता ययवका विनित्तु विम्वगुक्ति
लूमहालम्बान्नमः॥५८॥ ययवका विदूदधिता दधकयूता ययवका विनित्तु विम्वगुक्ति
रागुल्लनसाग्रीकालिकायोगिनी॥५९॥ मायासूरीज विमलन्त्र विहातलम्बान्नमः॥

तच्चिन्तनं ह्येकम् । पादानविन्दत एव किं कृतार्थं सान्निध्यं नित्यं नित्यं नित्यं नित्यं नित्यं ॥
 ५७ ॥ निवसति कनवीनसुखं दया भूभनं विनतगनसिगाययुक्तं नूतनं ॥ हिसकनहिमभुगार्थवयका
 क्रमाद्यादिभक्तदगभुकाभसाप्रियसिद्धिलक्ष्मी ॥ ५८ ॥ नैसावाक्यरुवायताविक्रयभर्त्स्युका
 मयकासंसारालुवधागरावयनमासवाहिरुन्नीमिवा ॥ श्रीभक्तलक्ष्मताक्रमलुलगातासानन्द
 सिद्धिपुदास्यं श्रीकरुणयुवताविमलाश्रीसिद्धिलक्ष्मी ॥ ५९ ॥ मायावीर्ययनीयतात्मकक
 लामायासयोमालिनीमाहात्म्यमहेश्वरीमालिकूलसूक्तारुलादामरा ॥ मायासिद्धिमनीषिमान
 रुदयथागयदास्यविष्णुमन्त्राधनतत्त्वस्य कृपया सारीषसिद्धिपुदा ॥ ६० ॥ श्रीमद्भुक्तकलुन्दर
 तवितलाश्रीकामभक्तियुदाविष्णुसारगिरिकविष्णुननीगद्यदिव्यभक्तिका ॥ कोरुल्लभ्यतावा

विष्णुयन्त्रिगणं ला कउयं सिवती का लान् एदयं वा विजयन् श्री सिद्धिलक्ष्मी ४ यत्र ॥ १० ॥ श्री
का नाद्रिगोचना मनकरी विन्नाधनेष्ट द्विगं कयं कारिगसान्माद विविधं ननवा स्नानं ॥ ११ ॥
श्री कययाष्ट वं नवनी पुद्गा यत्र सा तिका श्री सिद्धि ४ यत्र मायना एगवती निष्ठा सदा या बुमी ॥ १२ ॥
श्री कयं एगवती कना क कन ॥ ४ ॥ सी सान क कु यत्र स्वत्तु न्द न ए स्युगं व भिस्वमा ना सा तिका नादा
निष्ठा निर्विषया निरं भवनदा एवानही सर्वज्ञा दिगु ॥ १३ ॥ श्री विजयमगमकुम्भरी माएका ॥ १४ ॥ श्री उद्गा
यत्रा यत्रा सजननी श्री सिद्धिलक्ष्मी यत्रा वन्द्यनी क विहा सदी कि कन ॥ १५ ॥ सिद्धिप्रदा वा विनी ॥ १६ ॥
मकुम्भ नासु ह्यलयादि कालि विष्वा सि का स्युगं श्री कन ॥ १७ ॥ स्युगं एगवती वीसि विगहं स्र ॥ १८ ॥
गुप्तादाय कान्धु कुल ए वन विगु ४ सुगना ला द्यवी भे मालि मनु कनी याष्ट कट्यगि वय ४ साय

ॐ साङ्गुर्ग। साङ्गुयः साङ्गुहो समनसकलया वाङ्मने समासु विद्यानां सदावः सूनुयन
पड्याकथसिद्धिलक्ष्मी ॥ १५ ॥ ॥ **काशी** न्द्रुगिदी व्यमानकिरः ॥ १६ ॥ लाङ्कविकारः ॥ १७ ॥ वि
गयरावमहिमयुकान्कविभलया। संसातस्तिगिहृदि संकतिकनीपावयगाया कलाली
वन्दनयनगुयामलमूनी ॥ १८ ॥ **उ**कात्रतूयाहिमभुजकहयिश्चननयि
वदभयगात्री। विनाक्रमानदिमहिः कनारू ॥ १९ ॥ **का**सीलक्ष्मी प्रलमानिर्ण ॥ २० ॥ **का**शीवीरुतूयकन
दत्तसंस्तुमानन्दतूयधनिवासयनी। विविणनत्ताएनः ॥ २१ ॥ **का**सीलक्ष्मी प्रलमानि
निर्ण ॥ २२ ॥ **का**शीनानादाहगदेषदय्या विभक्तुतूयामलिच्छकपादी। रुडा ॥ २३ ॥ **का**सीरमलीयव
॥ २४ ॥ **का**सीलक्ष्मी प्रलमानिनिर्ण ॥ २५ ॥ **का**सीविभक्तुतूयामलिच्छकपादी। रुडा ॥ २६ ॥ **का**सीरमलीयव

[illegible]

(५८)

शक्तिगणसूत्राक्षरानां कवद्रिगिपथेऽनमस्य संस्तुविशुभविशुभविषयाद्यविषयाद्यविलीनता
हृदिहृदिगिपथेऽनमस्य सूत्राक्षरानां कवद्रिगिपथेऽनमस्य संस्तुविशुभविशुभविषयाद्यविषयाद्यविलीनता
यत्रमाथलीना। नाडिकाकालिगविग्रहमनुश्रुयास्फादभक्तनगगाद्वल्लिखितवर्णु॥५९॥ दिग्
भागाकनवनाकुलकमविष्णुलोकाकलंपदवनाकुलसंघासिद्धा। एकाग्रनकगतिवक्रवनायुष्मा
सत्संगसिद्धवनारेवयुगिताया॥६०॥ काशीकलाकालिकाकलसामिवाहाभयवक्रवक्रनिलयान
वरेदहिन। युष्मभक्तकालिकाकलरात्रयुगितायाविज्ञानसिद्धिवनवद्रिकल्पसिद्धा॥६१॥ अलक्ष्म्य
नयदायनमययुष्मवक्रकमगतिमनुमहाथविदा। सत्संगसिद्धिनिर्गाकिलसिद्धिदाणीष्टाणवरा
वितयनाष्टमामिकाली॥६२॥ यावत्तुहिनानविभभिदहनंमगवत्तुवन्तुद्वन्नाशक६४वर्क

प्रिदहनकृतत्रहादभनेवसंस्तु। एष्टिस्त्रियनककुंश्चकलकलयगासंगावधनुं तत्कालनिमिनिर्ण
यनमयदमयीसिद्धिदानन्दनूया॥१॥ ॥ **नु**स्यवमनासनस्यदधामिध्वललाप्यहसिंकीकानिमनूयुग
निदमिनस्यागत्वगीसर्वतः॥ ८ ॥ वासोऽपिप्राकृदिशूतिनिवाधूः॥ १५४॥ सदाहृष्टिगा विद्यान्तःसहसायदमि
तिनयश्च। तिम्यीवाधूया॥ १२३॥ **मा**याकुलुलिनी कियामधूमगीकालीकलामालिनी। मागङ्गाविक्रयागयाए
गवतिदधीमिवाभमूवी॥ १५४॥ किं०० किं० वल्लरागिनयनीवाग्वादिनीहेनवी। की० कात्रीपिप्रायनायनमयीमा
गाकुमान्नीत्यसि॥ १२३॥ ॥ **न**मस्तुवववववाम् सिद्धिलक्ष्मि महोक्तस। प्रष्टुं त्रिमहादेविनाकलक्ष्मि नमोस्तु
॥ १५५॥ **या**मिनी सिद्धिदूयावकनू०० मयनूयिणी॥ सनिकानिकनूयावमाएकाक्षकमध्वगम्॥ १२४॥ **ज**गन्मा
तगवनीदवीजगत्संहननक०० ग्रागगल्लितिकनीदवीजगदानन्दकारिणी॥ १२५॥ **प**ञ्चकननीदवी

वक्रिवक्रस्यमध्वगम। षट्। वाक्यपणवचुद्वनिसमायता॥१०॥ सिद्धिलक्ष्मीमहिम्ननीवजयंते
नययि। हिमकन्देन्दुसंकाभमुद्रुक्ठिकसंनिता॥१०॥ सद्यश्चतितेदेवीकलन्मानसगतसा
जगद्देन्दुसंयुक्तातीलकंविगम्युद्रुका॥१०॥ तिनप्रयतिमाधवादमदार्द्धलुपत्रिणी। स्वदाक्षी
सिम्हलीनृधत्तावनयल्ल। सुदक्षि॥१००॥ काश्यपूलक्ष्म्यामवयुएयमलुवामक। सद्यलिकानमं
काहमत्तादिलंकागा॥१०१॥ मुद्रुवसुयनीधनामदिनानन्दयतासा। नृदसुंधसमातूरातूदृष्ट
ठिकसन्निता॥१०२॥ नकास्यप्रतिनयस्वलुन्दुका। मखनशवचुहस्त्रिमहिम्ननिद्वयहसका
सुलि॥१०३॥ यमासनायनिहोत्रकावल्लमहाकला। काठियू॥ नृदेवीकलन्मानलुपत्रिणी॥१०४॥
॥ नानातूपधनादवीतानामक्रुस्। मरिगा। वक्रवक्रावक्रुकावक्रपादामहावला॥१०५॥ विन्दुया

महामनीलक्रीडयावता त्रिभा॥ विन्तामाला निरादयी विनिता र्थरुल्लयदा ॥ १०७ ॥ नमः स्वाहा वयोष
 दहूकानवधठुके । एते महादयी मनुयूरेवतगानि ॥ १०८ ॥ अक्षयप्रदस्त्रिपदवी कुङ्कुमकटि
 ला कति ॥ सूर्यकुल लतीभक्ति रगम्यागमवा नि ॥ १०९ ॥ अने ॥ अने ॥ युवात्र ॥ अक्षयप्रदस्त्रिपदवी
 अक्षिमादिमहासिद्धि सिद्धि सिद्धि प्रदायिनी ॥ ११० ॥ यक्ष्मा त्मायि ॥ सूर्यका नाञ्जलक्रीडयायिनी ॥
 लक्ष्मीवर्द्धयमधवी दीयकं यत्र मध्वरी ॥ १११ ॥ सुलूयामहामनी नवरादिभगवत्यै सफाद ॥ अष्टनवमस
 कयं वा मध्वकरी ॥ ११२ ॥ एका कनमहादयी सुक्रीडयावते नमः ॥ एते मण्डामहादयी मनुसागमहध्वरी ॥ ११३ ॥
 सूर्योपविनिर्मुक्ता शयनागमवर्द्धनी ॥ लक्ष्मीयुक्ता र्वध्वरी मानसा मल्लग कुन्दवत् ॥ ११४ ॥ सफसाग
 नययर्त्तनी र्थहानि संकटवर्द्धनी ॥ सुकृष्ण त्वादसहस्रं यो यो यस्तु नानिबत् ॥ ११५ ॥ महागगदिद

कला वक्राविद्दिष्टयुक्तागामाहतापिएतावेववक्रासयूलासागथम॥११॥ नभ्यदिष्टादिकं यावत्
कलमवावयवयगातिर्ध्वयिष्टय० स्माह माकनिरुःसमाहिता॥११॥ वन्धनान्मन्त्रयतयाया निरा
उद्गाहनातिवातावाहकयन्तु। लिस्मन्त्रयन्मावयत्सदा॥११॥ अत्र० विषमयान्तिहव्याद्या
तिर्कटविषमगाहनवक्रोद्गायस्मानकरयथा॥११॥ यत्कमलादिनू० ध्वयनकलाविनाभ्यात्। कु
लिकेनापिदं दुस्यविषनागमसंरवो॥११॥ एतामस्मानयक्रोदिष्टिगादिनाभनं। कलवाद्ये
दिनिनाभयस्मानभदयि॥१२०॥ अविन्तीगानिवाधनिस्तदागस्यरवन्तिह। अलक्ष्मीममनीरूया
इष्टवदन्तिदमदुनी॥१२१॥ स० श्रीभ्वतीतिविख्यातावक्रतागयनावदा। महालक्ष्मीमहाकान्तासु
सोराग्यदायिनी॥१२२॥ मन्त्रिनानन्वयेगत्यामहाद्युक्तिरलावना। अन्तन्वसमहगात्माविष्टयुवावतात्रिणी॥

॥ १२३ ॥ वृद्धी त्रैलोक्योमानी वेष्टुवीद्याऽध्यानका । ताहन्दी यन्त्रिका वेष्टुवर्षिका चकथोगिनी ॥ १२४ ॥
 जूझद विधी महा सिद्धिः । सिद्धियोगिनिमध्वगता यूजयति विधाकारे गुरुन्धमालादिपद्मके ॥ १२५ ॥
 यथत्पूनकधूनकसूत्री समायुता । आनाभिगात्रागत्सर्वतिलकमपि पूजिता ॥ १२६ ॥ गङ्गाधरद्विषकाम
 मायासेवविबुध्यन् । नवायथान्निनानाका जयत्सर्वसदावध ॥ १२७ ॥ वरुणाणकिमूकनजुविनिता
 नि सिद्धयन् । स्मरन्मनुसदाधवी इष्टस्वदात्रिभुनागिनी ॥ १२८ ॥ नरकमुकुमहादविनमस्तु विश्वत्रयिणि
 नमस्तु गङ्गा मागाः । सिद्धिलक्ष्मि नमास्तुता ॥ १२९ ॥ छत्रिण्डलसिद्धिः प्रीयसाङ्गिनास्तदस्तनायकः ॥ ॥ स्वमा
 धनमकाली सिद्धिलक्ष्मी भूभवत्वमासियनमवली उग्रवली त्वमव । स्वमासियनमना स्त्री ताजनाश्वनी
 त्वं सकलनिहङ्गाण्डं सर्वसिद्धिददाता ॥ नान्यं वदामि न विनामि न विनयामि नान्यं
 स्मरामि न रुजामि न चाश्रयामि । त्यक्त्वा त्वदीयवत्तन्मन्त्रमन्यदवमागः स्वरूपि

कथया ममदहि सिद्धिं ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ वन्दे सदा सकल कोलिक सागरं कण्ठधरं ननकया लकदममालं ।
श्रद्धां मुखं वरुणककाशं दक्षं दानं सिद्धिं विदुवनं धनं वल्लभा ॥ १ ॥ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
श्रुतिप्रसिद्धं सुन्दं सुनाति गङ्गा काननं मम कण्ठं ॥ गौरीसुतं गङ्गा किमूढं लिङ्गं दधनं ॥ पायास्त
नकावसनं ॥ निद्विवाहमानं ॥ २ ॥ ॥ सिद्धं सात्यमदमं सुखं ननका कृतं । निर्विघ्नं नायनयमा
धनं दहलक्ष्मीं ॥ विष्णुं धनं वनमादकसाकं सुखं ॥ पायास्तनागं यतिं ॥ सकलार्थदाता ॥ ३ ॥ ॥
हानीति यासां सुवनं नतिमितासाभियाम् ॥ लारब्धासां गौरीसावदग्नौ गवति सुखं ममाति काव
मनः ॥ सावन्नासावविष्णुं ॥ गुरुगलं सकलां नवीकण्ठपालां ॥ सानकानकनूपादि विष्णुं ॥ मया गायति स्तन

तामि॥५॥ ॥अथ कोमलसिखा॥ ॥बालावहारोडी कोमारी नकुलावना। बकाव मुयत्री धनी सिंदूरान्
विग्रहा॥१॥ बडुहना मकि ८ लं सिद्धियुक्त नं १३ ह्री कोमारी पनर्मम कि मयूरवयवाहिनी॥
शावकाव मुयत्री धनान्न कामा भवसासनि। कोलायत्री मसाक ७ व ८ व कानूवासिनी॥ ३॥ याम्ययीः
॥०॥ किगात्रिण्य कोमारी लं नमः स्तुत ॥५॥ ॥ अं कोलायत्री कुमारी कसु काम खिल कोकयानान्नराग
मडासंरूपि भायकिरु कुरु सगा ११ मग गुरु गु अ गिनाद्य सिद्धिना ॥ धमनयवन वलगी प्र
श्रविषात नका नत्रा प्रिम १५ मपिगय मुक्त न गण कल नमस्त ॥१॥ ॥ ॐ कोलायत्री यानु कोत्री अ
क केन समखिगा वलवान् धनवद्विध ५५ कना मयदायिका ॥४॥ ॥ हंसी पूवाधिकारी अत्र भाव
निणका लण्णी एवामी प्रियूरी कृद्विका कानवनवक धिया सिद्धिलक्ष्मी यत्राम्बा। रासाना कायना

नूवक्षी वहल्यरायतलयादलि कगसकल दिग्म लुल गुल्लुल ललिग नविमभिक
 सुसमिगियीनका नकूवकलम यगल वाललिग ननम लुल वलि मलि नदिनयान प्रम
 रुप्रग कलकला लान वगाल कयालिका लुवनगालु क यमखदृष्टा किनी यकय कामन
 यकिग विना वय वम लान विस्तु रिगपि भवयय लान धनि मखन कनवीन भमनवासि
 नी रुडल्लु विरूद वगन भ मध्वन विन्दम निनाहना कं वना निगं यलु कडुग मयान कलक
 लुलनी गकि यरादीपिका विद्यागिग मूळ भसवल विकसिग काम भमिग लुला मग वना धन
 ला यथानि भिसदृगी महाभ द्विप्रदायनी अखिल साधन काय ननूरा विग सुरा विग मायका
 यक सकललिग मग्म कू कू मागु रम गमन यना गय विमला वासिग वसन यनि मलिग ख लुल

मल्लिगङ्गाकालिकाकनवीनदामकङ्कात्रकनककङ्ककिन्वमल्लिकासदनिकासाधविविध
गंधवदनपत्रिहृष्टिगविविधविद्याधनसूतनरनागकिन्नरगणध्यायमानप्रिनयनावल्लयउक्त
यकगङ्गाननीकयकयनवाकनीननरूपाकठिभागाकनिमल्लुमालाविदवनीकालिकासाय
नीकायालिनीननरूभिदसापिसिगयत्रियुक्ताकाकायालकयालधनिष्ठाकलवालधिगूलख
दाक्षयल्लमल्लुयाम्भिकुम्भवाहयसृष्टिगङ्गाउक्तवधनिष्ठावदुविनासनसिद्धध्वनीअखि
लमनिगवधमानाकमलाधिभूमववेलवहवधनीअमाश्वाउमाश्वासदायुल्लुमाकलसका
नकाश्वाअकानककानसूतनमलमनाकालेसहायागिधामवाधध्वनीकविकाखवनीगम
यनीउवनीदिगध्वनीसुवनीभक्तिवक्रयक्ष्माज्ञानवृषगुणगीगतिरामसुन्दरगयद

संभवसान समयलास्यविलास्यठं महानट दूथ पनिवानिगन्त्यनायकिसकलकायकला
कलायवल णिगुलवन्ध विविधवन्ध गुडनयवाहिग सिद्धिमिद्धि द्दिहान मानसानदधाउग्मका
नीयठु४ मिभकानि मिगकसूमलमिलिग मध्वकनमस्वत धनियनिसन विधिनमलुलगा
लुवीगल्कुली वियकवियक यवनमनियलरुल लुमानासगकलनिषिदीयध्वनी उरुमव
उवाहियागु अकदलकमल पद्मानवहिविनागमानसम्भनमका मिवाह्वानवकितापि
भविताविकठउकु कठकठकठमदमदिगविहावनिवनविनासनी सूखविगलीन धागीगल
नन कनालाकषल कलरु कोलाहला कलकालयंकालिग कीजायविष्णुवद्ययलायसमा
रुमादिग पनामूरिपुष्पगिर नवाकनीसंवली सहसाकनी ॥ क०४ वसिष्ठ विष्णुमिण वलरु

मकुलिन २

हागकहहसाधकैसंतीवनाधधिगत्मरुलिर्मंशलकतनुनामाम्गागनद्धिनिउहुगैध
नकादाकथा॥६॥नान्यगतिनयतमकिंचनमपहायजुनाथमिमिदानिमन्त्रकदम्बवेनवा
सिनीमामलाकथयुगिदयत्रमंशुनीयत्रसकात्रुनिकमहादेववीरूयधनिष्ठातिदग
वननमिगुंनमः४सर्वसिद्धियागिनीनावकुवलिनेनमः४सिद्धिमाएकानन्दिनसुखाय
दार्हाधिसंगानिकविनिगहनविष्टिहानिककान्तानमहः३४खानककानलनूपिलीवनया
धुइच्छरयदायिकइधनइरुयइरुयइनयइगुप्तद्वीविकटसंकटसंकटपणिगवा
त्रसन्तायपटलविश्रुतिप्रयुयगहमर्दंगजमरूठामनठिलुमाह्वविविधवाद्यास
वाणम्बनस्मनत्रिपूसमनभुवमानमहामासमृगमदागुत्रयत्रकप्यत्रयवनधूपयिय

महागेलुवनमालिपुकासिग्विशालित्वसन्तमलुयवल्मुवल्लिकापागपुलुनीकयल्ल
नीकारुसहस्राकयमूरवामननिकनविविधविनयवध्वजालियूगविशालिगकुसूम
मालाविलिगांगुनिधनमकलमनुमागश्यनगगनवत्सलसिधिमनानुनगिधुव
लशवगिवल्मुइल्मुइल्मुगिदलनिकूलनायिकनिखिलगिनयमथनिनननधिनव
सामीसमिमिगामवयाल्युमरुयगुयनवंधविधुसिनीरुगवगिरवात्राधकानामयि
साधकानामहाहावानीसमदिगहावकानामहिमगविठुगियदसवमिनाहिलिखिगस
नाननवल्मुनीयकयनिःकगगगककुम्हाल्यानिममायत्राधकमस्वऽकिनाथस्म
काकिपनिननपनिहिनिखदीयवल्मुगगल्लामनवनदमहियादयाकनूविनयामिग

[illegible]

॥५॥ प्रकाकिनी विश्वमाता कनवीन निवासिनी ॥ महासू लयदानिया महामलायका निष्णी ॥
विन्दुमयस्त्रिगादवी कृदिलिङ्ग निवडिका ॥ द्वादशभक्तलयादवी धाउभक्तनवासिनी ॥६॥ काश्य
कान्तसंतिना वेगन्याना ठिमयग ॥ भक्तिमूलमहावक्त्र नवधसंयवस्त्रिगा ॥७॥ अम्बरीमा
यनादवी अत्रीतया ॥ त्रयिणी ॥ सुभक्तवसमाकाता ॐ कारयनविग्रहा ॥१०॥ विश्वस्तानिरा
मोत्री एवाहावविबक्तिगा ॥ स्वानयशक्तिगाया यनभी भक्तविग्रहा ॥११॥ सत्यतूयात्रज्ञा तूयात्र
भातूयात्रया लिका ॥ तमवदवी सद्यो रूपा नयि ॥ लयायिनी ॥१२॥ तमवद्वक्त्र विष्णु लील
यावद्रूपस्त्रिगा ॥ मालिनी यनमादवी भक्तनयनवन्धिनी ॥१३॥ द्वादशरुदिनी वक्त्र विवर्कवक्त्र सुन्द
री विन्दुमयनिनी ॥ नविद्ययाफानभाकृते ॥१४॥ सूर्यकाठिपुतीका ॥ भवदुक्ता प्रतिनिमलिका

न्यय्यकोठिलावाऽथ काष्ठिक्कलुविग्रह ॥१३॥ निनाकाऽभनिनाहाऽभ निल्लयनिनविग्रह । सब
 लक्ष्मिमाहा मायवनदसून पूजिता ॥१४॥ खकानरुका नवद्विस्तु एकानान्नसून्यनि । मकांनन
 वामपयपूयिष्ठात्मकविवा ॥१५॥ सचवन्दितिलाकाभनादगकियनमं विन्दयकस्तिगानि
 ज्ञानन्धनसूयिष्ठा ॥१६॥ पुष्पे वैकुण्ठययी ० स्फुटुपुष्पे ० द्यवस्तिगा कामास्त्वकलागीन कामा
 रथवरागमद्वी ॥१७॥ यमग्निकिकलाभयमऽधुप्रगयवाहिनी ॥ गिवसद्वर्गनस्तुक्कनिर्यान
 न्दतहास्व ॥१८॥ मनुनायकिमनुद्विधिकाऽभनवा सिनियपूययी ० कमध्यस्तु मन्नामिनि
 मर्चनि ॥१९॥ स्वयनीस्वयनीवेव ॥ किणययवाहिनी ॥ कालान्नागिसमस्तुगकलकालान्नकालिनी
 ॥२०॥ कालिकाकमसंवाभिः कालिदादगमनुल्लेखेलाकदहनीदयी सावमरुतिमुयादमि ॥२१॥ स्तुति

स्ति त्विह संहा न जना रद्या श्याम सखभा रासा रद्या म अकाली वनि द्यो लभा यत्र गवरी ॥ २५ ॥ पवित्र
भा रते नवी वसु लुका ठा गवरी भिवा । ना कना क म विव लु । जू धान निम धनि ॥ २६ ॥ सुन्दरी नि
प्राय द्या गा ना पू लु गवरी कया । कम म लु लनि म गवरी ॥ २७ ॥ अथ बाल विर दन कृ द्वा द्या
उग्र वल्लिका । व द्या भा गोडी को मा नि व द्या वी दी यना सिका ॥ २८ ॥ वज्र ली व द्दिल क्री ४ पू जय दिव्य
मा गन ४ अ सिता क म र र गव लु ४ का धी ल म म ल स रू को ॥ २९ ॥ कया ली रा ष ल म र द्या गवरी सी हा न गव लु
म ल थ । रा कानि सा ध कानि विल क्री सि हि यय कृ ति ॥ ३० ॥ सि हि र क्री म र सा र वी र न व ल म न की रि
ता । सा ध क रू कृ का ल म रू स व द्म वि र लू रनी ॥ ३१ ॥ वि दनी कनी द वी य स हि नान भा मु ना काल दि ग म स
व य रू रू गा मि ता किनी ४ ॥ ३२ ॥ सा ध क रू रू र द वी काल स द्ध ल म नू म ४ । मि र यय कृ त द वी र कृ म ली लया

तगगायुखगिरानिमस्यामि अविनिगतार्थसिद्धय ॥ ३२ ॥ ताम्रलारुपदंदिनी न कला रक्तवत्सली य
यगिरानिमस्यामि अविनिगतार्थसिद्धय ॥ ३३ ॥ सर्वगच्छुमदनी इति गच्छमनाभिनी ॥ यत्पद्मिनी
नमस्यामि सिद्धिलक्ष्मीं ययदा ॥ ३४ ॥ आयदहा सिगरालि पत्रनिष्ठलदप्यिनी यत्पद्मिनी नमस्यामि सिद्धि
लक्ष्मीं ययदा ॥ ३५ ॥ ताम्रवधिनदी लक्ष्मीं भाकदा इह यनाभिनी ॥ यत्पद्मिनी नमस्यामि सिद्धिलक्ष्मीं ययदा
॥ ३६ ॥ इह ययदा मनी महार्या विविनाभिनी ॥ यत्पद्मिनी नमस्यामि सिद्धिलक्ष्मीं ययदा ॥ ३७ ॥ कलि ३८
तययमनी महार्या विविनाभिनी ॥ यत्पद्मिनी नमस्यामि सिद्धिलक्ष्मीं ययदा ॥ ३८ ॥ अविन्या सिद्धिदी धर्मा वि
निगतार्थरूपयदा ॥ यत्पद्मिनी नमस्यामि सिद्धिलक्ष्मीं ययदा ॥ ३९ ॥ ताम्रयसममनी मयूषवनाभिनी ॥ य
यत्पद्मिनी नमस्यामि सिद्धिलक्ष्मीं ययदा ॥ ४० ॥ ताम्रनागकिनालक्ष्मीं ताम्रवत्सली यिनी ॥ यत्पद्मिनी नमस्यामि सि

द्विलक्ष्मीनिमास्यतं ॥ ५१ ॥ **सिद्धिलक्ष्मी** मन्त्रविद्यामहासिद्धियुगायिकायाः ० द्वाया ० यद्वापि स्फूर्णय्य
गितासिद्धि ॥ ५२ ॥ **प० ना** नृक से चानिस्तमय नृक यत्क ० भाग ॥ अविनिगानि सिद्धानि प० ना सिद्धि
माप्नुयात् ॥ ५३ ॥ महादायप्रभमनीमहाद्याविनिगानी सिद्ध्याद्युग्रहरायत्राभायदवनामनी ॥ ५४ ॥ ग्रह
पीठारुलामीनां ताभनैदविभक्तिदीयुगाकास्तमहा स्फूर्णयया ० स्थानि साधका ॥ ५५ ॥ गव्यसिद्धिर्नृक
सिद्ध्या ० संतुष्टिदायकं तन्नास्तियन्नासिद्धान् वोलिककूलभसना ॥ ५६ ॥ ययमिनयतकामं ससिद्धिगिला
लया ॥ सत्यं सत्यं महादायिको लिंकतस्मानति ॥ ५७ ॥ **ज्वर** त्रयसमस्तस्य दीर्घं प्रकाश्यानिभायधनस्तु
भक्तु स्रव सिद्धानि विनिगी ॥ ५८ ॥ **पुनः** व्याविनाननस्तुष्टया ० न सिद्धानि म ० लयतिमा ० गुणसंभुला ० य ०
अदि ॥ ५९ ॥ **पुनः** धाकां महास्तुष्टमविनिगाथसिद्धिदी ॥ **ज्वर** दवनागानानु नदयनुकदावना ॥ ६० ॥ **दाग** यति किय

[illegible]

तमप्रियः काल्यकालीकलायायाश्च वल्लमानाः कलकमलवनाहासकी सिद्धिकाली ॥ ३ ॥ स
मस्तिकात्ररागाभिवादिभिमिकलप्रसक्तः ॥ ४ ॥ प्रसक्तः ॥ ५ ॥ कोऽपि इह लुब्धो दानिदिमिदिविविध
॥ ६ ॥ संप्रियया प्रियस्याः ॥ ७ ॥ सनास्तुम् विधुः प्रिगदधियगियत्यसादनरूढः ॥ ८ ॥ साम्भार्यम्
॥ ९ ॥ किं दग्धवन्नगावल् कायालिनीवः ॥ १० ॥ यादवी सिद्धिलक्ष्मीस्तत्राभिवादिनिलयास्तानम् किं ॥ ११ ॥ यत्र
॥ १२ ॥ भक्तिः ॥ १३ ॥ सुखमनिलयगगियगाक्कुलीमाम्भार्यम् ॥ १४ ॥ आद्याम् किं सुदहायत्रमभिवाद्याम्
किं सुलीनगव्याप्त्याः ॥ १५ ॥ कीर्तनमन्त्रस्तुत्तमिलयमिताया विधुः सुत्रम् ॥ १६ ॥ यत्तु सुवल्भुम्भम्
यत्रमयत्रगागन्तु सुखमन्त्रान्नरुत्तम् ॥ १७ ॥ यत्तु विहितं भवदम्भान्मयं यागिनामद्यगम्यं सुल
गद्गगागन्धनवद्यधिकमिदं साधकैश्चिन्तनीयं यातुम् ॥ १८ ॥ काली स्मृतिनाम्भार्यलदाकुन्दादिकाम्भ

॥ १॥ दिवित्वं नमः भूतानां हवनना ॥ ४॥ त्वाङ्गना लकुलनाङ्गना पापसूत्रासूत्रे नैव वनेनासागनासाग
नं प्रकाशं नृनाम कप्रकाशं यथागिनाम हविर्लपितं त्यनमनुगत्वमदिविलं संजयतमममम ॥ १०॥
प्रसिद्धिलक्ष्मी रवेनागहन्ती भाद्रपदराणी वननाङ्गनाङ्गना ॥ कलायथागमदियनयुलानासुपान्तिना
गद्विपनीगकानी ॥ ११॥ क ॥ ४४॥ कीदलमालिनी धूनरियूक्त ॥ ५॥ क्षितिगिन्धनी ॥ ६॥ रवद्व ॥ ७॥ कनवालमन
भवनी ॥ ८॥ ३३३३३३ ॥ ९॥ काङ्गीयूक्त ॥ १०॥ मूलयागमरयं म ॥ ११॥ वाम ॥ १२॥ गायिद्युतक ॥ १३॥ गिरुव
नीगिभयनाग्राय ॥ १४॥ वक्राङ्गिनी ॥ १५॥ ॥ १६॥ लिलना ॥ १७॥ प्रसिद्धिलक्ष्मी ॥ १८॥ सुव ॥ १९॥ समा ॥ २०॥ ॥ २१॥ नम
॥ २२॥ ॥ २३॥ कालिका ॥ २४॥ ॥ २५॥ ॥ २६॥ ॥ २७॥ ॥ २८॥ ॥ २९॥ ॥ ३०॥ ॥ ३१॥ ॥ ३२॥ ॥ ३३॥ ॥ ३४॥ ॥ ३५॥ ॥ ३६॥ ॥ ३७॥ ॥ ३८॥ ॥ ३९॥ ॥ ४०॥ ॥ ४१॥ ॥ ४२॥ ॥ ४३॥ ॥ ४४॥ ॥ ४५॥ ॥ ४६॥ ॥ ४७॥ ॥ ४८॥ ॥ ४९॥ ॥ ५०॥ ॥ ५१॥ ॥ ५२॥ ॥ ५३॥ ॥ ५४॥ ॥ ५५॥ ॥ ५६॥ ॥ ५७॥ ॥ ५८॥ ॥ ५९॥ ॥ ६०॥ ॥ ६१॥ ॥ ६२॥ ॥ ६३॥ ॥ ६४॥ ॥ ६५॥ ॥ ६६॥ ॥ ६७॥ ॥ ६८॥ ॥ ६९॥ ॥ ७०॥ ॥ ७१॥ ॥ ७२॥ ॥ ७३॥ ॥ ७४॥ ॥ ७५॥ ॥ ७६॥ ॥ ७७॥ ॥ ७८॥ ॥ ७९॥ ॥ ८०॥ ॥ ८१॥ ॥ ८२॥ ॥ ८३॥ ॥ ८४॥ ॥ ८५॥ ॥ ८६॥ ॥ ८७॥ ॥ ८८॥ ॥ ८९॥ ॥ ९०॥ ॥ ९१॥ ॥ ९२॥ ॥ ९३॥ ॥ ९४॥ ॥ ९५॥ ॥ ९६॥ ॥ ९७॥ ॥ ९८॥ ॥ ९९॥ ॥ १००॥ ॥ १०१॥ ॥ १०२॥ ॥ १०३॥ ॥ १०४॥ ॥ १०५॥ ॥ १०६॥ ॥ १०७॥ ॥ १०८॥ ॥ १०९॥ ॥ ११०॥ ॥ १११॥ ॥ ११२॥ ॥ ११३॥ ॥ ११४॥ ॥ ११५॥ ॥ ११६॥ ॥ ११७॥ ॥ ११८॥ ॥ ११९॥ ॥ १२०॥ ॥ १२१॥ ॥ १२२॥ ॥ १२३॥ ॥ १२४॥ ॥ १२५॥ ॥ १२६॥ ॥ १२७॥ ॥ १२८॥ ॥ १२९॥ ॥ १३०॥ ॥ १३१॥ ॥ १३२॥ ॥ १३३॥ ॥ १३४॥ ॥ १३५॥ ॥ १३६॥ ॥ १३७॥ ॥ १३८॥ ॥ १३९॥ ॥ १४०॥ ॥ १४१॥ ॥ १४२॥ ॥ १४३॥ ॥ १४४॥ ॥ १४५॥ ॥ १४६॥ ॥ १४७॥ ॥ १४८॥ ॥ १४९॥ ॥ १५०॥ ॥ १५१॥ ॥ १५२॥ ॥ १५३॥ ॥ १५४॥ ॥ १५५॥ ॥ १५६॥ ॥ १५७॥ ॥ १५८॥ ॥ १५९॥ ॥ १६०॥ ॥ १६१॥ ॥ १६२॥ ॥ १६३॥ ॥ १६४॥ ॥ १६५॥ ॥ १६६॥ ॥ १६७॥ ॥ १६८॥ ॥ १६९॥ ॥ १७०॥ ॥ १७१॥ ॥ १७२॥ ॥ १७३॥ ॥ १७४॥ ॥ १७५॥ ॥ १७६॥ ॥ १७७॥ ॥ १७८॥ ॥ १७९॥ ॥ १८०॥ ॥ १८१॥ ॥ १८२॥ ॥ १८३॥ ॥ १८४॥ ॥ १८५॥ ॥ १८६॥ ॥ १८७॥ ॥ १८८॥ ॥ १८९॥ ॥ १९०॥ ॥ १९१॥ ॥ १९२॥ ॥ १९३॥ ॥ १९४॥ ॥ १९५॥ ॥ १९६॥ ॥ १९७॥ ॥ १९८॥ ॥ १९९॥ ॥ २००॥ ॥ २०१॥ ॥ २०२॥ ॥ २०३॥ ॥ २०४॥ ॥ २०५॥ ॥ २०६॥ ॥ २०७॥ ॥ २०८॥ ॥ २०९॥ ॥ २१०॥ ॥ २११॥ ॥ २१२॥ ॥ २१३॥ ॥ २१४॥ ॥ २१५॥ ॥ २१६॥ ॥ २१७॥ ॥ २१८॥ ॥ २१९॥ ॥ २२०॥ ॥ २२१॥ ॥ २२२॥ ॥ २२३॥ ॥ २२४॥ ॥ २२५॥ ॥ २२६॥ ॥ २२७॥ ॥ २२८॥ ॥ २२९॥ ॥ २३०॥ ॥ २३१॥ ॥ २३२॥ ॥ २३३॥ ॥ २३४॥ ॥ २३५॥ ॥ २३६॥ ॥ २३७॥ ॥ २३८॥ ॥ २३९॥ ॥ २४०॥ ॥ २४१॥ ॥ २४२॥ ॥ २४३॥ ॥ २४४॥ ॥ २४५॥ ॥ २४६॥ ॥ २४७॥ ॥ २४८॥ ॥ २४९॥ ॥ २५०॥ ॥ २५१॥ ॥ २५२॥ ॥ २५३॥ ॥ २५४॥ ॥ २५५॥ ॥ २५६॥ ॥ २५७॥ ॥ २५८॥ ॥ २५९॥ ॥ २६०॥ ॥ २६१॥ ॥ २६२॥ ॥ २६३॥ ॥ २६४॥ ॥ २६५॥ ॥ २६६॥ ॥ २६७॥ ॥ २६८॥ ॥ २६९॥ ॥ २७०॥ ॥ २७१॥ ॥ २७२॥ ॥ २७३॥ ॥ २७४॥ ॥ २७५॥ ॥ २७६॥ ॥ २७७॥ ॥ २७८॥ ॥ २७९॥ ॥ २८०॥ ॥ २८१॥ ॥ २८२॥ ॥ २८३॥ ॥ २८४॥ ॥ २८५॥ ॥ २८६॥ ॥ २८७॥ ॥ २८८॥ ॥ २८९॥ ॥ २९०॥ ॥ २९१॥ ॥ २९२॥ ॥ २९३॥ ॥ २९४॥ ॥ २९५॥ ॥ २९६॥ ॥ २९७॥ ॥ २९८॥ ॥ २९९॥ ॥ ३००॥ ॥ ३०१॥ ॥ ३०२॥ ॥ ३०३॥ ॥ ३०४॥ ॥ ३०५॥ ॥ ३०६॥ ॥ ३०७॥ ॥ ३०८॥ ॥ ३०९॥ ॥ ३१०॥ ॥ ३११॥ ॥ ३१२॥ ॥ ३१३॥ ॥ ३१४॥ ॥ ३१५॥ ॥ ३१६॥ ॥ ३१७॥ ॥ ३१८॥ ॥ ३१९॥ ॥ ३२०॥ ॥ ३२१॥ ॥ ३२२॥ ॥ ३२३॥ ॥ ३२४॥ ॥ ३२५॥ ॥ ३२६॥ ॥ ३२७॥ ॥ ३२८॥ ॥ ३२९॥ ॥ ३३०॥ ॥ ३३१॥ ॥ ३३२॥ ॥ ३३३॥ ॥ ३३४॥

धिवयमपुत्रसुखालयागनक्तथा महायायानि सुखानि न गच्छन्ति ॥ ५ ॥ धनयन् ॥ ३ ॥ विनायुत्रयसाधननयसिद्धिनि कलि
का ॥ ७ ॥ मन्त्रमन्त्रेणानि न दहन्ति कानयन् ॥ ४ ॥ धनसाधनाया विद्या कालिकलसमूहवागनास्त्रियमसिद्धिगुणलाकसव
गमना ॥ ५ ॥ यावन्तिरुमिवलयसुखसुखेवसककायस्थधमादियदुपि दूरुत्वागमिद्वयत्न ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ धनतयस्यादिका
मंकेभयिकममू ॥ ७ ॥ नायत्रयकानादिका मिमधमिका नमवान् ॥ ८ ॥ लक्ष्मणनदवमि कलानाहर्ति धनमी ॥ ९ ॥ अथमन्त्र
यवधामि धनभक्तनगधुमाता ॥ १० ॥ काकनमयस्य ॥ ११ ॥ माहात्म्यमरुमं ॥ १२ ॥ धनयन्त्रा ॥ १३ ॥ निवेदयया ॥ १४ ॥ ललर
नामहायापयममनसहाय्यं यवदुर्त ॥ १५ ॥ नावधुममणिलनामनाहारकद्वी ॥ १६ ॥ सुवर्ति धरिषकस्यरुलतागीतकु
वी ॥ १७ ॥ सिद्धिदियाकमहाज्ञानयकायका ॥ १८ ॥ सवविधयममनयमस्त्रीरवतिधुवी ॥ १९ ॥ धिक् ॥ २० ॥ धनमहात्म्यमयमनसि
निधिगीगीतसर्वैवसुखसिद्धिदायनमस्मता ॥ २१ ॥ धन ॥ २२ ॥ धननिर्वा ॥ २३ ॥ कलमपनामनीमहायसिद्धिदास्यतामहासागय

कीर्तिना ॥ ५ ॥ निरुदययुग्मं मन्त्रयदीयरीकारं वनरुद्रं स्यात्तत्तु यत्तु लम्भसने ॥ १॥ श्री कृष्णामाहयत्सर्वमाहि
नीयत्रमन्त्ररीकयाभसर्वस्वानयामयागाडवनमन्त्ररी ॥ ५ ॥ कुं कानाश्चान् ॥ ५ ॥ नानामनीयस्यवहने प्रियुनायान्द्रुगानादि
द्विश्यदारवत् ॥ २ ॥ कानानामभयत्यार्यगायमनसिपस्मिणी अम्भभययहस्यरुलरागाहवद्वर्वा ॥ १० ॥ सीयायकाठिकाडि
नाश्रुनानीविषकुर्यगासमिहिसिद्धिपदध्वं प्रियुलाकयइहर्णी ॥ ११ ॥ ययया ॥ ११ ॥ दहस्यायनमवगाथापनिपुष्टरव
हन्नेयनकल्याणकारकी ॥ १२ ॥ नकानाननकीतन्यात्मतामाकस्यकामरी नईयगायनास्यपिरु ॥ १३ ॥ मयाम ॥ १३ ॥ धिस्त ॥ १३ ॥ मल
सिद्धिभक्तयुग्ममहाष्टु ॥ १४ ॥ र्द्वर्गा महालक्ष्मीनयील्लामकार ॥ १५ ॥ महीगला ॥ १५ ॥ साकारासाभिगाथमु सिद्धिर्विनिनिधिर्गासा
धियस्यस्यसत्वास्वर्गागाहवद्वर्वा ॥ १६ ॥ साकाराहनिभाकी ॥ १७ ॥ मनीसिन्नतहभताकातदवयपुष्टवाकामिनीवस्रहाहवगा ॥ १८ ॥
क्षितिकथिर्गव्यदालीनकमहिनियस्यसम ॥ १९ ॥ सवसिद्धिलरुद्वी ॥ २० ॥ यनधर्मादगथितवाठम ॥ २१ ॥ नुनिडुपीरुसा

[illegible]

कनकादृष्टयरावद्वेभेसास्ययिगदसंनतामिमनसुसुहृदमिन्द्रयतीश्वरस्योद्योविसरसगीममगागाआश्वविचित्रय
मद्यमिनिवहंतस्नियगंयागंविनासिद्धिद॥३॥नृककनवदविधीजमनयसयज्ञनायज्ञनंकुटसूयदिवायधकुम
गतंयद्वस्तिगंयत्कमागार्यंकाममपश्रयनविधिनाकनाफनापिवापिनिगांइफयसकलीकत्रागितरसागीसम
संनृत्ती॥५॥वमपूफकधनिमिरयमंसाकृत्रजंदकिमुजंदकि॥६॥एकस्यावतदानयमलकनाकपूरकना
लीउद्धमाम्ब्रजयणकानिनयनांसिद्युप्रवालाकिनीयत्वामदनभीलयनिमनसागधकविलंकृता॥१॥यत्वायालुनयसु
नयलुनीकपठलस्यधरिनामयहसिद्धकीममनउवेतिवमित्राव्ययनिनृद्धिद्विगीभूभर्नीविकटसूठकनयदवि
योगिवक्राम्ब्रजालुषीरात्रगिरात्रासूत्रसत्रिकलालालालामिर्वगा॥४॥यसिद्धनयतागयूद्धविदिगललुगसाध्यामिम
सूद्धि॥पिविलीनयावकनस्यस्तानमममिवाव्ययनिक॥६॥मद्यनन्यमनससुसामनइकनकानासुठकनइभाव

कादाम्बिकावर्त्मनिसिद्धिः। १२। १३। १४। १५। १६। १७। १८। १९। २०। २१। २२। २३। २४। २५। २६। २७। २८। २९। ३०। ३१। ३२। ३३। ३४। ३५। ३६। ३७। ३८। ३९। ४०। ४१। ४२। ४३। ४४। ४५। ४६। ४७। ४८। ४९। ५०। ५१। ५२। ५३। ५४। ५५। ५६। ५७। ५८। ५९। ६०। ६१। ६२। ६३। ६४। ६५। ६६। ६७। ६८। ६९। ७०। ७१। ७२। ७३। ७४। ७५। ७६। ७७। ७८। ७९। ८०। ८१। ८२। ८३। ८४। ८५। ८६। ८७। ८८। ८९। ९०। ९१। ९२। ९३। ९४। ९५। ९६। ९७। ९८। ९९। १००।

वधुर्वर्गिणीसिद्धिमवाप्नुवन्ति तत्र सावित्री न विष्ठी कृता ॥ १॥ भद्रा न त्रिनती स्वमवहवने वाग्मादिनी एव स लल ॥ २॥ भववा सव
एतयाद्याविरवन्ति ध्रुवा लायन्तस्वलयण कल्पविनमवुक्ता दयस्वयमी सात्विक विदविन्सूतूयमहिमागह्यपरीयसी ॥ ३॥
यजानां गितयं गयी इतरुकां भक्तिगयं गित्वनामुसाक्षी प्रियदी प्रियवृत्तमथ प्रियवृत्तवृत्तु मय ॥ ४॥ यत्किञ्चिद्गुणगित्वानियति
तयि मृदु प्रियवृत्तदिकीं तत्सर्वं प्रियवृत्तगिनामरुगवस्य त्वगिता हता ॥ ५॥ लक्ष्मीनाम कलत्रयत्रिभुवः कर्म करी मधुनि कुट्याददि
पुस्तक्येति भवनी कामान्द्रुमिनी ॥ ६॥ विभक्तमृकहयस्य त्वामहाशैव विद्यामाह प्रियवृत्तगिनि विद्यदस्मान् विद्यायस्य ॥
॥ माया कलुलिनी क्रियामय मतिकाली कलामालिनी मागङ्गा विजया त्रया रगवादिनी भिवाभु मूवी ॥ ७॥ भक्ति ॥ ८॥ कनकसूरादि
नयनावाग्मादिनी रनवी क्षी क्षत्री प्रियवृत्तपरायन मयी मागा कुमारी सति ॥ ९॥ उवाच ॥ यत्प्रविशेद्यत्र स्य नयने द्विजि मध्य
करे ॥ का ॥ १०॥ कान्ता गे ॥ सुनादि रितथ कान्ते ॥ ११॥ सखने ॥ नामानि प्रियवृत्तवन्ति स्वलयान्यसन्त गुमानि भगवता रनवयसि

فوق

[illegible]

सादिकं वदया कनकावमहन् यत्र कारादिसिद्धार्थकं वम्य कषपूत्रयवमकविगात क्रीकिमूकियुदं लघुभाय
मिदं कनागिसगांसोराध्यायं ॥ २३ ॥ यदियपगिगुलमाणयूरमिनुनसं रवगिखिविकवीलु ॥ सर्ववादी लुकागा ॥
००० मयिकविमार्गमरुमागदुगा ॥ सुविममरुलोय ॥ विक्किलहातम ॥ २४ ॥ ललीलकयिठुवलकलपिठु
डुवियरुमर्गं कीर्तिनरुमिठुं लयासमयिठुवकुं विविठुगिन ॥ २५ ॥ डुइरुयवनि ॥ यत्रयत्रयवमसिद्धा
कं यस्यासुदुदिवानरुलववर्गासुहायगागिपूर ॥ २६ ॥ ००० गिथामन्महागिपूरसुन्दयालुसुसुव ॥ समापी
००० नम ॥ ००० कादयो ॥ ००० वदया ॥ ००० धानरूपं यागं वदवसुपिइल्लहासी ॥ ननानिकगुल
गुगादियद्विगुममपदयविष्ठा ॥ १ ॥ ००० कयअवुविलीनरुवतिरुयविमैकाविरुविठुनूपा
केवल्यमा ॥ सुविविठुदुदुह ॥ अयगसीतानकरी ॥ २ ॥ ००० नंद्यादमयाठममवुदलय

न्यासपद्धतः ॥ गम्यन्तः कनहिनिदिद्वयगर्भकद्रुक्कदावल्लुक्कनननिद्रुक्कननमहा
पीथनेकीर्णकलायस्या ॥ ४ ॥ अविनयनियताडायादिकालिगिता ॥ ३ ॥ अत्रकात्रुक्क
कुक्कमाएवविक्कमाएवूमन्निवद्वूमयलमकमननिरा ॥ अत्रासिगन्देयरायायस्वविक्कयानि
नहिनाहिद्रुदययीवागद्रुद्रुतिनेतास्त्रुव्यालधनरुद्रुद्रुद्रुल्लेकप्रामानगिभ्यन्तथा ॥ ४ ॥ वय
नीसमर्गगिद्वानवसगिस्त्रिक्ककधन ॥ ५ ॥ अत्रानुमन्त्रुसफदभनभवान्कयभिबान्द्रु
स्कोत्रमाकम्यवायंवास्कोत्रपत्रीवतसिखसखविक्कयनीसिद्धदागाविहएवन्धमिक्क ॥ ६ ॥ कर्त्त
कालीद्रिक्ककनी ॥ ७ ॥ यादवीयशविदस्तकभवीनाधामरुप्रयान्त्रुडभसदागिवानकयमि
वागिवानाकान्कनादाद्रुमाहावाहावविक्कगिन्तगमयीगुहायत्रायायत्राभक्ति ॥ ८ ॥ सवलयप

नाख्यनगजागकिलिकानिम्यहं ॥३॥ **अ**ध्वनीम४यनमकलयासाविम्बलविलीनां रुद्धनखा
कलविकलिलिनीसफकूठखमकुं। सिसापापयुगनलकर्त्रीद्विरयनयप्रहाविकल्यापापय
रवविक्रयादिविरासनिमामि ॥४॥ **ना**गोनागोखयितिययाकालविभुषकलीलीनालाक४कयय
तिपरंवेकसरादियायी। ऊर्वीकाश्यावसगिसूतिसूरगभसकमू०७सिनष् कुमिदिवाधिरम
सूखदागुअकालनिमामि ॥५॥ **ह**ूनानास्याहमगकमहाभूकोलययंगभकीसलाकनियममि
मलारल्लालकसिही३००भदूलातिनयनवक्राकूजम्यादगभस्यानिलादवाधिरमभुरदमि
अकालीसिनामि ॥६॥ **म**४वद्वकाद्वयपथगगावधूयादभनिषूखामिन्धवागममगमहामूलम
क्रादिदेवी। हाकानाकाययमहाधौ७भकयमिन्नागदिवा३५कमयथगाकालिकसिस्मनामि ॥७॥

मङ्गल

अयगयगय काली कालराणी कनाली परिगादठ काली गुच्छ काली सुकाली वलवलदल
काली र्प किव कक काली विल्लित कन काली काल कल्या न काली ॥ ११ ॥ मगभि शुवन धनी मल्ल
माला रिधनी रुनि नयन हारी मलना गन्धवारी न विन भिगि कनाली आद्युवममि शुवीरीष
नकुमममना वृ काल कालि शु काली ॥ १२ ॥ कलिल दलन काली कोल रूप स्य का काली ललित
गहन काली सु शु माला शु काली सुव वन नारी वन्द्य माना धियाली कस्य नकुमम काली काल
या मरु काली ॥ १३ ॥ कमल पूठ विलाठी सव्वमि पुमाठी कन कमय किरीठी यमि मरु आवाणी
नठन कन ननाठी रुद्र रुद्र कोन लाठी दह नकुमम हिता सा या यनि द्वि शु रासा ॥ १४ ॥ कूल गा कम
लालि नी गन न ननाली यन मम ग कवाली लीन ना दान काली ललय गिल्लि लाली ल

किं गायत्र्या लीकालिगसलकालीकालिकानोमिकाली ॥१॥ यनिङ्गावद्रुपायाम्बुलमन्त्रा
यत्रायारुक्मन्त्रकम्भयामम्बुवाद्रुपलाया। रुयत्रुवनदलायायूगसर्वाङ्गुपायनमन्त्रा
विकम्पादरुला कयकंपा ॥३॥ मथिगकुलजनादाविन्नादानकदानापरिङ्गावद्रुगादानीङ्ग
गा ॥४॥ षवादा ॥५॥ रावनविनादादरुदानिङ्गमन्त्रा रुयत्रु रुयत्रु दवीदवदवा विदवी ॥१॥ ह
निहन्विषिमरुवा ॥६॥ दवन्दुनका विकसितवत्रपादापादकीकयवादा। रुनठुममविद्या
सर्वस्यलिकलि विगनउकुमलालीराउगुआरुवाकाली ॥७॥ त्वमसिपत्रमकालीसिद्धि
लक्ष्मीस्त्वमेव णिपुवनविजयात्वंनाङ्गनाङ्गधनीत्वीप्रिविधपूत्रवनात्वंग्रामवाभनीत्वंनिख
लविपुललक्ष्मीसककलु त्वमेव ॥८॥ त्वमसिपत्रमद्रुपामरुवकधनीत्वं त्वमसि विविध

गुञ्जकूकृभ्वरीत्वं त्वमसि यत्र मगा नान्नादिका आक्रुथादि विविध विधि विरमया त्वमवा २०
त्वमसि यत्र मगा श्री स्वर्गु काठ भ्वरीत्वं त्वमसि विविध विधना गुञ्जकूकृभ्वरीत्वं त्वमसि यत्र मगा
गाञ्ज आक्रुथादि विविध विरमया विरमया रूप त्वमवा २१ ॥ कालिग कूल विकल्पा कल्पसं
कल्प कल्पा कलल वपल कि कुरु वदु सन रुका कृमल मय भ्वरी नाना जिमाद प्रयाना
वदु रव स मरु कृ ए स या न ह पु ॥ २२ ॥ गिरि गति गवनाना नाम माला प्रवले विषम गह
न रूप पाप पापा का हि याना त्वमय न न दवी दी यमान प्रगा पा विविध यत्र मगा मा मा ह भू भू कुरु
॥ २३ ॥ कव गद्य द्पदा आदि विकार भ्वरीत्वं द कुरु म ७३ पदा स्या मा दिनी मानी त्वी ठ ०० रु
० पदाना निर्मल दिवता त्वं गद्य दधन पदा आदि विदी फा न्ना त्वी २४ ॥ यरु वरु म पदा स्या दि

गमालाभुराख्यनलवपददूपादविस्वविनीतीभयसुहृदयदत्तगमकोलिनीकानादिवि
 मस्वित्तुअज्ज्याकवर्लादयतात्वी॥२५॥ॐगिरगवतिगुह्यंशुअकालिगिनिगुगिउवनलय
 हतानिमलसिगमगाय०तिपनमहक४७दुयाय४७२५८भगिसुरवगित्यपालाहकिम
 क्रियतागी॥२६॥ॐगिनिबालकालीकमगुअकालीसिगसमाकी॥॥ॐनम४७गुअकालि
 कायो॥भ्रीमहाकालउवावा॥नाम्रासुहृदयथात्य०हुना॥लमखसीतदोगानिय०निएन
 मानिसिगया०क४॥॥वळुयागभंत्रीवळी॥वळुकायालिनी॥गिवायाम॥अंकासिद्धिकयालीम४
 तालिनी॥२॥कालवकु४७नरुहृदयथात्य०हुना॥लमखसीतदोगानिय०निएन
 अउल्लामरवीअकक४७वलयमथिनीपना॥महामयाथागनिडा॥शलाकननी॥५॥का

यित्तीधायनूयाज्यन्तीसर्वमङ्गला। कामाकुत्रामहान्महादेवदेवीवन्द्यदा॥१॥ **मन्त्रः** कृदि
कारोडी नूडा। नूगदन्विका। विदन्मन्मयीमन्त्रवक्त्रनूपाज्यन्मयी॥२॥ **सूक्तः** निः। वन्दमातासि
द्विदणीवल्लुका। वानू। नूगगामायाकलागीगाविदन्मिका॥३॥ **नानान्यगानियोगा** सर्वन्म
नियोगा॥४॥ **सूक्तः** धिगानाम्। सहस्रगवपावर्णि॥५॥ **उदीर्गः** रुलंवास्य॥६॥ **नायत्यप्रप**
निः। मन्त्रः मववमयत्तुं यत्तुं सिगथ॥७॥ **वृत्तिः** मन्त्रायासुसंहितायाम्। **गुञ्जिका**
साः सफवत्ता। निः। नामसोऽसमाक॥८॥ **उं नमः** ग्रासिद्विलम्बे॥ **वकुर्वदे** व्यत्यर्थं
प्रियदात्यन्तिकिग। हयमन्त्रादिकरुलं ज्वरगत्युत्ताविगं॥९॥ **सफत्रन्मा** क्तिगिपार्यं कृद्वन्निदहागि
कहाग्रायासादाव्वानर॥१०॥ **मेव** साकाऽऽवयववर्ग॥११॥ **नावाव्वान** मन्त्रे॥ **आरू** सिद्धिल्लरु

वी अकाल काल गमन सर्वदा ज्ञान ॥ ३ ॥ अंक मस्य प्रावन सवर्ग वव गति यत् । निष्ठा ॥
 नमहाद विद्वत्प्राप्त्यन विद्यता ॥ ४ ॥ द्वितीया ज्ञान ॥ ५ ॥ दवि विवाद क्रय माययात् । एक प्रकृत
 कव इवानी वलु सखा के ॥ ६ ॥ तस्य यत्न हर्षं दवि सखा कुं नेव गच्छत । या विनियम पूर्व ॥ ७ ॥ या
 यद्वलु लक कं ॥ ८ ॥ एते वा सो न सह द आहू सिद्धि लं कुं वी द्विष्यत सत्यन भक्ति हलना भिमि वान ल
 ॥ ९ ॥ निभयाम्बु कथं तं वी लिदान यत्र ४ सत्री आहू सिद्धि त्वे नूनं वध मणान्न संग य ॥ १० ॥ सत्यं
 सत्यं सत्यं सत्यं न गमत्सक । आहू सिद्धि कत्री पाका यथा गं काम दयनी ॥ ११ ॥ काली सिद्धि यथा
 गच्छन् वध विह्वली रवता दृष्ट प्रत्यय कारीर्यं कृत्स्न भुया प्रिया ॥ १२ ॥ विगायति वध द्या वि
 भव वासा धय कूहा असाध साधय नूनं निभय विलिदान ॥ १३ ॥ आहू सिद्धि कत्री विद्या कृत्स्न

सुभद्रयासदागस्यकर्मप्रवक्ष्यामि निष्कमयसु विस्मिता ॥ १॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय न
महिमास्तुतांस्तुतिषु ॥ ॥











